-: संपदाक :-



स्वर्गवासी

पंडित जिया लाल सराफ

3rd May, 1901–17 April 1975



श्री पञ्चस्तवी

तथा

दुर्गासप्तशती का चौथा अध्याय

(श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में
अर्थ सहित)

स्थल :—
जिया लाल सराफ
नया कश्मीर होटल, लाल चोक,
श्रीनगर, कश्मीर।

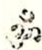
मिलने का पता :—

भवानी आश्रम
पुखरीबल (हारी पर्वत)
श्रीनगर, कश्मीर।

ملنے کا پتہ :—

بھوانی آشرم
پکھری بل (ہاری پربت)
سری نگر کشمیر

(شالیمار آرٹ پریس سری نگر)



शक्ति रहस्य

संसार में किसी भी कार्य में हाथ डालने से पहले शक्ति की आवश्यकता है। जब तक 'शक्ति' जो जीव को अपने ही अन्दर मौजूद है। उस शक्ति को काम में न लावे। किसी काम में सफलता न होती है और न होगी।

जीव को अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। सब पदार्थों में अपनी अपनी शक्ती अपने अन्दर है, जीव में शक्ती का भण्डार है। जिसतरह लकडी के अन्दर आग छुपी हुई है और लकडी को मालूम नहीं कि मुझ में आग की शक्ती अन्दर है। जब इसकी शक्ती 'आग' प्रकट होकर बाहर आती है तो पदार्थों को भस्म कर देती है तो लकडी अपने असली 'आग' के स्वरूप को प्रकट करती है। इसीतरह जीव के अन्दर शक्ती का भण्डार है और वह शक्ती जीव के अन्दर है। उस को मालूम नहीं कि मैं क्या हूँ। उस शक्ती से

जैसा चाहें अपनी अवस्था को बना सकते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि, मुन्नी महात्माओं में शक्तियां और सिद्धियां थीं। वह शक्तियां हम में भी हैं। (पुरषार्थ) पुरुषार्थ करने की ज़रूरत है। पुरुषार्थ का मतलब है, (पुरुष-ऽर्थ) पुरुष का धन। जब जीव पुरुषार्थ करें, और दृढ़ रहें तो उस महाशक्ति को उजागर कर सकता है। वह महाशक्ती जो जीव के अन्दर है। उसको परा शक्ति, ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति, चित्त शक्ति वगैरा २ कहा गया है। इस महान शक्ति को जगदम्बा (जगत् माता), जगत जननी इत्यादि नामों से कहा गया है। और इन्हीं नामों से शक्ति का पूजन अर्चन किया जाता है। सारा जगत शक्ती से ही बना है और बनाया जाता है। तमाम आविष्कार जो जगत में हुए हैं और नए नए आविष्कार होते हैं। शक्ति ही उनका मूल कारण है। शक्ती के सिवा कुछ नहीं बन सकता।

भवानी सहस्त्रनाम में पहले शंकर और नन्दीगण का समवाद लिखा है। नन्दीगण

शंकर से पूछता है। महाराज मुझे प्रश्न है। कृपा करके मुझे प्रश्न का उत्तर दीजिए।

आप जगत के स्वामी होकर आप आंखें बन्द करके सदा किस का स्मरण करते हैं और किस के ध्यान में सदा रहते हैं। क्या आप से बढ़कर कोई और ऊपर भी है। जिसका आप ध्यान करते हैं। तो शंकर उत्तर देता है। हे नन्दीगण सुनो। यह रहस्य है। तीन गुण वाली श्री शक्ती नाम की शक्ती मेरे अन्दर है उसी के बल से मैं इस संसार को पैदा करता हूँ, पालता हूँ और उसी में लीन होता हूँ। उसी के बल से मैं जगत, पहाड नदियां समन्द्र जो भी संसार में देखते हो, बनाता हूं। यह सब जगत उसी शक्ती का प्रकाश है। उसी शक्ति का ध्यान करने से अर्चन करने से सब सिद्धियां प्राप्त होती हैं इसी लिए इसी का सदा स्मरण करता हूँ। हर एक मनुष्य में यह देवी रूप शक्ती सुप्त है और इस को जाग्रत करने की आवश्यकता है।

आपको मालूम होगा कि हम जब बच्चे थे तो हमारी माता बचपन में हमको इसी शक्ती माता के स्वरूप का बीज डालती थी और कश्मीरी भाषा में हमको बार बार कहती रहती :— (कश्मीरी में)—— "ज़ेन मांज ज़ूनुय, अन्मन अन्मान क्यथ तथ ज़ीव, यिस कस गंनेयि, राय यस गंनेयि, रांय क्या चुतुय ससवुन गुर वसवुन्य नाव, तेथ क्यथ वंठुस बं तुन कुनुय, तति वुठुम क़ोंटुय मोंटुय मासनि हना, तसि चुलनम ग्यव ठूर, सुय लौंदुम जजीरे, जजीर लंजिम नच़्नि, काव लंगिस बुढिने, गोन्ह लंजिम अछुने, तुकुस स्योः कौलु तारकुय"—— अर्थात माता "ज़ून" प्रकाश जीतना है। प्रकाश क्या है? अंग अंग में अर्थात हर एक चीज़ में चित्त और जीव जानना है। वह किसको प्राप्त हो। जिसको राव अर्थात ख्याल की दृढ़ता ने क्या दिया, चढ़ने के लिए घोड़ा और उतरने के लिए किश्ती अर्थात (प्राणायाम)। उसी किश्ती

से उतर गई। "तुन" यानी नाभि (नाभिस्थान) के तरफ वहां मैं ने देखा, छोटी मोटी कुण्डलिनी, उसी ने मुझे "घी" बरतन में, दिया, वह मैंने अन्दर डाला और मुझको सारा जगत अपना ही स्वरूप दिखाई दिया। लोगों ने हंसा, कि कौन मेरा, जो मेरे कुल का तारक होगा माता अपने पुत्र को बचपन से ही उसको यह ख्याल रूपी बीज डाल देती थी। कि हे पुत्र तुम्हारा कर्तव्य है। अपने कुल का तारक बनना, यह उपदेश माता सब से पहले अपने बच्चे को देती थी। ताकि यह बच्चा बड़ा होकर अपने कुल का तारक बनेगा। पञ्चस्तवी के पहले तव में दो श्लोकों में इसी का निर्णय किया गया है।

यहां कश्मीर में शक्ति उपासना ही प्रचलित थी जिस समय श्री शंकराचार्य महाराज बुद्धमत को खण्डन करते कश्मीर पहुंचे– तो उस वक्त वहां श्री अभिनवगुप्त जी शक्तिमत के आचार्य थे। जब श्री शंकरा-

चार्य जी उनके पास शास्त्रार्थ करने आये। श्री शंकराचार्य जी शिव के उपासक थे। शक्ती को नहीं मानते थे। श्री अभिनवगुप्त जी ने उन को कहा। यह जगत शक्ती का विकास है। बल में [illegible] है। उस शक्ती का विकास ही यह सारा संसार है। पञ्चस्तवी के पहले तव के पहले तीन (३) श्लोकों में श्री कुण्डलिनी शक्ती का वर्णन किया गया है। साढ़े तीन वार लिपटी हुई वह छोटी मोटी कुण्डलिनी जिसको जाग्रत हो। तो वह जन्म मरण से छूटता है। उसको दूसरा जन्म प्राप्त नहीं हो सकता। वह मुक्त हो जाता है।

श्लोक :- संसार कुहरादऽस्मात् निगन्तव्यं स्वयं बलात्।
पौर्षं यतनमाश्रत्य हरिणो वारि मञ्जरात्।

अर्थ :— येंमि सं[illegible]कि ज़िसि मंज़ु होंर,
पदुने बलु किन्य छि नीरिथ हेकान।
पुरुषार्थ पनुनि यत्न सूत्य,
बिथु पांठ्य सुह पंजरु मंज़ कुय नेरान।

श्लोक :- सारेण पुरुषार्थेन स्वेनैव गरुडध्वज,
कश्चित इव पुमानेव पुरुषोतमतां गता॥

अर्थ:- पनुने पुरुषार्थु कि ज़ोर् किन्य,
ज़ीव ति छुय पानु नारायण बनान।
पुरुषण मंज़ आसान खाल काह् पुरुष,
युस पुरुषोत्तम बानस् ध्यन् छुवातान॥

अपनी शक्ति के बगैर उपासक को परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

श्लोक :-

आपद्वनमऽननतोहा, परिपल्लविता कृति।
पुरुषार्थं क्रकच च्छिन्नं, नैव भूयः परोहिति॥

अर्थ:- आपदारूपी युस अन्तु रोस जंगल,
फलमति शकलि युस बोज़नु यिवान।
पुरुषार्थ कि लेंन्नि सूत्य चॅट्थ चॅट्थ,
यि आपदा जंगुल, पतु छुन खसान॥

"अयमात्मा शक्तिहीने लभ्यः"

अर्थ:- शक्तिहीन को परमात्मा प्राप्त नहीं होता और जन्म मरन से छूट नहीं सकता।

इसलिए शक्ति की उपासना करनी चाहिए। चित्त शक्ति पूर्ण प्रेम स्वरूप है और सर्व व्यापक है। चित्त शक्ती के प्रसन्नता के लिए ख्वाहिश, लोभ, क्रोध और अहंकार रूपी मस्त को मस्ती रूपी तलवार से काटकर शक्ती माता के चर्ण कमलों पर अर्पण करें। तमाम प्राणियों से प्रेम उत्पन्न करें। अपने स्वरूप का औरों में देखें और तमाम प्राणियों के स्वरूप को अपने में देखें। भेद भाव का हमेशा के लिए छोड़ दें। अपने जैसा औरों को आत्मवत समझें।

बालक, यौवन, वृद्ध, स्त्री, राजा, साधु, पापी, मूर्ख, विद्वान वगैरह सब के ऊपर प्रेम पूर्वक एक नजर से देखें। शुद्ध विचार को ही निरंतर अन्तःकर्ण में उदय होने दें, अशुद्ध विचार को पास मत आने दें। शुद्ध विचार और शुद्ध-आचरण का पालन करने से शक्ति माता प्रसन्न होती है। शक्ति माता को ही प्रसन्न करना है। इसलिए शक्ति माता का ध्यान करें। उपासना करें। शक्ति ही जीवन है।

शक्ति ही सत्य है। शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही सब कुछ है। शक्ति ही की सर्वत्र आवश्यकता है। शक्तिशाली बनें, बलवान बनें, वीर बनें, निर्भय बनें और स्वतन्त्र बनें।

इस मांस और रक्त रूपी जिस्म में जिसको शरीर कहते हैं। आपके लिए एक रथ है। जिस पर चढ़कर आप कहीं भी पहुंच सकते हो। इस शरीर रूपी रथ को काम में लावें। इस शरीर रूपी रथ के ज़रिये वैकुण्ठ पहुंच सकते हो। कायरता छोड़कर सजीव बनें। आपके अन्दर शक्ति का भण्डार है, आपके जीवन का उद्देश्य, विशेष जीवन को प्राप्त करने का है।

जियालाल सराफ

(समाप्तम्)

प्रार्थना

मांज भवान्य छुम मे बेड चोन्य आश
मे ति बोज़तम चु ज़ारी।
छुस पथर प्योमुत तुलुम थोंद,
कासतम मे लाचारी।
पाद्य सेवन करहावोन्य बे चोन,
लगय पादन ज़े पारी।
ध्यान दार चोन हृदयस मंज़ ज़न,
बिहिथ चु तिलकदारी।
वोन्य बे ग्यव चोन्य गोण तु लक्षण,
कांशिरिस मंज़ सारी।
पादन्य चान्यन बे लागय,
लोलु पोश चोर्य ज़ारी।
चानि दर्शनु बापथ मे गोम,
येच़काल प्रार्य प्रारी।
हावतम मोख कासतम मे ज़न्मु,
ज़न्मन हुंज़ खारी।
कोर मे पञ्चस्तवी तरजमु,
कांशिरिस मंज़ ज़ारी।

युथ ओपकार वाति बंखत्यन,
मैंति बनि चांन्य यारी ॥

پرارتھنا

ماج بوانی چھم ہئے بڑاش ہیٚ تہٕ لوزتم ژٕ زاری
چھس بیٚھس پیٚٹھ ہنٹ تلم تھوٚد کاستم ہیٚ لاچاری
پادٕ سیوٚن کرہا وۄنی بہٕ چون لگے پادن ژےٚ یاری
دیان وار چون ہردیس منز زن بہتھ ژٕ تلک داری
وۄنی بہٕ گیوٚ چانی گوٚن تہٕ لکھن کاشرس منز ساری
پادٕ نے چانن بہٕ لاگے لولہ پوش ژٕ آری ژٕ آری ✤

چانہٕ ورشنہ باپتھ ہیٚ گوم ییٚژ کال پژآری پژآری
ہاوٕ تم موکھ کاستم ہیٚ زنمہ زنمن ہنٛز خاری
کوٚر ہیٚ بیٚچھتوٚی ترجمہ کاشرس منز جاری
ییٚتھ وۄپکار واتہٕ لکھن ہیٚ تہٕ
بنہٕ چانی پکاری

○

ॐ

ध्यान

सृष्टौसमस्थापनायनुऽपहरण विधौ
सर्वेषामऽगेतानाम् निज महिमवशाद्
मोहणेनौग्रहीपि,
नित्यं क्रीडा प्रसक्ता रचयति सकलं
ऽक्रमेनैवयालम।
स्वांतम शक्त्या प्रपंचम।
सा नः स्त्रानाय भुयादऽभिमत फलदा।
भद्रकाली च काली॥

یوسہ پننہ مہاکنی کران سرشٹی تھتی سنمہار

یُس دوان موہ تمہ نش پوت کڈان

کرِمہ روستے سارِنے بننِہ بوسہ

مُشراونس پتھ چھے ساہرِ تھوان

سو بدرکالی کلیان سورُویہ سوس

زِچھیٖن اسہ کا چھہ تھل آسی تن اسہ دیان!

यैस पननि महिमा किन्य करान
सृष्टी थैती संहार,
युस दिवान मोह तमु निश पोत कडान,

क्रमु रौंस्तुय सारिनुय बंदिशन यीस
मुचरावनस प्यठ छुय सामर्थ्यवान,
सोय मंङ्गलाली कल्याणु स्वरूपु सोस
रछितन असि काँक्षमुत्य फल आस्यतन असि
दिवान ॥



ओं नमः त्रिपुर सौन्दर्यै ॥

—ः लघुस्तवः :—

ॐ ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती
मध्ये ललाटं प्रभां,
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगु गौरिव
शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः
सदा हः स्थिता,
छिन्द्यान्नः सहसापदैस्त्रिभिरघं
ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥१॥

یہ شد از مشتری کمان ہش دیفت مشرق لالش دارانی

ژٕندرمُس ہِشِ سفید وَرن دِفتی۔ شیرَس ہیڈ نیو یہ حُمکانٕ
ہٕرُدیس ہیمیس ہیریہٕ سِندی پاٹھی، حُمکہٕ پٕنی دِفتی روز آئی
سوے تٕرٕ لوٚر سُندری ساٗنِس ہٕرُدیس منٛز روزِ تن
سوے جوتی سوٚروٗپ سَر سوتی سوٚروٗپ بنِتھ اَتھ کَرتن
تَرٕن یَدٕل ہِنٛد اَنگُر بٕہ گنٕ، ترٕوِد پاپ اَتھ زٕوِتن

यंन्द्राज़ सुन्ज़ हिश कमान ब्रुख दारवुन्य ही भवांनी
मंज़ ललाटस गह छ़ चमकान दिप्ति छ़ शुबांनी।
सासुवंद्य सिरियि बोंदि छ़ंन्द्रमु ज़ुन छ़ फोल्यमुत्य छ़ोपारी,
त्रिभवनस योहय चोन जोति रूप कासि प्रथ
कांसि खांरी ।
योहय ध्यान चोन माता त्रोपरायि हृदयस
मंज़ मे रूज़्यतन ।
युथ बे बनुहा परिपूर्ण सथ चित्त आनन्द गण।
छ़ेटितनम पापन स्यान्यन कंर्यतनम तिछ़
मे जांनी ।
सरस्वती हुन्द प्रसाद बंन्यतनम, युथ मे
खुलिहे वांणी ॥

०

या माता त्रपुसी लता तनुल सत्तन्तुस्थिति स्पर्धिनी,
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां तन्महे ते वयम्।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा,
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पर्शन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नराः ॥२॥

یُس زاوِج تورِ لَنجِ ہُنز تارِ ہِش یتھ چھ پھَہلاو
سادٕ ترٛوار زاوِج دٕلِتھ یُس کُنڈلِنی شکتی چھ ناو
بیز اچھرس منز کلا یوس ٹھیکِت چھ آسانی
سوے کلا زگت پادٕ کرنس آسونی دیوُگی
امہِ کےٚ دیان یُس منش زانہ کرِ سنا کرِ شُپرش
گربھ باوس ترٛو باوس اد کر بنیہ منش

युस ज़ांविजि तोरेलि लंजि हुंज़ि तारि हिश यथ छु फंहलाव,
साद त्रुवार ज़ांविज वंलिथ यस कुण्डलिनी शक्ती छु नाव।
बीज़ु अक्षरस मंज़ कला योसु ठीकिथ छै आसांनी,
सोय कला ज़गथ पांदु करनस आसुनुन्य छय वुधुगी।
अमिकुय ध्यान युस मनुष्य ज़ानि, कर सना करि सु स्पर्श,
गर्भ, वावस शुर्य बावस अद ज़र बनि केंयि मनुष्य॥

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तु सहसा
ऐ ऐ इति व्याहृतं,
येनाऽऽकूत वशादऽपीह वरदे
बिन्दुं विनाप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे,
वाचः सूक्ति सुधारसद्रवमुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजा
॥३॥

ہی دیوی یوٗد کانْہہ خوفناک چیز وُچھتھ جُل جُل
کَرِی اَے اَے بِنْدْ روٗستُے شبدی مطلب تَس جَل
ییہ مُجرالَس تہ منتر بَنِتھ تَس چون اَنُگرہہ
نیرِ وانی تَسِندِ موکھہ ثرنْدتھ امرِتُکے شُشْتَریہ

ही दीवी योंद कांह खोफनाक चीज़
वुछिथ जल जल,
करि ऐ ऐ बिन्दु रोस्तुय सपदि
तस ती हल।
यियि मुजरा तसति मन्त्र बनि तस चोन अनुग्रह,
नेरि वांणी तसुन्दि मोखु निशि छुटि अमरयतुकुय
सु श्रेंह॥

यन्नित्ये !तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं,
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्य तपसो यत्कीर्तयन्तोद्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पद प्रणयितां
नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम्॥४॥

ہی نتہ رۆپی دوٗیُم منتر چون کامہ راجہ ناو آسہ وُن
سُے منتر نِشکل بنتھ کانہہ پرتھوی پیٹھ چھ زانہ ون
سُے گو سار سوتہ بیز اکھر ست تپ ہی رشی چھی پران
ووتم پرون پیٹھ برہمن امیک ویاکھیان چھی کران
واتہ ناوتھ اوچھ جایہ پیٹھ یی منتر اچارن کران

ही नित्यरूपी दोयुम मन्त्र चोन कामः राज नाव
आसवुन।
सुय मंत्र निष्कल बनिथ कांह पृथ्वी प्यठ छु ज़ानवुन,
सुय गव सारसोत बीज़ अक्षर सततप ही ऋषि
छि परान।
वोतम परवन प्यठ ब्राह्मण अम्युक व्याख्यान
छि करान,
वातुनाविथ ओंचि जायि प्यठ यी मन्त्र उच्चारण
करान॥

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्तिकरणे दृष्ट प्रभावं बुधै,
स्तार्तीयीकमहं नमामि मनसा त्वद्बीजमिन्दुप्रभम्।
अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वतीमऽनुगतो जाड्याम्बु-
विच्छित्तये,
गौः शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं
विनासिद्धिदः॥
॥५॥

تہ یمہ بیزِ اکھرُک مہا وآنی کھلنس سیٹھ گاٹلی وُچھان
تتھ اکھرس تُندرِ دفتہ سوٗ ستس چھُس تہ ننہ کُنی ترٛام کران
سوٗرُپ بانتھ تہ لوگ وار نایہ ووستے ستیدی دوان
موٗرکھ رٗولی پاپیس گالنہ بآپتھ واڈو نامی اگن بنان

त्रेयमि बीज़ अक्षरुक महिमा वांणी खुलनस प्यठ
दाना मुक्षान,
तथ अक्षरस चंन्दुर दिफ़ति सोंसतिस कुसबमनु
किथ प्रणामकरान
सोरूप बंनिथ सुयोग दारनायि रोंसतुय संदी
दिवान,
मूर्ख रूपी पांपियस गालनु बापथ वाडव नांमी
अंगुन बनान॥

एकैकं तव दवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वास्थितं
व्युत्क्रमात्।
यं यं काममऽपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा
चिन्तितम्,
जप्त वा सफलीकरोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम्॥
(६)

ہی دیوی ئُس پَرِ چون بیز اَچھُر یود کُنُے
دۄشہ رۄس یا دۄشہ سۄس یا وُلٹہ سیود یا بیون بیونے
ییمہ ییمہ کامنایہ باپتھ یُس مَنُش آسہ زپان
تمِس مَنشس بوزرس منز ساری مطلب چھی نیران

ही दीवी युस परि चोन बीज़ अक्षुर
योद कुनुय,
दूषि रोस या दूषि सोस या वुल्ट स्योद या
ब्योन ब्योनुय।
येमि येमि कामनायि बापथ युस मनुश आसि ज़पान,
तमिस मनुशस बनुसरस मंज़ सारी मतलब छी
नेरान ॥

०

वामे पुस्तक धारिणीमऽभयदां साक्षस्रजं दक्षिणे,
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरांकर्पूर कुन्दोज्ज्वलाम्।
उज्जृम्भाम्बुज पत्रकान्त नयन स्निग्धप्रभालो-
किनीं,
ये त्वामऽम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां
कवित्वं कुतः ॥७॥

کھوورِس اَتھس منٛز ژٕ پوٗستک دورمُت ہی بوانی
دچھنِس اَتھس ژٕ جپہ مال بیہ سُتی اَبھے دِوانی
بیاکھ اَتھ چون پمپوش زَن بکھتَن وَر دِوانی
پھولی متھ پمپوشہ نیترو زَن ژٕ بکھتَن وُچھانی
یُس یہ دیان کرِ چون اَمبا مَن تس پرسن بنانی
آسہ کانہہ شہ یتھ زگتس منٛز تس چھہ داناو نانی

खोवरिस अथस मंज़ चे पोस्तक दोरमुत ही भवानी,
दछिनिस अथस ज़पुमाल वेंयि सुत्य अभय दिवानी।
ब्याख अथु चोन पम्पोश ज़न बख्त्यन वर दिवानी,
पोल्यमुत्य पम्पोशि नेत्रव ज़न च़ बख्त्यन वुछानी।
युस यि ध्यान करि चोन अम्बा मन तस प्रसन्न बनानी,
आसि कांह सु यथ ज़गतस मंज़ तस छिदाना बनानी।

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीकपटल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
सिञ्चन्तीमऽमृत द्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम्।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षर पदा निर्यांति वक्त्राम्बुजा,
तेषां भारति! भारती सुर सरितकल्लोललो लोमिवत॥
(८)

یُس سفید پمپوش ڈل پاٹھؠ خوش ژٕے دِپتی وُچھانی
وٕرشُن کران امرتہ کے ژھٹہ تمہِ چے پیوانی
یُس یہ دِیان کرِ برہمانڈس منز چھ تس نیرانی
بے روک پاٹھی تسند مو کھ نشہ سرسوتی ہنز وانی

(८)

युस सफेद पम्पोश डल पांठ्य
खोश छै छिपती वुछांनी,
वर्शुन करान अमरथतुकुय छट्ट
तमिचे थिवांनी।
युस यि ध्यान करि ब्रह्माण्डस
मंज़ छि तस नेरांनी,
बे रोक पांठ्य तसुन्दि मोखु निशि
सरस्वती हुंज़ वांनी॥

ये सिन्दूर पराग पुञ्जपिहितां त्वत्तेजसां द्यामिमा,
सुर्वीं चापि विलीनयावकरस प्रस्तारमऽग्नामिव।
पश्यन्तिक्षणमऽप्यऽनन्यमनसस्तेषामऽनङ्गज्वर,
कलान्तास्त्रस्त कुरङ्ग शावकदृशो वश्या भवन्ति स्फुटम्॥
((६))

چانہ تیز کنی یُس اکھا دُچھ سیندُر بری چھے آکاش
پرتھوی لاچھ رنگہ فٹمت وچھ آسیس منس باس
نہ ڈلہ وُنی کھینہ ماترس یُس یہ دیان دارانی
سارے شکھتی ترِیہ روٗپ بَنِتھ تمن چھ قولو لوانی
تیہ شکھتی یمن کامہ دیو تیر سٗتی بند کرانی
(۹) تیتھہ پاٹھی ییتھہ کھوتمت مرگہ بچہ کانہہ چھے رٹانی

चानि तीज़ु किन्य युस अखा वुछि सेंन्दुरि बँयथुय आकाश,
पृथ्वी लाछि रंगु फटमुत़ वुछि आस्यस मनस बास।
न उलुवुन्य क्षणु मात्रस युस यि ध्यान दारांनी,
सारुय शखती त्रुयि रूप बॅनिथ तिमन छि कोलू यिवांनी।
तिमु शखती यिमन कामदीव तीर सुत्य बन्द करांनी,
तिथु पांठ्य यिथु खूचमुत मृग बँचि कांह छुय रटांनी॥

○

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलाऽङ्गदधरामाऽबद्धकाञ्चीस्रजम्
ये त्वां चेतसि तद्गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितम्।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादऽहरहः स्फारीभवन्त्यश्चिरं,
माद्यत्कुञ्जरकर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः॥
((१०))

چمکہ وُنہ سونہ موختہ کنہ واجہ منڈبند ژُ لاگانی
سونہ سُنز تاگر پژلہ وِنی ژھکہ ژُ کمرس گنڈانی
یُس یہ دیان چون منز منس تھئی پیٹھ لُس لگانی
تس روز شانہ شوکت گرس ژیر تامتھ لچھمی
سو لچھمی یوسہ مد ہئی کنہ چہ ہستہ کُرٔ پاٹھی ژنژل آسانی
((10)) سارے سمپدا یہ تس پورشس قرار کرتھ چھہ روزانی

चमकुवुनि सोन् मोख्तु कनुवाजि मङुबंद च़ुलागांनी,
सोन् सुंज़ तागुर प्रज़लवुन्य छख च़ु कमरस गंडांनी।
युस यि ध्यान चोन मंज़ मनस तथ्य प्यठ ठुसलगांनी,
तस रोज़ि शान् शौकत गरस च़ेर तामथ लछमी।
सो लछमी योस् मद हेस्य कनुचि हस्तच़ पाठ्य चञ्चल आसांनी,
सारेय सम्पायि तस पुरुषस क़रार करिथ छि रोज़ांनी॥

○

आर्भठ्याशशि खण्ड मंडित जटाजूटां नृमुण्डस्रजं,
बन्धूक कुसुमारुणाम्बर धरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽपीनतुङ्गस्तनीं,
मध्ये निम्नवलित्रयाङ्कितत नुं त्वद्रूप संवित्तये ॥२२॥

شوٗبہ وٕنہٕ چانہٕ جٕٹہٕ مُکٹہٕ ناٗلی مَنشہ کٕلہٕ مالہٕ سوٗس
بَنٛدوٗقہٕ پوٗشہٕ رَنٛگہٕ سوٗرَخ پوٗشاکہٕ تَلہٕ موٗردٕ آسنہٕ سوٗس
کَمرَس تاگُر گنٛڈِتھ ژوٗتُر بوٗز ترٛیے نیٛتھر دارانی
چوٗن سوٗروٗپ زانُنہٕ باپتھ یہٕ دیان نِکھتی چھہٕ سوٗرانی
((۱۱))

शूब्वुनि चानि जटु मुकटु नाल्य मनशि
कलु मालु सोंस,
बन्दूकु पोशि रंगु सोरख पोशाकु
तल, मोरदु आसनु सोंस।
कमरस तागुर गन्डिथ च़ोतुर बोज़
त्रै नेथुर दारांनी,
चोन सोंरूप ज़ानुनु बापथ यि
ध्यान बखती छि सोरांनी॥

जातोऽप्यल्प परिच्छेदे क्षितिभुजां
सामान्य मात्रे कुले,
निःशेषावनि चक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः।
यद्विद्याधर वृन्द वन्दित पदा श्री वत्स राजोऽभवत्,
देवि! त्वच्चरणम्बुज प्रणतिजः सोऽयं
प्रसादोदयः ॥१२॥

کانٛہہ راجا مومولی کولس مَنٛز آسہٕ زامُت
کُل پرتھوی پیٹھ کران آسہٕ راج آسن پرودمُت
تَس چکروَرتَس پادَن دیوتا چھ پوزان ++
چھُ مہما تَس چانہٕ پادٕ پوزا سیتھ ہنٛز مہربانی ((۱۲))

कांह राजा मोमूली कोलस मंज़ आसि ज़ामुत,
कुल पृथ्वी प्यठ करान आसि राज
आक्रम्न प्रोन्नु:
तस चक्रवर्तस पादन दीवता छि पूज़ांनी
छु महिमा तस चानि पादि पूज़ायि हुन्ज़
मेहरबांनी ॥

०

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वी दलोल्लुण्ठन-
त्रुट्यत्कण्टक कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः।
ते दण्डाङ्कुश चक्रचाप कुलिश श्रीवत्स मत्स्याङ्कितै-
र्जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवाम्भोज प्रभैः पाणिभिः॥
«२३»

ہی ژٕنڈی چانٛی ژَرَن پوزایہ یٕتھ لیٚس اَنانی
بیٚل پوٚش ژٕٹ‌ٕنہٕ کٔنڈ ستیٚ اَتھ لیٚس چھ‌ٕ ژھانی
ڈونٛگ تہٕ تیر کمانہٕ ہنٛدۍ لیٚس کٔنڈ ہشنہٕ ستیٚ وسانی
تِتھۍ اَتھ سوٚس پوٚرُش ییٚیہ زٔنمہٕ راجہ مہاراجہ بنانی
(۱۳)

ही चेण्डी चान्य चरमु पूज़ायि य्यठ युस अनांनी,
ब्यल पोश चॆट्थ चॆट्थ कण्डि सूत्य अथु,
चस कि छ़ुथनांनी।
टोंग तु तीर कमानि हुन्द्य यस कोण्ड खशि
सूत्य वसानी,
तिथ्य अथु सोंस पोरुष बेयि ज़न्मु राजि
महाराजि बनांनी ॥
(13)

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्य मध्वासवैः,
त्वां देवि! त्रिपुरे! परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ।
यां यां प्रार्थयते मनःस्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवम्,
तां तां सिद्धिमऽवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृता॥
(२४)

برہمن راجہ ویش یا شودر چانی پوزا کرانی
دود، گیو، ماچھ، شراب پوزایہ کنی ژےٚ ارپن کرانی
شردایہ کنی ییہ کینژھا منگن تھکھ ضرور تمن دِوانی
بے روک پانچھ وگنہ روستے سیدی شہ پراوانی
((١٩))

ब्रह्मण राजि वैश्य या शुद्र चांनी पूज़ा करांनी,
दोद, ग्यव, माछ, शुराब पूज़ायि किन्य
च़ै अर्पन करांनी।
श्रदायि किन्य यि केंछा मंगन छुख
ज़ोरूर तिमन दिवांनी,
बे रोक पांछ्य वेंगनु रोस्तुय सेदी
सु प्रावांनी॥

०

शब्दानांजननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे,
त्वत: केशववासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति सफला
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेप्यमी,
सा त्वं काचिदचिन्त्य रूपमहिमा शक्ति: परा-
गीयसे ॥२५॥

ہی ماتا ترٛلوکس منٛز شبد روٗپہٕ ژٕ آسانی
زگتس منٛز ناو چوٗنے سرسوتی چھی وَنانی
ژٕیے نِشہِ کیشو، ئیندرازٕ، دیوتا پرٛکٹ سپانی
کلپہ انتس برہماد ژٕیے نِشہِ لے گژھانی
کوٗسناؤ نہ سوٗرنی مہماسو ستس شکتی چھی وَنانی
(۱۵)

ही माता त्रिभवनस मंज़ शब्द रूपु च़ु आसांनी,
ज़गतस मंज़ नाव चोनुय सरस्वती छी वनोनी।
चैय निशि केशव, यन्द्राज़, दीवता प्रकट बनांनी,
कल्पु अन्तस ब्रह्मादिक चैय निशि लय गछांनी।
कोसतान्य न सोरनी महिमा सोंसतिस थंज़
शक्ती छी वनांनी ॥15॥

देवानां त्रितयं त्रयी हुँतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः।
यत्किंचिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं,
तत्सर्वं त्रिपुरीति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः॥
(१६)

دیوَن منٛز ترٛیوَے دیو ژِھے، اَگنَن منٛز ترٛےٚ اَگن ژِھے
شَکھتی منٛز ترٛےٚ شکھتی ژِھے، سوَرن منٛز ترٛیوَے سوَر ژِھے
وَرنَن منٛز ترٛےٚ وَرن ژِھے، گنٛگا، جمنا، سرسوَتی ژِھے
بُو، بُوَہ، سوَہ، گایتری ژِھے، سَت ژِتھ آنند ژِھے
یہ کینٛژھا نیمہ ترٛگون سوَروُپ، سورے پتہ پتہ
پَکان ژِھے۔ ((۱۶))

दीवन मंज़ त्रनुवय दीव छुय, अंगुनन मंज़ त्रुअंगुन छुय,
शक्ती मंज़ त्रु शक्ती छुय, स्वरण मंज़ त्रनुवय स्वर छुय।
वर्णन मंज़ त्रु वर्ण छुय, गंगा, जमना, सरस्वती छुय,
भू, भवः, स्वाह, गायत्री छुय, सत च्यथ आनन्द छुय।
यि केंछा नियम त्रि गौण स्वरूप, सोरुय पॅत,
पत, पकान छुय ॥16॥

o

लक्ष्मीं राज कुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीम ध्वनि,
क्रव्यादद्विप सर्पभाज़ि शवरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
भूत, प्रेत, पिशाच, जम्बुकमये स्मृत्वा महाभैरवीं,
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय
प्लवे ॥२७॥

راژ گرن ننٛز ژھی، جے ژےٚ منٛزرن لوٚمی
وٕلِٹھ وتہ کلیان رٗوٗپی خوفناک جانورن انٛز شکارٕ ژھے
کوہن پیٹھ چھکھ ژٕ دُرگا، پیشاچن انٛز بیرٕوی
یم وٕلِٹھ جایہ دیان چون سورن، تمن ژِہ آپدا دوٗر
کرانی۔
((۱۸))

राज़ ग्रज़न मन्ज़ च़ लछ्य मी, जयचे मंज़ रणभूमि
वुल्ट वति कल्यान रूपी खोफनाक जानवरन
मंज़ शिकार्य च़्य।
कोहन प्यठ छख च़ दुर्गा, पिशाचन निशि
भैरवी।
यिम वुल्ट जायन ध्यान चोन स्वरन, तिमन च़
आपदा दूर करुनी।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी,
मातङ्गी विजया जया भगवती देवि शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शङ्कर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता कुमारी त्वसि॥
((२८))

مایا ژٕے ، کُنڈلِنی ژٕے ، کرِیا مدُمتی ژٕے
کالی ژٕے ، کلا ژٕے ، مالِنی ماتنگی ژٕے
وِجیا ژٕے ، جیا ژٕے ، یخٔتیار واجنی ژٕے
ژٕیتھ سوروٗپ ژٕے ، سامرتھ ژٕے ، شامبوی شکتی ژٕے
شنکر سنٛز ۂٹھٕ ژھکھ ژٕے ، سرسوتی بیروی ژٕے
ہریم شکلہِ پراپر ترِپرا ماتا یم روٗپ ژٕے
((۱۸))

माया च़्य, कुण्डलिणी च़्य, क्रिया मदुमंती च़्य,
कांली च़्य, कला च़्य, मालिनी मातङ्गी च़ुँय।
विजया च़्य, जया च़्य, यखतियार वाजन्य च़्य,
च़्यथ स्वरूप च़्य, सामरथ च़्य, शम्भवी शक्ती च़्य॥
शंङ्कर सुंज़ टांठ छख च़्य, सरस्वती भैरवी च़्य।
ह्रीम् शकलि पराघर त्रिपुरा माता यिम रु
० ((१८))

आई पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रि क्रमाद्यक्षरै,
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च
तैस्तैस्वरैः।
नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानिते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः॥
((२६))

'अ' پیٹھ سارِنۍ اَچھرَن دۄیہ ترٛیٚیہ کرٛمہ ملہٕ ناوِتھ
'क' پیٹھ 'क्ष' تانۍ شبدٕ سٕتۍ رلاوِتھ ناو چانۍ بناوِتھ
ہی ترٛیپُرے وُہ (۲۰) ساس ناو چانۍ رہسیہ رۄپ بنانۍ
ہی بیٖرو پتنی تِمن رہسیہ ناوَن پرنام کرانۍ
((19))

'अ' प्यठु सारिनुय अछरन दोयि त्रैयिक्रमु मिलनांविथ
'क' प्यठु 'क्ष' तान्य शब्द रलांविथ नाव
चांन्य बनांविथ।
ही त्रिपरांय वुह(२०) सास नाव चांन्य रहस्य
रूप बनांनी ;
ही भैरव पत्नी तिमन रहस्य नावन क
प्रणाम करांनी॥
((19))

बोद्धव्या निपुणं बुधैःस्तुतिरियंकृत्वा मनस्तद्गतं,
भाव्या त्रिपुरेत्यनन्य मनसी यत्राद्यवृत्ते स्फुटम्।
एक द्वित्रिपदक्रमेण कथितं त्वत्पाद संख्याक्षरै-
र्मन्त्रोद्धार विधिविंशेष सहितः सत्संप्रदा-
यान्वितः॥२०॥

زانَنہٕ چھےٚ گاٹلین یِی تُہ زٕ سےٚ کُن مَن لگاوِتھ ؎
چانٛین پادن ہنٛد شُمار کٔتھ اَچھرٕ کنٛہ مِلناوِتھ
گوڈنکہ دوٛیمہ تریٛمہ پدٕ کرمہ منترودار بناوِتھ ؎
پرٛتھ سمپرادایہ سوٚس یِی تُہ اوٚن مےٚ زٕ کُن مَن ٹھیکراوِتھ
((۲۰))

ज़ानुन्य बुद्य गाटुल्यन यी तव चै कुन मन लगांविथ,
चान्यन पादन हुंन्द शुमार क्यो अछरव किन्य
मिलुनाविथ।
गोडुनिकि दोंयिमि त्रेयमि पद क्रमु मन्त्रोदार
बनांविथ;
इति सम्प्रदायि सोस यी तव ओंन में चे़ कुन मन
ठीकरांविथ॥
((२०))

सावद्यं निरवद्यंऽस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया।
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि
संचिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमानं हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मिन्यापि ध्रुवं
((२१))

نیٚند یا یہ سوٚس یا نیٚند یا یہ روٚس فکرا اَچھ تراوِتھ
لیُس یہ ستوترٕ کانْہہ مُنش پرِ آسِس بکھتی چانی
پَننِس پانَس لوچر زانِتھ حیٚے تہ درِڈتا پراوِم
چانہِ بکھتی ہِنْد زورٕ بکو اُسی بنِتھ یہ تُہ تا بناوِم
((۲۱))

नैन्द्यायि सोंस वा नैन्द्यायि रोंस फ़िकिरा अमिच्च त्रांविथ
पुस यि स्तोत्र कांह मनुष्य परि आस्य भंक्ती चोनी।
पनुनिस पानस लोचर ज़ांनिथ में ति दृढता प्रांवुम,
चानि भंकी हुन्द ज़ोरु वकवांस्य बंनिथ यि लोला बनोवुम
((२१))

चर्चा स्तवः

— ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै —

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं,
मौलौ हठेन निहित महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जित मनोहरमऽम्बिकाया ॥१॥

پاد چانٛی سوندر آننٛد دایک یٚنٛدرازن ترآوِتھ موکٕتہٕ مال
یِمہٕ سٟتۍ زیر دِژِتھ مہشاسورسٕے کھٕنبہٕ ماترس مَنٛز ووتہٕ پاتال
سُے رونہٕ پاد چون روزنۍ تَن مےٚ ہرِدیس
یُتھ بہٕ امبکاے بوزٕ شروٕنی شروٕنی تال
سُے منوہر پاد یٚنۍ تَن مےٚ ہیتو جے جے کارُک مےٚ ہاوِتن کمال ॥

पाद चान्य सोन्दर आनन्द दायक यंन्द्राज़न त्रावि य थ
मोक्त माल,
यैमि सूत्यज़ीर दिच्य महिषासुरस्य ख्वण मात्रस मंज़
वोत सु पाताल।
सुय रोनि पाद चोन रूज़्यतन मे हृद यस,
युथ बे अम्बिकाय बोज़ श्रोनि श्रोनि ताल ॥
सुय मनोहर पाद बंन्यतन मे हीतो जैजैकारुक मे
हाव्यतन कमाल ॥

०

सौन्दर्य विभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
संपत्ति कल्प तरवस्त्रिपुरे! जयन्ति।
एते कवित्व कुमुद प्रकरावबोध,
पूर्णेन्द वस्त्रिजगज्जननि प्रणामाः ॥२॥

یم پرنام سوندریکہ ولاسکی جاے تھدی شمار کرنہ یوان
ترن لوکن ہندراج سمپدایہ ہیہی کلپہ ورکھی ہوی یم پرنام چھیان

یم پرنام کوتایہ روپی کمد پوش پھولراونہ باپتہ زندرمہ چھی بنان
ہی زگتہ زننی واتنہ ژےمیانی تیچی ہوی یم پرنام چھس بہ ژیے
کن کران (۲)

यिम प्रणाम सौन्दर्यकि विलासुक्य जाय बनिथ
थंध शुमार करनु यिव
त्रन ववनन हुन्दि राज संपदायि हुन्ध कल्पवृक्ष
हिव्य यिम प्रणाम छी बन
यिम प्रणाम कविताधि रूपी कुमदु पोश फौलरावनु
बापथ चंन्द्रम छी बनान,
हीजगथ जननी मातनय ज़ें म्यान्य यिथ्य हिव्य प्रणाम
छुस बंठेय कुन करान ॥

देवि! स्तुतिव्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते,
वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति।
तस्मान्निसर्ग जडिमा कतमोऽहमत्र,
स्तोत्रम तव त्रिपुरतापन पत्नि! कर्तुम॥३॥

چانٛۍ توتا کرنس پیٹھ چھُنہٕ سامرتھ
برٛہسپت تہٕ دیوتا جڈ بنانی !
ہی ترٛن تاپن گالوٕنۍ چھُس موٗرکھ بہٕ آسِتھ
کتہٕ سامرتھ بہٕ کرٕ توتا چانی۔
(۳)

चौन्य तोता करनस प्यठ छुनु सामर्थ,
ब्रहस्पत तु दीवता जड बनांनी!
ही त्रन तापन गालुवुन्य छुस मूर्ख
बं आंसिथ,
कति सामर्थ्य बं कर, तोता चांनी॥०॥
—((3))

०

मातः ! तथापि भवती भवती व्रताप,
विच्छित्तयेस्तुति महार्णवकर्णधारः।
स्तोतुं भवानि ! समवच्चरणारविन्द,
भक्ति ग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥४॥

ہی ماتا زانتھ یہ سمسار کٹھن دوکھ
ژٹنہ باپتھ کرم توتا یہ چانی
یہے توتا سمسار ساگرس
بنہ ناو میانی بیہہ ہانز میانی
چانہ پادِ کملہ کے لولچہ آوِشہ
بکواسی ہیتھ چھسے توتا کرانی ((۴))

ही माता ज़ांनिथ यि सम्सार कठिन्य दोख,
च़टुनु बापथ करुम तोताथि चानी।
यिहय तोता सम्सार सागरस,
बनि नाव म्यांन्य बैयि हांन्ज़ म्यानी ॥
चानि पादि कमलु केलोलुचि आविशि,
बकवोस्य ह्युव कुसय तोता करांनी ॥।
((4))

०

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति,
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि,
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः॥ (५)

برہما روٗپہ زگتس کران پادٕ ژٕے
ویشنو روٗپہ پالن کران ژٕے
رۄدر روٗپہ سمہار آخرس کران ژٕے
مُہ دِوان تہ بیٚیہ تتھ تہ گالان ژٕے
لیلایہ یِم چانہ تِمن وُچھان رنگہ رنگہ
جے جے کار آسی تے چانین لیلایے (٥)

ब्रह्मा रूप ज़गतस करान पादु च़ुय,
वैष्णू रूप पालन करान च़ुय।
रौंदर रूप समहार आंखरस करान च़ुय,
मुह दिवान तु बैयि तथ ति गालान च़ुय॥
लीलायि यिमु चानि वुस वुछान रंगु रंगु,
जय जय कार आंस्य नय चान्यन लीलायिनुय॥

०

यस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुज पत्र गौरि,
गौरि! प्रसाद मधुरां दृशमादधासि।
तस्मिन्निरन्तरमऽनङ्ग शराव कीर्णा,
सीमन्तिनी नयन संततयः पतन्ति ॥६॥

ہی گوری پمپوشہ رنگہ صفا یس
امریتہ نظر چھکھ ژ ترٛاوانی
تس پیٹھ نیتہ نیمہ سارئے یوگنیہ
کامدیوس زن چھ وش گژھانی
((५))

ही गौरी पम्पोशि रंगु सफ़ा यस,
अमरुथ, नज़र छख त्रु त्रावांनी।
तस प्यठ नैंति नेमु सारैंय यूगिनीयि,
कामुदीवस ज़न छि वश गछ़ांनी ॥

o ((6))

पृथ्वी भुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य,
विद्याधर प्रणति चुम्बित पाद पीठः।
यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणयः स एष,
त्वत्पाद पंकजरजः कराजः प्रसादः॥
((७))

اُدیَن راجَس کھڑاوِ سیٹھ گرَان میٹھی *
وِدیادرَ تہٕ دیوتَس چھی آدین *
چکرورتی عہدٕ اوس تٔمی پرووُمُت
چانہٕ پادٕ گردٕ ہٕندِ انوگرٛہہ ستی
((٧))

उदयन राजस ख्राव प्यठ करान सीव्य,
विद्यादर त दीव तस छी आदीन।
चक्रवर्ति ओहद ओस तम्य प्रोवमुत,
चानि पाद गरदि हुन्दि अनुग्रेह सुत्य॥
((७))

०

त्वत्पाद पङ्कजरजः प्रणिपात पूतैः ,
पुण्यैरऽनल्पमऽतिभिः कृतिभिः कवीन्द्रैः ।
क्षीर क्षपाकरदुकूल हिमाऽवदाता ,
कैरपिवापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्तिः ॥
((८))

ہی دلوی چانین پمپوشہ پادن
ہنٛز گردِ پیٹھ کوٚر یِمو پرنام
تِم بنیہ ووتم تیز لوٗز سوٚس
دانا ووتم کوی پرٛوو تِمو نام
دود زٔندرس ریشم وستر بنیہ شینہ پانٹھ
صفا بنِتھ ترٛن بوَنن منٛز بنیہ نیکنام ((۸))

ही दीवी चान्यन पम्पोशि पादन ,
हुंज़ि गरदि प्यठ कोर यिमव प्रणाम ।
तिम बनेयि वोतम तीज़ बोज़ सौस ,
दाना वोतम कवी प्रोव तिमव नाम ॥
दोद ज़ेन्दरस रीशिम वस्त्र बेयि शीन पांठ्य ,
सफा बनिथ त्रन बवनन मन्ज़ बनेखि नेकनाम ॥
०
((८))

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा,
मुद्दीपित प्रियतमामदरक्त गीति।
नित्यं भवानि! भवतीमुपवीणयन्ति,
विद्याधराः कनकशैल गुहागृहेषु॥
॥ ६॥

کلپہ وریکھ پوشو ستہ چانی پوزا ٭
لولہ سیتی چھہ گیوان چانی گیت
نیتھہ سمیرکے گفارفی گرن منز
دایان ودیادر سوزتہ ساز کیتی
((۷))

कल्पवृक्ष पोशव सूत्य चान्य पूज़ा,
लोलु सूत्य कि ग्यवान चान्य गीत।
न्यथ समीरके गुफा रूपी गरन मंज़,
वायान विद्यादर सोज़ तु साज़
क़रत्य।
(७)

लक्ष्मी वशी करण कर्मणि कामिनीना,
माऽकर्षण व्यति करेषु च सिद्धमन्त्रः।
नीरन्ध्र मोह तिमिरच्छिदुर प्रदीपो,
देवि! त्वदऽङि:घ्र जनितो जयति
प्रसादः॥
(२०)

چانہٕ ژرنہٕ کمَلہٕ سیوایہِ ہُنْد پرِساد
وَش کَران لَچھمی تہٕ بیٚیہ سیٚدِیَن
شَکھتی سہ پرٛاوان مُہہ رُوٗپی گیٚنہ
اَنہٕ گٹہٕ گالان ژانٛگہِ سیتی ژَن
(۱۰)

चानि चरणु कमलु सीवायि हुन्द प्रसाद,
वश करान लछमी त बैयि सैदियन।
शक्ती सु प्रावान मुह रूपी गैनि,
अनि गटु गालान चाँगि सूत्य छन॥
((1०))

देवि! त्वदंघ्रि नखरत्न भुवो मयूखाः
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचोमुद मुद्वहन्तिः
सेवानति व्यतिकरे सुर सुन्दरीणां,
सीमन्त सीम्नि कुसमस्तव कायितं यैः॥
॥ २२ ॥

ماج لوآنی چانین ژرنن ہندی نمہ ژیتن
موخت دِفتی داران ژن کرن
یوگنیہ پیٹھ پرن پیوان ژے ژرنن پیٹھ
تمہ چمکہ پرزلان ستس تہ سمتھ تمن
॥॥

मांज बवांन्य चान्यन च़रनन हुन्द्य
नमु रत्न,
मोख्त दिप्ती दारान ज़न किरण।
यूगिनियि यैलि परन प्यवान चै
च़रनन प्यठ,
नमु चमकि प्रज़लान मस तु सुमुतिमन॥
॥२२॥

०

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीधिति दीप्ति
दीप्तं,
मध्ये ललाटमऽमरायुधरश्मि चित्रम्।
हृच्चक्र चुम्बि हुतभुक् कणिकानु-
रूपम्,
ज्योतिर्यदेत दिदमम्ब! तव स्वरूपम्॥
॥ १२ ॥

ماتا ژےٚ مستک ژَندرٕ زَن پرٛزلوُن ؛
رام رام ٔبدرِنۍ دوٗنۍ چمکوٗنۍ ؛
ہَردیَس منٛز اَگنی جیوتی سوٚروٗپ زَن
ماج چوٗن سوٚروٗپ چھُے پرٛکاش آسُون
((۱۲))

माता चे मस्तक चंन्दुर ज़न प्रज़लवुन,
राम राम बेदरन्य द्रन्य चमकवन्य।
हृदयस मंज़ अग्नी ज्योती सोरूप ज़न,
मांज चोन सोरूप छुय प्रकाश आसवुन॥

०

(१२)

सिन्दूर पांसु पटलच्छुरितामिव द्यां,
त्वत्तेजसा जतुरस स्नपितामिवोर्वीम्।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय,
व्रीडां मृडानि सुदृशस्तमनु द्रुवन्ति॥
((१३))

سیٚندرِ گردِ سوٗستے جوٗرمُت آکاش
لاچھ رنگہ پرتھوی شران کرِتھ زن
یُس چھ کھیٚنہ ماترس لاج ترٲوِتھ
تس سیٚدی مآج بوانی پتہ دوران
((۱۳))

सैन्दरि गरदि सोंस्तुय जौरमुत आकाश,
लाछि रंग पृथ्वी श्रान करिथ ज़न।
युस बुछि क्षण मात्रस लाज त्रांविथ,
तस सैदी मांज बवान्य पत दोरान॥
((13))

o

मातः! मुहूर्तमऽपि यः स्मरति स्वरूपं,
लाक्षारस प्रसरतन्तु निभं भवत्याः।
ध्यायन्त्यनन्य मनसस्तमनङ्गतप्ताः,
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्वगुणं तरुण्यः॥
॥ १४ ॥

ہی ماتا یُس مہورتُس دیان کری
چون سوٗروُپ لاچھِ رنگہٕ تارِ سمان
سونٛدر جوان اَژھ رَژھ نہ ڈلونہٕ منہٕ سۍ
کامنایہِ تاوِمتہٕ تُس چھِ سمران
॥۱۴॥

ही माता युस महूरतस ध्यान करी,
चोन सौरूप लाक्षि रंगु तारि समान।
सौन्दर जवान अछु रछु न डलवुनि मनुसस्
कामनायि ताविमच्चु तस छि सुमरान॥

॥14॥

आधार मारुत निरोध वशेन येषां,
सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि ।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि! वपुस्त्वदीयं,
ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्या॥
॥१५॥

مولادارک پران بند کرتھ یمن
سیندرِ رنگی رنگمت پمپوش زن
ہردیس منز اتھ پمپوشس پیٹھ
چون سوروپ باسان راتھ کیو دن
تمنے پورشن ہند چھ دیان داران
سیدی ساد دیوتاہ تہ بییہ سعھ زن
((١٥))

मूलाधारक प्राण बन्द करिथ यिमन,
सैन्दरि सूत्य रंगमुत पम्पोश ज़न ।
हृदयस मंज़ अथ पम्पोशस प्यठ,
चोन स्वरूप बासान राथ क्यो दन ॥
तिमनुय पोरुशन हुन्द छि ध्यान दारान,
सेंद्य साद, दीवताह तु बेयि सथज़न ॥
((15))

o

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति,
रूपं त्वांऽम्ब ! नवयावक पङ्कपिङ्गम ।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाणभिन्न -
वक्षः स्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति ॥
((१६))

سِری یہٕ منڈلکہٕ پرٕکاشہٕ ووزلہٕ رنٛگہٕ سۄس بیٛیہٕ
لاچھہٕ رنٛگہٕ سۄس یِم چون دیٛشان داران
کامدیوٕ سندٕ تیٖر چھِچھہٕ وچھہٕ سۄس۔
اَزٕھ رٕژھہٕ تِمَن ماتحت چھہٕ روزان
((۱۶))

सिर्यि मण्डलकि प्रकाशि वोज़लि रंग सोंस बैयि,
लाछि रंग सोंस यिम चोन ध्यान दारान ।
कामदीव सुन्दि तीर् चचमाचि वछि सोंस,
अछ़ु रछ़ु तिमन मातहत छि रोज़ान ॥
((16))

o

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौर,
मडालोकते मनसि वागऽधिदैवतं यः।
निस्सीम् सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य,
तस्य प्रसाद मधुराः प्रसरन्ति वाचः॥
((१७))

یِم پوٗرِتھ مَنَس مَنٛز ژٕنٛدرمہ ہیُوٗ چمکہٕ وُن
سَرسوٗتی رُوٗپہٕ چوٗن دیشان دارَن
حَد رووٗس وآنی موٗدُر امرِتھ بُری تھِ
نیرِ تِمَن نیرمَل پرٕواہ ہیُوٗزَن

((۱۷))

यिम पोरुश मनस मंज़ चेन्द्रम् ह्युव चमकुन,
सरस्वी रूप् चोन ध्यान दारन।
हद् रोंस वांनी मोंदुर अमर्यथ बंर्यथ्य,
नेरि तिमन न्यरमल प्रवाह ह्युव ज़न॥
((17))

०

शर्वाणि ! सर्वजन वन्दित पाद पद्मे,
पद्मच्छद च्छवि विडम्बित नेत्र लक्ष्मिः।
निष्पाप मूर्ति जन मानस राज हंसि ,
हंसि त्वमाऽपदमऽनेक विधां जनस्य ॥१८॥

ہی پاپ گالہٕوٕنی ژےٚ پادٕ کملن
ساری زیو چھی پرنام کرانی
پمپوشہ برگکے دیٖپتی ہنٛدی پاٹھی
چانی نیتر کمل چھ شوبانی
شوٗد منشن چھکھ ژٕ ہیٚتہٕ ساگرس منز
راژہنسس ہشہ زن تہٕ روزانی
ژےٚ چھکھ سادکن نانا پرکارٕ کی
دوکھ تہٕ داروی آپدا دور کرانی ((۱۸))

ही पाप गालवुन्य चेय पादिकमलन,
सारी ज़ीव छी प्रणाम करानी ।
पम्पोशि बेरगुके दिप्ती हुन्द्य पाठ्य,
चान्य नेत्र कमल छि शूबानी ॥

छोड़ मनशास कुख द्यथ सागुरस मंज़,
राज़ु हन्स हिश ज़न त्रु रैज़ोनी।
चुय कुख सादुकस नाना प्रकारुक्य,
दो‌ग‌ त्रु दोह आपदा दूर करोनी॥
((१८))

इच्छानुरूपमऽनुरूपे गुण-प्रकर्ष,
संकर्षिणि! त्वमनुसृत्य यदा विमर्षि।
जायेत स त्रिभुवनैकगुरुस्तदानीं,
देवः शिवोऽपि भुवनत्रय सूत्रधारः ॥१९॥

ہی سنکرشنی پننہ نے یژھایے
ییلہ چھکھ ترگون سوروپ پانہ داران
تیلہ ہی دیوی ژن لوکن ہنٛد
کیول گورو شیوناتھ چھ وہپران
اَدٕ سے شومبھو ترن لوکن ہنٛد
نوٗ مۆد پانٛھی سوٗتردار بنان

((19)) ही संकरषणी पनुने यछाये,
यैलि छख त्रगोण स्वरूप पानु दारान।

तैलि ही दीवी त्रन भवनन हुन्द,
केवल गौरु शेवनाथ कु वोपदान।
अद सुय शोम्बू त्रन बवनन हुन्द,
नोंमूद पोठ्य सूत्रदार बनान ॥१९॥

—o—

योयं चकास्ति गगनार्णव रत्नमिन्दु-
र्योयं सुराऽसुर गुरुः पुरुषः पुराणः।
यद्वाममऽर्धमिदमऽन्धक सूदनस्य,
देवि! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥२०॥

آکاشہ سۆدرس منٛز رُتٕن یوسہٕ ؎
شوٗبا ژٔندرمس چھےٚ اَسانی ؎
دِلوٚن تہٕ اسرن لُس گۆرُو چھُ آسہٕ وُنے
بھگوانس شکھتی لیُس دِوآنی
یوسہٕ مہا دیوُنٛز چھ اَردانگنی سوے
چھکھ ژٕے یہٕ چھُ مآج سبدَ بانی
((۲۰))

आकाश सोंदरस मंज़ रत्नन योस,
शूबा चन्दरमस क्य अनांनी ।
दीवन तु असरन युस गुरु कु आसवुनुय,
भगवानस शक्ती योस दिवांनी ।
योस महादीव सुन्ज़ छि अर्दाङ्गनी सोय,
कुख चुय यि कु मांज स्यद बनांनी ॥
((20))



ध्याताऽसि हैमवति ! येन हिमांशुरश्मि-
मालाऽमलद्युतिरऽकल्मष . मानसेन
तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमऽनल्प कल्प;
मऽल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि ! वाग्विलासम ॥
((२१))

ییُس سوٚرِ چوٗن دۭیان نِرمل کرِ نُوسوٗس
تٚہٕ نْدرمس سٕمان اٚنْدرِ شۄد مَنہٕ کِنی
ہی شُنْدری تَس تْرِ جھَٹ پٹ کرانْ یادٕ
سَرسوٗتی ہُنْد ولاس اَنْو گرِیٚہہ کِنْو

((۲۱))

युस सोरि चोन ध्यान न्यरमल किरमब सोंय,
चे़न्दरमस समान अंन्दर शो़द्‌ मनु किन्य।
ही सौन्दरी तस च़, जह पट करान पांद,
सरस्वती हुन्द व्यकास अनुग्रैह किन्य॥
« 21 »

त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति,
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललितेत्यऽपराजितेति,
देवि! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति॥
«२२»

سارے سے وآنتھ ژ کامنا دایک
لچھمی ، کلا ، بیئیہ مالا رُوپ
دُشمنس پیٹھ زیہ سوس ژے للتا
چھی وَنان ژیے زیا ژیے دوما رُوپ ॥۲۲॥

सांयस्य वांतिथ च़ कामना दायक,
लंछमी, कला, वैंयि माला रूप ।
दुश्मनस प्यठ ज़यि सौस चु़य ललिता,
छी वनान चे़य ज़या चे़य वोमा रूप॥
०
« 22 »

उद्दाम काम परमार्थ सरोज षण्ड-
चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट्प्रकाराम्।
मोह द्विपेन्द्र कदनोद्यत बोधसिंह-
लीला गुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥
॥२३॥

یوسہ کامراجہ بیزاکھر پمپوش ڈلہ کے
پھولنہ باپتھ سِریہ رُوپہ روزانی
مولادار پیٹھ ژٹھ کٕس منز
وو پاسی رُوپہ یوسہ تتہ آسانی
یوسہ منہ ہتی تیس گالنہ باپتھ
گیاتہ رُوپہ ستہ گوپھیر چھہ روزانی
تمی سے تھگوتی ماتا ترو برابر کن
گُنگُنہ تس تھس پرنام کرانی

((۲۳)) योसु कामराजि बीज़ाक्षर पम्पोश डलुके,
फोलुन् बापथ सिर्ययि रूप् रोज़ानी।

मलाधार प्यठ षठ ब्रंकरस मन्ज़,
वोपासी रूपु युस तति आसांनी ।
योसु मुहु हेस्यतिस गालुनु बापथ,
ज्ञानु रूपु सुहु गोफि छि रोज़ांनी ॥
तंम्यसुय भगवती माता ज्योपरायि कुन,
गुल्य गंन्डिथ तस छुस प्रणाम करांनी ॥
((23))

गणेश वटुकस्तुतारति सहायकामान्विता,
स्मरारिवर विषूरा कुसुम बाण बाणैर्युता ।
अनङ्ग कुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः,
कदम्बवन मध्यगा त्रिपुर सुन्दरी पातुनः ॥
((२४))

گنیش تہٕ بیرون چھےٚ لوٚتا ژٕے کرٕ مُژ
رٕتی سان کامدیو ژٕے سیوا کرُون
شوناکھ پانہٕ چھےٚ آسن چوٕ ژٕے
کامدیو لوشہٕ پانن سٕہ داروُن
اَننگہ کُسُمو بینہٕ تریو سِدیو ژٕ وٕ جمژ
کدمبہٕ جنگلس منز ژٕ روزان ٹھی

سُے رُوپ چوٚن ماج ہی ترٚلوکۍ سوٚندٕری
کلیانس منٛز تھٔوِتھ تہٕ راچھ میانی

((۲۴))

गणेश तु बैरवन छय तोता चै़कंरमुच़,
रती सान कामदीव चे़ सीवा करवुन ।
शिवनाथ पान, छुय आसन चौनुय,
कामदीव पोशि बानन सु दारनुन ॥
अनङ्ग कोसमव बंथि त्रेयव संदियव च़
वंजिमुच़,
कदम्ब, जंगलस मंज़ च़ु रोज़ानी ॥
सुय रूप चोन मांज ही त्रैपुर सौन्दरी,
कल्याण में कं थवतनम तु राछ म्यांनी ॥
((२४))

त्वामैन्दवीमिव कला मनु भाल देश,
मुद्भासिताम्बर तलामऽवलोकयन्तः ।
सद्यो भवानि ! सुधियः कवयो भवन्ति,
त्वामभावनहित्तधियां कुलकामधेनुः ॥
((२५))

ییم مستکس منٛز ژٕنٛدرمہٕ کلا ہِش
ؤُچھ چمکاوی متی آکاشہٕ سٕتۄس
ہٕی دیوی جلدٕے چھی تم بنان دانا
بیٚیہٕ بڈٕ کوٗیتایہٕ سوٚسی
چھکھ تمن دِوان ژُیے سارِنٕے مطلبن
چانہٕ باوناےٚ کِنی تِم نیٚرمل لوٗزٕ سوٚس

((۲۵))

यिम मस्तकस मज़ं चैं च़ंन्दरमु कला हिश,
वुछ चमकांव्य मुत्य आकाशि सौंस ।
ही दोवी जल्दुय छी तिम बनान दाना,
बैयि बडि कँविताये सौस्य ।
छख तिमन दिवान च़ुय सारिनुय
मतलबन,
चानि बावुनायि किन्य तिम
न्यर्मल छौंज़सौंस
(५२)

उत्तमहेमरुचिरे ! त्रिपुरे ! पुनीहि,
चेतश्चिरन्तनमघौघ वनं लुनीहि ।
कारागृहे निगड बन्धन पीडितस्य,
त्वत्संस्मृतौ झटिति मे निगडास्त्रुटयन्ति ॥
॥२६॥

تووُمت سون زَن چھ چمکان ترٛوپرٛآے
شوٗد کر مَن مےٚ پاپہٕ کھلہٕ میانٛی لون
سمسارٕ روٗپی جیلس منٛز چھُس بہٕ
کامنایہ بیڑین ہنٛد چھُم مےٚ بوٗر
چانہٕ سمرنہٕ کِنہٕ جلد جلد چھٕٹن مےٚ بیڑ
ییلہٕ آسہٕ ژٕ تس مےٚ انُگرہہٕ چون
((۲۶))

तोवमुत सोन ज़न छ चमकान त्रोपरांय,
शोद कर मन में पापु खिल म्यांन्य लोन।
सम्सार रूपी जेलस मंज़ छुस बं,
कामनायि बेड्यन हुन्द छुम में बोर ।
चानि सुमरनि किन्य जल्द जल्द छ़ुयनन में
येलि आसि आंरत्तिस में अनुग्रेह चोन ॥२६॥

रुद्राणि ! विद्रुम मयीं प्रतिमामिव त्वां,
ये चिन्तयन्त्यऽरुणकान्तिमऽनन्य रूपाम।
तानेत्य पक्ष्मलदृशः प्रसभंभजन्ते,
कण्ठाऽवसक्त मृदुबाहु लतास्तरुण्यः॥
((२७))

ہی رۄدرانی یُس چانِس سۄروٗپس وُچھ
رۄدر شکلہ سِری بہ سٕندی پاٹھی چمکان
اپُورو روٗپس یِتھی سے دیان کرِ
سوندر نظرو سۄس اَژھ رَژھ جوان
زور سِتی تمہ گردنہ پیٹھ اتھ ترٲوی ترٲوی
اَندٲ اَندی رٲزِتھ تَس سیوا کران
((۲۸))

ही रोंदरांनी युस चांनिस सोंरूपस वुछि,
रौदर शकलि सिर्यिय सुन्दय पांठ्य चमकान।
अपूरव रूपस यिथ्य सुय ध्यान करि ;
सौन्दर नज़रव सोंस अछ़ रछ़ जवान।
ज़ोर सुत्य तमि गर्दनि प्यठ अथ त्रांव्यत्रांव्य,
अंन्द्य अंन्द्य रज़िथ तस सीवा करान॥

o

((27))

त्वद्रूपमुल्लसित दाडिम पुष्परक्त,
मुद्भावयेन्मदन दैवतक्षरं यः ।
तं रूपहीनमऽपि मन्मथ निर्विशेष
माऽलोकयन्त्युरु नितम्ब भरास्तरुण्यः ॥
((२८))

پُس چون دیان کرِ دأن پوشہِ رنگہِ سوس
اوِناشہ کامراجہ بیزاکھرس
یوٗدوَے روٗپہ کنی آسِہ سُے بدشکل
اَدٕ رٕٹھ وُچھن زَن کامدیوٗ تس
((۲۸))

युस चोन घ्यान करि दांन पोशि रंग सोंस,
अविनाशि कामराजि बीज़ अक्षरस ।
योदवय रूप किन्य आसि सुय
बद शकुल,
अदु रछु वुछन ज़न कामदीव तस ॥
((२८))

०

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धोदृशो-
स्त्वद्गुण,
ग्रामाऽकर्णनरागिताश्रवणयो स्त्वत्संस्मृति
श्चेतसि।
त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं
वाचि मे,
कुत्राऽपि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि
मा शाम्यतु॥
(२६)

ہی دلپوی چانہِ دَرشُنک اَبلاش
ہَردَم شیٚنژہنے مَنٛشرِ مێے روٗزی تن
چانی گوٗن لوٗزُنک تَمَناہ مێے آسی تن
ہَر ناوہ سُمرَن زہتس مَنٛز مێے گَرٛیہ
روٗزی تن
چانی پادِ لوٗزا مِی
چھوٗت کہر تن کَرِ وُنی روٗزی نَن مێے وای
دوپاسنا چانی کُم مَتہ مێے گڑھی تن ۲۹

हीदीवी चानि दर्शनुक अबिलाश,
हरदम नेत्रनुय मंज़ मे [illegible]सन।
चोन्य गोण बोज़नुक तमन्ना में आस्यतन,
हर दम रूज़्यतन म्यान्यन कनन॥
चोन नाम सुमरन ह्यतस मंज़ गरि गरि,
चांन्य पादि पूज़ा म्यान्यन अथन॥
चोन कीर्तन करवुन्य रूज़्यतन में वांनी,
वापासना चांन्य कम मत मे गंछ़्यतन॥
((29))

—o—

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्त्र रश्मि,
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै।
वागीश्वरी! त्रिभुनेश्वरि! विश्वमात-
रऽन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते॥३०॥

سرسوتی ترپور سوندر زگتھ ماتا
بۄنی شۄری چھکھ آسوں زے
برہما بیندر رۄدر سریہ ژندرمہ کمار
وشنو گنیش چھے پۄزان ژے
اندر نیبر واتھ ژ تروبونس سارۍ سے
گلی گنڈتھ میون پرنام واتی ژے
((۳۰))

सरस्वती त्रिपुर सौन्दरी ज़गथ माता,
बवनेश्वरी वख आसवुन्य च़ुय ।
ब्रह्मा रौदुर यन्दुर सिद्धयि च़न्दरम् कुमार,
वैष्णौ गणेश छुय पूज़ान च़ैय ॥
अन्दर नेबर वातिथ त्रोबवनस सांयसुय,
गुल्य गांन्डिथ म्योन प्रणाम वातिनय च़ैय॥
((30))

यः स्तोत्रमेतदऽनुवासरमीश्वरा याः,
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
तस्यैप्सितं फलति राजभिरीड्यतेऽसौ,
जायते स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम् ॥ ३१॥

لیس یہ حون ستوتر پر پرتھ دوہہ لولہ سان
یاگنو بوزادِ بتہ اتس کلتھان
چکرورت راجہ تس کرن لو زا
بیاعری مطلب تس چھ نیران
تہ تیم کامنا سید تس چھ تسیدان
سے چھ لو گنیں ہند زیادہ لوکٹ بنان
((۳۱))

युस यि चोन स्तोत्र परि प्रथ दोह लोलु सान,
या कनव बोज़ि अदु बनि तस कल्यान।
चक्रवर्त राजि तस करन पूजा,
सारी मतलब तस छि नेरान॥
मनुष्य कामना स्यद तस छि सपदान,
सुय छु यूगिनियन हुन्द ज़्यादु टोठबनान॥
(२१)



ॐ नमो महामायायै

॥(अथ घटस्तवः)॥ [तीसरा स्तव]

देवि! त्र्यम्बक पत्नि पार्वती सति
त्रैयलोक्य मातः शिवे!
शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे
रुद्राणि कात्यायनि!
भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कले! कालक्षये शूलिनि।
त्वत्पाद प्रणतानऽनन्य मनसः पर्याकुलान्पा-
हिनः॥१॥

ہی دیوی چھکھ ژ ترمبکہ پتنی
ژیٔے وَنان ستی ژےٚ پاروتی ؎
ترٚیلوکی ہنز ماتا بھگوتی
ژےٚ ور دِوان ژےٚ چھکھ مرڈانی
ژےٚ ترٚپور سوندری ژےٚ روٗدرانی
ژےٚ بھیانک روٗپ ژےٚ شروری
ژےٚ چنڈی ژےٚ ترشوٗل دارانی
ژےٚ کلہ کالس ناش کرانی ؎
آے شرن ژٕ پادن وبھنے کنہ چھ تمو تھے
دیا گلتا یہ منترائہ رچھ ژےٚ

ही दीवी छुख च़ु त्रम्बकु पत्नी,
च़ैय वनान संती च़ुय पारवंती ।
त्रेयलूकी हुन्ज़ माता भगवंती,
च़ुय वर दिवान च़ुय छुख मृडांनी ॥
च़ुय त्रपोर सोन्दरी च़ुय रोंदरांनी,
च़ुय भयानक रूप च़ुय शर्वंरी ।
च़ुय चंण्डी च़ुय त्रशूल दारांनी,
च़ुय कलि कालस नाश करांनी ।

आय शरण चे पादन व्यनुकिन्य चे [illegible]थुव,
व्याकोलतायि मन्ज़ [illegible] ॥
उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक मूर्च्छा इव,
प्राप्त प्रौढमदा इवाऽतिविरह ग्रस्ता इवाऽती इव।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्योक्तोपाधि विवृद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभ्रुवः
॥२॥

مَشراہ تہٕ پراہہٕ سوٗس زہر کِنۍ مۆرچھتھ نشہٕ سوٗس
وِرہَن ژٕنٛدٕ ہتھ چانہٕ اَرژٕرٕ سوٗس
ہی ہمالہٕ پُتری یِم کرٕن چون دیان
تِم آسٕ وُنۍ چھِ سٔتھا بٲگیہٕ وان
اَژھ رٕژھ ایکاگر بٔنِتھ اُوپادِ روٗس
راگہٕ سوٗس لسٕنٛدۍ دیان چھِ داران ۔ «آس شرن»

मचुराह तु प्राहु सोंस ज़हर् किन्य मूर्छित नशि सोंस,
विरहन चंद्यमुत्य चानि आरज़र्, सोंस ।
ही हिमाल् पुत्री यिम करन चोन ध्यान,
तिम आसु वुन्य छि स्यठा भाग्यवान ।
अछु रछु एकाग्र बनिथ उपाधि रोस ,
रागु सोंस तसुन्दुय ध्यान छि दारान॥ (आस शरण)

देवि त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृत स्तं नम-
न्त्याऽजन्म स्फुरदङ्घ्रिपीठ विलुठत्कोटीर
कोटिच्छटाः॥
यस्त्वामऽर्चति [illegible]ऽर्च्यते सुरगुणैः यः स्तौति
न स्तूयते,
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्ति विधुरा ध्या-
यन्ति सिद्धाङ्गना॥३॥

یُس پوٗرُش اَکہ لٹہٕ کرِ ژےٚ کُن پرنام
تَس ژھُنہٕ کھراوِ پیٹھ راز مُکُٹہٕ ڈلوان
یُس پوٗرُش لولہٕ کِنی کرِ ژاٗنی پوٗزا
تَس پورُشس پوٗزان دیو کھل
یُس پورُش کرٛان آسہِ ژاٗنی توٗتا
دیوتا تَس ژھُنہٕ اَستوتی کرٛان
یُس پوٗرُش مَنہٕ کِنی کرِ ژونہٕ دیان
سورگچہٕ اَپٕژھرٕ تَس چھ پوٗزان۔ ((۳))

युस पोरुश अकि लटि कारि चै कुन प्रणाम,
तसुज़ि खावि प्यठ राज़ु मुकट डुलवान।

युस पोरुष लोलु सान करि चांच्य [illegible],
तस पोरुषस [illegible] दीवु खिल।
युस पोरुष करान आसि चांनी तोता,
दीवता तसुन्ज़ुय अस्तोती करान।
युस पोरुष मनु किन्य करि चोनुय ध्यान,
सोरगुचि अछ्‌ रछ्‌ तस छि सुमरान॥३॥
(आयशरम०)

—o—

ध्यायन्ति ये क्षणमऽपि त्रिपुरे! हृदि त्वां,
लावण्य यौवन धनैरऽपि विप्रयुक्ताः।
ते विस्फुरन्ति ललितायत लोचनाङ्गः,
चित्तैकभित्ति लिखित प्रतिमाः पुमांसः॥४॥

ہی تر لو ر ستو ندری لیس کر دیان چون
منز منش اکی سے کھینہ ماترس
لؤ دوے شہ آسی سوندر تایہ رؤس
بیٹیہ جوانی رؤس بیٹیہ نبر دن
اشنیہ ستیدی لنس مچھے لبہ سیٹھ
شکلہ کھش نشندے دیان سورن
((۴)) (دانے نشرن)

ही त्रेपोर, सोन्दरी युस करि ध्यान चोन,
मन्ज़ मनस अंकिसुय क्षणमात्रस ।
यौदवय सु आसी सोन्दरतायि रौस,
बैयि जवानी रौस बैयि न्यरधन ।
अष्ट सेंधी तस मनुचे लबि प्यठ,
शांकल खनन सुय ध्यान सोरन ॥4॥

—o— ((आस शरण))

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्ग-
मङ्गैर्निजैः,
किं वाऽमुं निगलाम्यऽनेन सहसा किं
वैकतामाऽश्रये !
तस्येत्थं विवशो विकल्पघटना कूतनयोषिज्जनः
किं तद्यन्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमाऽऽवर्तसे॥
((5))

ہِنھِس لورِ شِنس کَرِتھ یِہ ژولِش نظری ستی
اَزِ ہا اَمی سٔندِن وُستخانن
کیاشِ تنا ہیتھ گژھہ نا اَمِس ستی
کُنہ کِنی پاتِس ستی رٔٹِتھ ہٮ۪ن
اَزِچھ رٔژھہ سو نٔدرِ گرِ گٔلِس کُن

بے روک پأٹھ آدین سپدن
سنسارس منز کیاہ چھ دولب تس
ہردیس منز لیس تہ پانہ پھیران -

(۵) यिथिस पोरुषस करहां प्रवेश नज़री सूत्य,
अछ़हां अंम्यसुन्धन वुस्तुखानन ।
क्या सना न्यन्गुलिथ गछ़ना अंमिस सूत्य,
कुनि किन्य पानस सूत्य रछ़हन ॥
अछ़ रछ़ सोन्दर गरि गरि तस कुन,
बे रोक पांठ्य आंदीन सपदन ॥।
संसारस मंज़ क्या छु दोलब तस,
हृदयस मंज़ यस छ़ु पान फेरन ॥॥(5)
(आयि शरण)

—०—

विश्वव्यापिनि! युद्धवीश्वर इति स्थाणावऽनन्याऽऽश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्यस्थितिः।
इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमा क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानऽपि न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं महत् ॥६॥

ہی زگتھ وٲپنی ییتھ شو ناتھس
الہ شرنا و زگتس منز وان

نتھے پاٹھی مآج بوآنی ژٕے زگتس منز
شکھتی ہُند ناو چھےٚ ژٕے شوبان
یوٚدوے ایشر بکھتین سمسارس منز
مآج کُنہ کُنہ دوکھ چھُ دیوان
آشژر چھُ مآج چون کرُودس پیٹھ تہ چھکھنہ
پنہ نین بکھتین دوکھ ژٕ ہاوان ۔ ((۶))
((آے شرن))

ही ज़गथ व्यापिनी युथ शेव नाथस,
ईश्वर नाव ज़गतस मन्ज़ बनान ।
तिथय पांठ्य मांजबवान्य च्युय ज़गतस मंज़,
शक्ती हुन्द नाव कुय च्वें शूबान ॥
यौंदवय ईश्वर बक्तत्यन सम्सारस मंज़,
मांज कुनि कुनि दोख क्वु दीवान ॥।
आश्चर क्वु मांज चोन क्रूदस प्यठ ति क्वखनु,
पनुन्य बंखत्यन दोख च्वु हावान ॥॥ 6 ॥॥

—०— -(आ'यशरण०)-

इन्दोर्मध्यगतां मृगाङ्कः सदृशच्छायां मनोहारिणीं,
पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासन गतां स्निग्ध प्रदीपच्छविम्।
वर्षन्तीमऽमृतं भवानि! भवतीं ध्यायन्ति ये देहिन-

स्तेनिर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झति तान्दूरतः ॥७॥

ژٔنٛدٕرمَس ہِش صَفا ژٔنٛدٕرمہٕ گَہہ سوٗس
پھوٗلِ مُتِس پَمپوشَس پیٹھ ژٔے
خوٗش یوٗنہٕ پرٛکاشہٕ گَہہ سوٗس ژٔ آسوٗنی
یوٗس کَران ورشُن امرِتٕچ کُے
یِم یِہ دِیان کَران تِم بیمارٕ روٗس روزان
آپدا چھِ تِمَن دوٗر سپدان ۔ ((۷))
(آے شرُن)

च़न्दरमस हिश सफा च़न्दरमु गह सोस,
फौल्य मुतिस पम्पोशस प्यठ च़ुय ।
खोश्य यिवनि प्रकाशि गह सोस च़ आसुन्य,
योसु करान वरशुन अमरथ्यतु कुय ॥
यिम यि द्यान करान तिम ब्यमारि रौस रोज़ान,
आपदा छि तिमनुय दूर सपदान ॥७॥ (आय शरण)

पूर्णेन्दोः शकलै रिवातिबहुलैः पीयूषपूरैरिव,
क्षीराब्धेर्लहरी भरैरिव सुधा पङ्कस्य पिण्डैरिव ।
प्रालेयैरिव निर्मितं वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया,
चित्तान्तर्निहितार्तितापविपदस्ते सम्पदं बिभ्रति ॥

پُننِم ژٔنٛدرمہ زَن اَمرِیتہٕ پرٛواہ زَن
گژھ پِنٛڈ کھیٖر سوٚدرٕچ لہر زَن
شٔنس ہُتُو صفا چون سوٚرۄپ بناوِتھ
یُس کرِ دِیان تَنہٕ مَنہٕ لولہٕ کِنی
تَس چھِ دوٗر گژھان دوکھ آرٕ تہٕ آپدا
سمپداسہٕ پراوان زَنمہٕ زَنمَن (۸)
(آے شَرن)

पुनिम चंन्दरमु ज़न अमरुथ्य प्रवाह ज़न,
गछ पिण्ड छीर सौंदरुच लहर ज़न।
शनस ह्युव सफा चोन सोरूप बनाविथ,
युस करि ध्यान तनु मनु लोलु किन्य॥
तस छि दूर गछान दोख आरखर तु आपदा,
सम्पदा सु प्रावान ज़न्मु ज़न्मन ॥8॥
(आय शरण)

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोल्लसन्तीं,
त्वां ग्रन्थिपञ्चकभिदं तरुणार्क शोभाम्।
रागार्णवे बहुलरागिणि मञ्जयन्ति,
कृत्स्नं जगद्दधति चेतसि तान्मृगाक्ष्यः॥९॥

یُس سادک کرِ دیان چون باسہ وُن
زٕژل ٹرکاشہ سوٚس بجلی سمان
پانژہ دَل ژٕٹھے بال سِریہ سندی پاٹھی
وۆزلہ رنگہ سوٚستے زَن ژمکان
رنگ سوٚدرس منز پھوٚلمُت سوٚرے
زٕگنتھ زَن رنگہٕ کنۍ سوٚرخی سان
یُس یہ دِیان کرِ تَس یوگنی ژہ تَس منز
تَسٕندُے گرِ گرِ دیان چھہ داران ((۹))
(آے شرن)

युस सादुक करि ध्यान चोन बासवुन,
चञ्चल प्रकाशि सौस बिजली समान।
पांछ दल चंट्यथुय बाल सिर्यि संद्य पाठ्य,
वोज़ल्ति रंग सौस्तुय ज़न चमकान॥
रंग सौदरस मन्ज़ फौटमुत सोरुय,
[illegible]गथ ज़न रंग किन्य सोरुखी सान।
युस यि ध्यान करि तस यूगिनी च्यतस मंज़,
तसुन्दुय गरि गरि ध्यान छि दारान॥ १॥
((आय शरण))

—o—

लाक्षारसस्नापित पङ्कजतन्तु तन्वी,
मऽन्तः स्मृत्यऽनुदिनं भवतीं भवानी।
यस्तं स्मर प्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा,
नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति ॥२०॥

لاچھ سّتی رنگٕ منہٕ کمولشہٕ تارِ ہٕو
پرتھ دۄہہ یُس دارِ چونُے دیان
تس کامدیو زانتھ کمہٕ یوگنی،
نیٚترٕ رۄپہٕ پوشو چھہٕ پوزا کران — (۱۰)
(آے قرن)

लाछि सूत्य रंग्यमुति पम्पोशि तारि ह्युव,
प्रथ दोह युस दारि चोनुय ध्यान।
तस कामदीव ज़ानिथ कमु यूगिनी,
नेत्र रूपु पोशव छि पूज़ा करान ॥ १० ॥
(आय शरण०)

—०—

स्तुमस्त्वां वाच्यमऽव्यक्तां,
हिमकुन्देन्दुरोच्चिषम।
कदम्ब माला विभ्राणा—
माऽऽपादतललम्बिनीम् ॥ २१ ॥

تو تا کران چھی اسی ژٕ نے واکھ دیوی
ژٕندرمس کوندٕ پوشس ہش یوسہٕ چھے دِپتھان
شوبہ وٕنی کدمبہ مال ماج چھکھ ژٕ دارٕونی
نالی چھے ژٕ نے شیر پیٹھٕ پادن تانی «۱۱»
((آیہ شرن))

तोता करान छी अंस्य चें वाखदीवी,
च़ंदरमस कोन्दु पोशस हिश योस छे
दिफ्लि मान ॥
शूबुवुन्य कदम्बु माल मांज छख च़ दारवुन्य
नाल्य छय चें शेर प्यठ पादनतान्य ॥११॥
—०— (आयशरण)

मृद्वीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डुत्विषं
वर्षन्तीममृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपि रन्ध्रेऽपि च।
अच्छिन्नाच मनोहरा च ललिता चाऽपि प्रसन्नाऽपि च
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते! वाक्सर्वतो वल्गति॥
॥१२॥

گلس پیٹھ شوبہٕ وُن ژٕندرمہ ژٕ نے دراٹھ
پمپوشس پیٹھ ژٕ دِپتی سۆ نس

ہتھ چھکھ ژٕ شوبہ ونی تر ہمہ رندرس منز
اَمرتھ ژھٹان بڈ شوبایہ سوّس
یُس یہ دیان کرِ چون ہی دلوی تس
سرسوتی نیرِ مکھ بڈ دلکاسہ سوّس ((۱۲))
(آے شرن)

कलस प्यठ चंन्द्रमु शूबुवुन चै द्रामुत,
पम्पोशास प्यठ चु दिवत्ती सोंस ।
बिहिथ हरत् चु शूबुवन्य ब्रह्म रोंन्दरस मंज़
अमर्‌थ छटान बडि शूबायि सोंस ॥
युस यि ध्यान करि चोनै ही दीवी तस,
सरस्वती नेरि मोखु बडि व्यकासु सोंस॥
—०— -(आय शरण) ॥12॥

ददातीष्टानभोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति विपदो
दहत्याधीन व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते
हठादऽन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीह विरहं
सकृद्ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते॥

مطلب چھکھ دوان دشمن ژٕ گالان ((۱۳))
آبدائن چھکھ ژٕ ناش کران

آدِیَن زالان وِیاآدِیَن شوٗ مراوان
سوکھ تہٕ سمپدا چھکھ ژٕ ولستاران
اَنٛدرِم دوکھ تہٕ دادی پریہ وِرہ ژٕ گالان
یِم اَکہِ لَٹہِ ماج دیان چون کران
تِم اَدٕ کمہٕ پاپہٕ نِشہِ چھی موکلان
یِم اَکہِ لَٹہِ ماج دیان چون کران۔ (۱۳)
(آے شرن)

मतलब छुख दिवान दुश्मनन चु गालान,
आपदायन छुख चु नाश करान।
आंदियन ज़ालान व्यादियन शोमरावान,
सोखु तु सम्पदा छुख चु व्यस्तारान।
अन्दरिम्य दोख तु दाद्य प्रयि विरह चु गालान,
यिम अकि लटि मांज ध्यान चोन करान।
तिम अदु कमि नु पापु निशि छी मोकलान,
यिम अकि लटि मांज ध्यान चोन करान॥
(आयशरण) ॥13॥

—०—

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते चिन्तय-
त्यन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्याश्रयत्यर्चति।

यश्च त्र्यम्कवल्लभे! तव गुणानाऽकर्ण्य यत्यादरा-
तस्य श्रीर्न गृहाद्वैति विजयस्तस्याग्रतो-
धावति॥२४॥

یُس چون کرِ سُمرن بوٗز سیتی یُس زانہٕ
وِدیایہٕ کِنی ماج یُس ژےٚ پراوی
شوٗدِ منہٕ کِنی زپہٕ ناو چون گرِ گرِ
لولہٕ نیتٕرو سیتی کرِ درشن
شروِنہٕ کِنی منٕنہٕ کِنی یُس وِچارِ
ہر وقتہٕ تو تایہٕ کرِ چانی ستی لولہٕ زا ✱
گوٗن گیوٗ چانی لولہٕ سان دوٗن تہٕ راتھ
تمہٕ سٕتی ستی اوسُنہٕ روزِ اکھ ساتھ
لچھمی چھےٚ نہٕ تشدِ گرِ لٕشہٕ نیران
زےٚ تنس پٔتھ وقتہٕ برونٹھ چھُ دوران
॥४२॥ [(آٚرے نژن)]

युस चोन करि समरन बोज़ सृत्य युस ज़ानि,
विद्यायि किन्य मांज युस चें प्रावी।
शोदि मनु किन्यज़पि नाव चोन गरि गरि,
लोलु नेत्रव सृत्य करि दर्शुन।
श्रवणु किन्य मननु किन्य युस व्यचारि,

हर वक्त तो॒ताथि चान्य बैथि पूज़ा ।
गो॒ण गैवि चानी लील् साल द्यन तु राथ ।
तथ्य रेस्तुय युस न्, रोज़ि अख साथ ।
लछ़्मी छनु तसुन्दि गरि निशानेरान,
ज़्य तस प्रथ वक्त फ्रोन्ह छु दोरान ।।१४।।
(आयशरण)

किं किं दुखं दनुजदलिनि! क्षीयते न स्मृतायां,
का का कीर्तिः कुलकमलिनि! ख्याप्यते न स्तुता-
का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यते नार्चितायां, यांम्!
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम्।।
(२४)

کم سنا دہ کہ چھ تم ہی دوکھن گالہ وُنی
یم گلہ نے نہ چانہ سمرنہ ستی
کوسہ چھ نیک نامی ہی کولس کھالہ وُنی
یوسہ نہ تنہ چانے نوتابہ ستی
کوسہ کوسہ چھ سدی ہی سدداتری
یوسہ نہ پراپت سپدِ چانہ پوزا یہ ستی
کم کم چھ تم لوگ ہی زرگنت امبا!!!
یم نہ سپدِ نش چانہ نہ تتنہ ستی ((۱۵))
(آےشرن)

कम सना दोख छि तिम ही दोखन गालुवुनि,
यिम गलुनय नु चानि सुमरनि सूत्य।
कोसु छि नक नामी ही कोलस खारुवुनि,
योसु नु बनि चाने तोताथि सूत्य।
कोसु कोसु छि सैंदी ही सैंदी दात्री,
योसु नु प्राप्त सपदि चानि पूज़ायि सूत्य।
कम कम छि तिम योग ही ज़गत अम्बा,
यिम नु स्यद वनन चानि चयनतनु सूत्य॥

—o—

(आय शरण)(१८)

ये देवि! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्था:,
ये कालि! कालधन पाश नितान्त बद्धा:।
ये चण्डि! चण्ड गुरु कल्मष सिन्धु मग्ना
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव॥२६॥

ہی دیوی یِم مہاکالہ سِندِس کھٔلس
موکھس منٛز بأگ گٔمتی
ہی کألی یِم مہاکالہ سٔتھ منٛز
رَز زُورِ پأٹھی چھِ گنٛڈِتھ آمتی
ہی چنڈی یِم پاپک تہٕ کھٔلس
پاپکس سمنٛدرس منٛز چھِ کھٔچتی

یِلہ کرن دیان چون تیٖلہ چھکھ رچھان
تمن موکلاوان بیٖیہ تاران ژٕے۔ (۱۶)
(آے شرن)

ही दीवी यिम महाकालु सन्दिसयकठिनिस,
मोखस मन्ज़ बाग गॅमुत्य ।
ही काली यिम महाकालु सुन्ज़ि मोचि,
रज़ि चुरि पांठ्य छि गन्डनु आमुत्य ॥
ही चण्डी यिम बारीक तु कठिनिस,
पापुकिस समन्दरस मन्ज़ छि फॅरयमुत्य।
यॅलि करन ध्यान चोन तॅलि छुख रछान,
तिमन मोकलावान बेयि तारान च़्य।
—०— (आय शरण) ॥16॥

लक्ष्मी वशी करणचर्ण सहोदराणी,
तत्पाद पङ्कजरजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे,
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुरक्षराणि ॥
(२७)

تاتھ بوٗآئی لچھمی وش کرٕنس سیٹھ

پادٕچ گرٕد چانٕے طاقتہٕ سوٚس
چانہِ پرٛنامہ وِزِ لگہ یمن للاٹس
پادٕچ گرٕد چانٕے بڈٕ نِشانہ سوٚس
سوے پادٕچ گرٕد گالہِ دوٗر اکھیرٕ تس
زگتس منٛز بنہِ سُہ جے کارٕ سوٚس (۱۷)
(آیہ شرن)

मोंज ब्वान्य लछ्मी वश करनस प्यठ,
पादुच गर्द चान्य ताकुत सोंस ।
चानि प्रणामु विज़ि लगि यिमन ललाट
पादुच गर्द चान्य बडि निशानु सोंस ॥
सोय पादुच गर्द गालि दोर अखुर तस
ज़गतस मंज़ बनि सु जयकार सोंस ॥

—०—

(ओंम् शरण

रे मूढाः! किमऽयं वृथैव तपसा कायः
परिक्लिश्यते
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रिय
गृहाः ।
भक्तिश्चेदऽविनाशिनी भगवती पादद्व
सं०यता

मुन्निद्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मीः
पुरो धावते ॥२८॥

ہی موڈ کیاز چھکھ بے فایدہ تپہ کنی
پننس شریرس تکلیف دِوان
یگنہ کنی دانہ کنی بجہ دکھنایہ کنی
کیاز چھکھ گر پنن خالی کران
گژھ شرن ماجہ شارکایہ پراو بکھتی
ہے کرن تسندے پادسیون
اَدِ چھوکی منتہ پمپوشہ نیتر سوس
گنجی پروپھٹہ پروپھٹہ ہیی دورن - (۱۸)
(آسے شرن)

ही मूडु क्याज़ि छुख बे फायद तपु किन्य,
पनुनिस शरीरस तकलीफ दिवान ।
यज्ञ किन्य, दानु किन्य, बजि दखिनायि किन्य,
क्याज़ि छुख गरु पनुन खाली करान ।
गछु शरण बु माजि शारिकायि प्राव बखती,
हे करन तसुन्दुय पादि सेवन ।
अदु फोलि मुति पम्पोशि नेत्रव सोंस,

लंक्ष्मी ब्रोंठ ब्रोंठ हैंयी दोरुण ॥१८॥

—०—   —(आय शरण०)

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि,
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्यः ।
श्लक्ष्णं वसे मधुरमद्मि भजे वरस्त्री-
दैवि ! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ॥१९॥

کأنٛسہ مَنگہ نہ بیٚیہ کأنٛسہ تارِنہ بأزی
عارِتھ تراوِ کرِنہ کأنٛسہ سیٚوا
زآوِلی وستر دارہ کھیٚمہ مۆدرِ چیز
اَرِتھ رٕتھ ہیٚرے شُتھی کرُکھ ییٚلا
بییِلہ مأج بوٲنی ہردٕیس منٛز ہیٚتے روزکھ
تییِلہ شیا نہ کامنا پیہ سیٚد سپدان (۱۹)
(آے شرن)

कांसि मंगनु बैयि कांसि तार नु बोज़्य,
आंरचर त्रावु करनु कांसि सेवा।
ज़ांविल्य वस्तुर दार रुयमु मौदुर्य चीज़,
अबु रब्रुनुय सूत्य कर् खेला।

यैलि मांज ववांन्य हृदयस मंज़ मे रोज़ख,
तैलि म्यानि कामुनायि स्यद सपदन ॥19॥
—०— (आय शरण०)

शब्द ब्रह्ममयि ! स्वेच्छे ! देवि! त्रिपुर सुन्दरि,
यथा शक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरी ॥२०॥

ہی شبد رۄپی نیرمل سۄرۄپی
ہی دیوی ہی تِرپور سونٛدری
کرِ یتھا شکتی مےٚ چانٛی پوزا
کرِ سویکار ہی پرمیشورٕی — (۲۰)
(آے شرن)

ही शब्द रूपी न्यरमल स्वरूपी,
ही दीवी ही त्रिपोर सोन्दरी।
कर यथा शक्ती मे चान्य पूज़ा,
कर स्वीकार ही परमीश्वरी ॥२०॥
—०— (आय शरण०)

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः,
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः
सदा ॥२२॥
سۄنٛدیتن سۄکھی ماج سادک ساری

یِم دوشٹ آسن تِم گلی تن
شِو رُوپ اَوستھا مَنٛز تِم تارِتھ تن
گورٕ دیو سَدا مَنٛز پٕرسن رُوزِتن (۲۱)
(آیے شرن)

रूज़यतन सोंखी मांज सादक सारी,
यि म दोष्ट आसन तिम गल्य तन।
शिवरूप अवस्था मैं ति मांज बेन्यतन,
गोरदीव सदा मैं प्यठ प्रसन्न रूज़यतन ॥२१॥
(आयशरण०)

दर्शनात्पापशमनी जपान्मृत्यु विनाशनी।
पूजिता दुःखदुर्भाग्य हरा त्रिपूर सुन्दरी ॥२२॥

چانہِ دَرشنہٕ پاپ ساری چھ گلان
چانہِ زَپہٕ مرتیو چھُ ناش سپدان
پوزا یہٕ کیٚنہہ چون مہامایہ کیٚنہہ
زیوس دوکھ تہٕ دوربھاگیہ دور شیدان- (۲۲)
(آیے شرن)

चानि दर्शनु पाप सारी छि गलान,
चानि ज़पु मृत्यू छु नाश सपदान।

पूज़ायि - . किन्य चोन महिमा म्यवुन
ज़ीवस दोख तु दोर बाग्य दूर सपदान ॥२२॥
(आयशारःत)

—०—

नमामि यामिनी नाथलेखालङ्कृत कुन्तलाम्।
भवानी भवसन्ताप निर्वापन सुधा-नदीम् ॥
(॥२३॥)

نمسکار چھس کران ییمس کیشس منز زرے
ژندرمہ پرزلان راتس رو دن
سمسارہ دوکھن چھکھ نبواران ژے
امرتہ ندی ہیشہ پروانہ ستی زن
(آیہ شرن) ॥۲۳॥

नमस्कार कुस करान येमिस केशस मंज़ ज़े
चेन्दरमु प्रज़लान रात्रो द्यन ॥
सम्सारु दोखन कुस न्यवारान च़ुय।
अमरथतु नदी हुन्दि प्रवाह सूत्य ॥२३॥
(आय शरण।)

=०=

मन्त्र हीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यत्कृतम्।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि ॥
(॥२४॥)

منتر ہین آسنہ کریا ہین آسنہ
ودی ہین آسنہ یہ کینژھا پروثم

تھہ سارِسے ہی پرمیشوری،
ژے کرپایہ کِنۍ عارتس منز آنج بخشم
(آے شرن) (۲۴)

मन्त्र हीन आंसिथ, क्रियाहीन आंसिथ ।
विधि हीन आंसिथ, यि केंछा प्रोवुम ॥
तथ सारिसय ही परमीश्वरी ।
च़ुय कृपायि किन्य आंरतिस मे मांज बखशुम ॥
आय शरण चैं पादन विनयि ... ।
याके सुतायि मंज़ असि रछत च़ुय ॥(24)

ॐ

अथ अम्बास्तव

(चौथा स्तव)

ॐ नमो जगदम्बिकायै ।

ॐ यामाऽऽमनन्ति मुनयः प्रकृति पराणीं,
निर्दोषयन्ति यांश्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामऽर्धपल्लवितशंकर रूप मुद्रां,
देवीनऽनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये ॥ १॥

یَس مُنیشَر آدِ پرٛکرتی مانان ۔
یَس وَنان وِدیا وید رَہسیہ زانہٕ وُنی
تَس شِوناتھ سَنٛز اَردانٛگی یُس
شوٗبایہ سۆس زَگتس چھ رٔچھ وُنی
تَس آمُت بہٕ ایکاگر ژیتھ ونِتھ
چھُس پیوان تَس پادَن پیٹھ پَرن - (۱)

यस मुनीश्वर आदि प्रकृती मानान,
यस वनान विद्या वेद रहस्य ज़ानुवुन।
तस शिवनाथु सन्ज़ अर्धाङ्गी योसु,
शूबायि सौस ज़गतस छि रछिवुन्य॥
तस आमुत बे एकागर च़्यथ वनिध,
छुस प्यवान तस पादन प्यठ परन॥1॥

—•—

अम्ब! स्तवेषु तव तावदऽकर्तृकाणि-
कुराठी भवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि।
डिम्बस्य मे स्तुतिरऽसावऽसमञ्जसाऽपि-
वात्सल्य निघ्न हृदयां भवतीं धिनोति॥
- (२)

ہی ماتا چانی توتا کرنس پیٹھ
برہما وانی تہ جڈ بنانی
ہیٔ شری سنزیہ توتا یوٗد چھوٹ پھٹے۔
باونایہ کنہِ ہردیس ژٕ سوکھ دِوانی۔ (۲)

ही माता चान्य तोता करनस प्यठ,
ब्रह्मा वांनी ति जड़ बनांनी।
मैं शुर्यसुन्ज़ यि तोता योंद छ्टिर फुट्य,
बावुनायि किन्य हृदयस च़ु सोख दिवांनी॥
(2)

—०—

ओमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुरेखा,
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति।
निःष्यन्दमान सुखबोध सुधा स्वरूपा,
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम॥३॥

چھ اکاشہ روٗپہٕ کنہِ ناد بیٛند روٗپہٕ کنہِ
ژٕ نِدرٕمہ کلاہس چھکھ ژٕ پرزلان
وانی ہُنٛد شبد روٗپ چون چھُ آسِون
سوکھ نہٕ گیان امرت ژٕ بیٛلس بران
چمکان چھکھ لس منز منس ژٕ ہیتِ
ژٕ کتھس منز آسہِ شِوری باگیہ وان۔ (۳)

चिदाकाश रूप किन्य नाद बिन्दुरूपु किन्य,
चंन्दरमु कला हिश छुख चु प्रज़लान ।
वांणी हुन्द शब्द रूप चोन छु आसुवुन,
सोरुय तु ज्ञान असरूथ्तु चैय निश नेरान॥
चमकान छुख तस मंज़ मनस चु पानय,
ज़गतस मन्ज़ आसि युस बाग्यवान ॥३॥

आविर्भवत्पुलक संततिभिः शरीरे-
र्निष्यन्दमान सलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपासते ये,
पादौ तवाम्ब! भुवनेषु त एव धन्याः ॥४॥

آسن یس رُم وو تھ دنہ شریرس
اوش آسیس نیترو نیران
وانی ہنز پد پرکتی گرڈھی
پادن ترے آسہ لیس پوزا کران
تس ہیو کس ستا چھ تریلوکی منز
ترن بونن منز سے چھ باگیہ وان۔(۴)

आसन यस रुम वोथुदनि शरीरस,
ओश आस्यस नेत्रव नेरान ।

वांणी किन्य पद परि गित्य गंछ्य गंछ्य,
पादन न्ें आसि युस पूज़ा करान ।
तस ह्युव कुस सना छु त्रेयलूकी मन्ज़,
त्रेन ब्वनन मन्ज़ सुय छु भाग्यवान ॥4॥

—•—

वक्त्रं यदुद्यतमऽभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदऽपि देवि! शिरः करोति।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमऽम्ब! तानि
कस्याऽपि कैरऽपि भवन्ति तपोविशेषैः॥५॥

موکھ لیس آسہ وُدلوکُہ ستوتس
ہی مآج حیاتی تیوتا کرنس پیٹھ
شِر لیس نُدرے آسہ گرہ گرہ ہی مآج !
ژیے کن نمسکار کرنس پیٹھ
مَن لیس لوگمت آسہ مآج ژیے کن
سُمرن کرِ حیان راتس دوہن
آسہ کا ہنہ شہ بگیہ وان کمہ تانی خاص تپہ کے
پوشہ کنی روز گرگرہ ژییے ستہرن (۵)

मोख यस आसिथ वुधुगु सौंस ही मांज,
चान्य तोता करनस प्यठ ।
शेर यस दुव आसि गरि गरि ही मांज,
चैंय कुन नमस्कार करनस प्यठ ॥
मन यस लौगमुत आसि मांज चेंय कुन,
सुमरन करि चोन रात्रो द्यन।
आसि कांह सु भाग्यवान कमि तान्य खास तपके,
पौणि किन्य रोज़ि गरि गरि चेंय करान ॥
(5)

—o—

मूलालबाल कुहरादुदिता भवानि !
निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु-
निःष्यन्दमान परमाऽमृत तोय रूपा॥६॥

مۆلادارِ نشہ دِرامہرِ گرشتھ چھپوُش زِتھ
بجلی ہِشہِ دِی پانٕچھی تیٚوور کُن کھسان
شہسر ڈٕلہِ سے نشر اَزِتھ تورِ نیران
امرتہٕ وٲنٛی رۆپہ بوٚن چھہ واتان
(۶) —

मूलादार् निशि द्रामुच़ थंर शैं पम्पोश्च़ाचे़टिथ,
बिजली हेन्द्य पांठ्य ह्यौर कुन खसान।
संहस्र डलसुय मंज़ अंचिथ तोर् नेरान,
अमरतु वांन्य रूप् बोन वेंयि द्धि वसान॥
-(6)

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते ,
मुग्धः कटाक्ष विधिरऽङ्कुरयां चकार।
धत्ते तदा प्रभृति देवि! ललाट नेत्रं,
सत्यं ह्रियेव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः॥७॥

یلہ زول کامدیو اکھ شیو ناتھن
اکہ کٹاکھہ تتھی کینی دوہ پیدا اوکھ
تتہ ستھہ مہادیو منز للاٹک نیتھر
شرمہ کنی اوڈے نیتھر ہ چھ مُشراوتھ (८)

येलि ज़ोल कामदीव अख शीव नाथन,
कि कटाक्षि तिथ्य कूत्य वोपदांविथ।
[illegible] यथ महादीव मंज़ ललाटुक नेथुर,
[illegible] न्य ओडुय नेथुर छु मुच़ुरांविथ।
(.7)

अज्ञात संभवमनाकलिताऽन्वबायं,
भिक्षुं कपालिनमवास समद्वितीयम्।
पूर्वं करग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ॥ ८॥

نہ زانۍ ہنز نہ ہم پیش کونہ پیشوس بیکھو
ننگے پہ دوئیمہ روٗس پھینتھ کلہ مال
چانہ ولوانہ یرو تھو ہی ہمالہ پتری
کُس اوس زانان شیو سُندحال ((۸))

नंज़ांन्यमुति ज़न्म युस कोलु सोंस बिछू,
नन्गय तु, दोयमि रोस कुनिथ कलुमाल।
चानि व्यवाहु ब्रोंठ ही हिमालु पुत्री,
कुस ओस ज़ानान शीवु सुन्द हाल॥
—०— ((४))

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च,
भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ।
वेतान संहति परिग्रहता च शम्भोः,
शोभां बिभर्ति गिरिजे! तव सहचर्यात्॥
(९)

چرم پوشاک شمشان بسما ملتھ
نژان شمشانن ستہ بیکھ منگہ وُن
بوُت کھلہٕ پرِوار آسہ وُن تس شِوس
شوُبان تیلہٕ ییلہٕ ژیئے ستی چھُپکہ وُن (۹)

चरम पोशाक शुमशान बस्मा मलिथ,
नच़ान शुमशानन सु बीख मन्गुवुन ।
बूत खिल परिवार आसुवुन तस शिवस,
शूबान तेलि येलि च़ेय स्त्य छुपकवुन ॥(९)॥

कल्पोप संहरण केलिषु पण्डितानि,
चण्डानि खण्डपरशोरपि ताण्डवानि ।
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः,
लस्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ॥१०॥

گیانتک ناش نژناہ تہ گیشر ناہ
تس مہادیو سٕنز چھہ بُڈ کرِیدا
ستیہ بدلان سمیدان ہِنز
ییلہ نژادان ژٕ تتھ شوب لگان (۱۰)

कल्पान्तुक नाश नचुनाह तु गिन्दुनाह,
तस महादीवु संज़ क्रि बंड क्रीड़ा
सोरुय सु बदुलान सम्पदायन मंज़,
येलि त्रावान तथ चु शोब नज़राह ॥ -(१०)

जन्तोरपश्चिमतनोः सतिकर्मसाम्ये,
निःशेष पाश पटलच्छिदुरा निमेषात्।
कल्याणि! दैशिक कटाक्ष समाश्रयेण,
कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेद दीक्षा ॥११॥

زیوس کرمن سپدتھ شوٗدی ٭ ٭ ٭
اَکہِ ہمیشہِ کھالسہ سموٗہ تس ژِ گالان
زیے حچکھ دَیایہِ کینہِ گورُ روٗپہ بنتھ تس
شبوٗ شکتی دکھیا وو پدِیش کران۔

(११) जीवस कर्मन सपदिथ शोंदी,
अकि निमीशि फांसि समूह तस चु गालान,
त्रय छख दयायि किन्य गोर रूपु बनिथ तस,
शिवशक्ती दीक्षा वोपदीश करान ॥११॥

मुक्ता विभूषणवती नवविद्रुमाभा,
याच्येतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या।
एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां,
कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥१२॥

موخته مالہ زیور روُدر مالہ ژھنی ژھنی
آسوُنی چھکھ ژ ماج شوباییمان ؁
یُس پورُش آسہ سندیا تارکو سوُس
چون سوروُپ یتھ ہیو تس باسان
تس پورشس ترِبُونچہ یوگنیہ
پانژ کانہ روُستی کامدیو سمران۔(۱۲)

मोख्तु मालु ज़ेवर रौद्रु मालु छुन्य छुन्य,
आसुवुन्य छख चु मांज शूबायिमान।
युस पौरुष आसि सन्ध्या तार कव सोस,
चोन सोरूप युथ ह्यव तस बासान,
तस पोरुशस त्रिबवनंचि यूगनीयि,
पांछ़ कानि रौस्ती कामदीव सुमरान॥

—०—

—(12)—

ये भावयन्त्यऽमृतवाहिभि रंशुजालै-
राप्यायमान भुवनामऽमृतेश्वरी त्वाम् ।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरऽलङ्घनीयां,
ब्रह्मादिभिः सुर वरैरऽपि कालकक्षाम् ॥१३॥

ہی ماتا یم ژےٚ سوٚروٕنی آسن
اَمرتھ رۄپہ سوکھ دِوان تِژن بوٚنن
تِم کران کالہٕ مرِی یادا یہِ الِیوس
یتھ تِژن کٔھٹِن برہادِکن تہٕ دیوٚن ۔(۱۳)

ही माता यिम चै सोरवुन्य आसन,
अमरथु रूपु सोख दिवान त्रन ववनन ।
तिम करान कालु मर्ययादायि अपोर,
यथ तरुन कठ्युन ब्रह्मादिकन तु दीवन॥
(१३)

—o—

यः स्फाटिकाक्ष राण पुस्तक कुण्डिकाढ्यां,
व्याख्या समुद्यत करा शरदिन्दु शुभ्राम् ।
पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते,
मातः! स विश्वकवितार्किक चक्रवर्ती॥
—(१४)

ستٹکچ زپہ مال اَکہ اَتھہ دارِتھ ژٕ
پوستک کمنڈل بیٛیہ دوٚن اَتھن
ویاکھیانس پٹھ ویاکھ اَتھہ چھُ لوگمت
ژٕندرمس ہیُو نِپوژن ژٕ آسن
لُس یُتھ دیان کرِ چون ماج منز منس
کوٚیِن ہُنٛد ژٕ کرو رتنان سہ رگتھ

सटकुच ज़पुमाल अकि अथु दारिथ च़,
पोस्तक कमंडल बैयि दोन अथन ।
व्याख्यानस प्यठ व्याख्य अथु कोलॅगमुत,
च़न्दरमस ह्युव न्पोझजन चै आसन।
तुस युथ ध्यान करि चोन मांज मंज़ मनस,
अध्ययन हुन्द चंकुरत बनान सु ज़गतस॥
(14)

—o—

बर्हावतंस युत बर्बर केश पाशां,
गुंजावली कृतघनस्तनहारि शोभाम्।
श्यामां प्रवाल वदनां सुकुमार हस्तां,
तामेव नौमि शबरीं शबरेश्वर जायाम्॥२२॥

مور پکھ مُکٹہ سوٗس ژٕ چمکوُنہ کیٚشہ سوٗس *
ژٕ فلہ ہارِ سوٗس ژٕ شوٗبا یہ مان
چمکہ وُنہ موکھ سوٗس تہٕ کوٗمل اَدھرٕ سوٗس ژٕ
تھتھی شکار بایہ روٗپس بہٕ پرنام کران۔
(۱۵)

मोर् परिख मुकटु सौंस च् चमकुवुनि कोशि सौंस,
रच् फलि हार् सौंस च् शूबायिमान ।
चमुंकुवुनि मोख् सौंस त् कोमल अधव सौंस च्,
तथ्य शिकारबायि रूपस बं प्रणाम करान॥
-(15)

—o—

अर्धेन किं नवलता ललितेन मुग्धे,
क्रीतं विभोः परुषमऽर्धमिदं त्वयेति ।
आलीजनस्य परिहास वचांसि मन्ये,
मन्दस्मितेन तव देवि! जडी भवन्ति ॥
(२६)

ہی ہا سوندری چھکھ ژٕ آسوٗنی
مَنو ہَر تہ سوندر نو تھٕر ژٕ ن
کیا زِ ہیشو تھتھ موٗلہ نیٚتھ ہیشو ساتھی

لُسں سخت بیّہ کٹھور شو چھُ آسۍ وُن
ولسُں ہیشہ اَتھ ہاسہ لوُر وِک وُزن
چانہِ کَمہ اَسنہ سِتی موٗد تِھ تِم مَن - (۱۵)

ही महासौन्दरी कुख चुय आसवुन्य,
मनोहर त, सौन्दर नेव थॅर ज़न।
क्याज़ि हौतथन मोल, युथ ह्यव सांसी,
युस सख्त बैंयि कठोर शीव कु आसवुन।
व्यसन हुन्दि अधु हालि पूर्वक वच़न,
चानि कम असनु, सत्य मूड छि तिमवन।
—(16)

—o—

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोऽयं,
मायोदधिर्विविध दुःख तरङ्ग मालः।
आश्चर्यमऽम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति,
त्वद् ध्यान सन्तति महावडवा मुखाग्नौ॥
(१७)

برہمانڈ بُبر کعلہ بُرِتھ یہ مایا سوٗدُر
دوکھ لہرو سِتی بُرِتھ آسہ وُن

آسٹر چھُی ماج ناشس چھُ واتان
چون دِیان اتھ کتھتہ چھُ واڈوا اَگُن (۱۷)

ब्रह्माण्ड बुबर खिल बंरिथ यि माया सोंदुर,
बोख् लहरव सत्य बंरिथ आसुबुन।
आश्वर छुही मोंज नाशस छु वातान,
चोन ध्यान अथ क्युत छु वाडवा अंगुन।
(१७)

—०—

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति,
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि,
संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ॥१८॥

دکھ شتری ژے مولادار واسنی
ہرتھ گویبایہ منٛز چھکھ ژٕ روزانی
کاتیائنی ژے لچھمی ژے سپیہ
چھکھ کلاوتی تہ ژٕ ئے بھگوتی
چھکھ کنٛ آسنہ ہی ماج بھوانی
لبنہٕ چھکھ یوان بہو روپ نژانی (۱۸)

दक्षि पुत्री ज़ुय मूलाधार वासिनी,
ह्यथ गोफायि मंज़ छुख च़ रोज़ांनी।
कान्त्यादेनी ज़ुय लक्ष्मी ज़ुय बैयि,
छुख कलावती ज़ुय तु ज़ुय भगवंती॥
छुख कुनी आंसिथ ही मांज भवांनी,
लबनु छुख यिवान बहु रूपु नच़ांनी॥
(18)

—०—

आनन्द लक्षणमनाहत नाम्नि देशे,
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं,
शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैश्च धन्याः॥
(२६)

آنَنٛد رۄُپی ہِیُتھ ژٕکُرس مَنٛز
ناد رۄُپہٕ بَنِتھ یَس چھُوٚے دِیان
اَبھیاسہٕ کِنۍ اَنٛتَر مۄکھ ہِیُتھ کٔتۍ
اَستہٕ سۄُس کَرِ دِیان سُے چھُ بَاگیہٕ وان (19)

आनन्दु रूपी हुय ज़ेकरस मन्ज़,
नादु रूपु बनि यस चोनुय ध्यान।

अभ्यासु किन्य अन्तर मोखु मनु छिन्य,
अशि सोंस करि ध्यान सुय छु बाग्यवान ।
१९ ।

—०—

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं,
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनी त्वमूष्मा,
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात् ॥
—(२०)

ژےٚ چھکھ ٹاج ہُوانۍ ژٚندرمس روشنی
ژےٚ سرِیس دِپتی آسان
ژےٚ چھکھ چیتنی پورشس آسہونۍ
ژےٚ پوٚنس منز بَل باسان
ژےٚ ساد ؠالِس اُگنس شکھتی
ژےٚ ؠوٚس زٚگت نِتہ سار چھُ روزان (۲۰)

च़ुय छुख मांज बवान्य च़न्द्रमस रोशनी.
च़ुय सिर्ययस दिप्ती आसान ।
च़ुय छुख चैतन्य पोरुषस आसवुन्य,
च़ुय पवनस मन्ज़ बल़ बासान ॥

द [illegible]ानिस
स ज़गत [illegible]नीः

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं,
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च धत्ते।
यद्वाति वायुरऽनलो यदुदर्चिराऽस्ते,
तत्सर्वमम्ब! तव केवलमाज्ञयैव ॥ २१॥

ہی ماتا سِرۍ یِہ ژَندرَمہ تارکھ
آکاشَس پٹھ یِم پرکاش دِوان
شیشناگ یُس کُل پرتھوی داران
میگھ یِم رُود زَگتَس تراوان
وایو پھیران اگن چھُ زوتان
تم سارۍ حیاتہ حکمہ ستۍ خلان - (۲۱)

ही माता सिर्यि चन्द्रमु तारख,
आकाशस प्यठ यिम प्रकाश दिवान।
शीशनाग युस कुल पृथ्वी दारान।
मेघ यिम रुद ज़गतस त्रावान ॥

वायू फेरान अंगुन कु ज़ोतान,
तिम सारी चानि हुकमु सूत्य चलान॥
(२२)

—०—

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं,
वाक् तर्कयो स्त्वमऽसि भूमिरनाम रूपा।
यद्वाविकासमुपयाति यदा तदानीं,
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरी भवन्ति॥२२॥

سنکوٗچ یتھ ساتھ چھے ژٕ شپان
تیلہٕ ژٕ ماج من تہٕ بوٗد نیر ویکار بنان
ییلہٕ ولکاس یوان چھکھ ژٕ ہی گرجے
تیلہٕ چانی نام روٗپ نیٚو گژھن نیران (۲۲)

संकूच यछा येलि छय चें सपदान,
तेलि चें मांज मन तु बोद न्यर व्यकार बनान।
येलि व्यकासस यिवान छुख चु ही गिरिजा,
तेलि चान्य नाम रूप नेन्य छि नेरान॥
(22)

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य,
भ्रूकिङ्करी कृत सरोज गृहाः सहस्राः।

चिन्तामणि प्रचय कल्पित-केलि शैले,
कल्पद्रुमो पवन एव चिरं रमन्ते ॥23॥

ہی دیوی سو کھہ باپت باگیہ وان
ییلہ ژے چھی تم پشرنام کران
تیلہ چانہ بمبہ ہرکٔژ تمن لچھمی سنہ
ساسہ بز ایشوری چھہ روزآنی
چنتامنی ژٔنگ سمٗوہ بناوی منتس
کھیلہ ہندس پہاڑس پیٹھ تم کھیلانی
کلپہ ورکھیہ ستۍ سنبو ٹری منتین باغن
منز تم ٹیٔر کال چھی پھیرانی (۲۳)

ही दीवी सोखु बापथ बाग्यवान,
यैलि चे छी तिम प्रणाम करान।
तैलि चानि बुम्बि हरकं च तिमन लंछमी तु
सासु बज़ ऐश्वर[illegible]ज़ांनी।
[illegible]तामणी रत्नुक समुह बनांव्यमुतिस,
खलि हुन्दिस पहाडस प्यठ तिम खेलांनी।
कल्प वृक्ष सोंस्त्यव वंयमुत्यन बागन,
मंज़ तिम यंच़काल छी फेरांनी॥ 23॥

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशो,
संसार तापमऽखिलं दयया पशुनाम्।
वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्तया,
धर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्टया ॥२४॥

ہی مآج زٕلوس سمسار دوکھ ساری
چھس ژٕ ے ناش کران دیایہ کنی
دوکھن ہُند ناش ژٕ یسے ماتحت چھٕ آسہ ؤن
دوکھ نیوٕرتی چھی ژٕ یسے آدین
یتھ پاٹھی سِری بہ چھے نیتہ ٕ گرمی
(۲۴) شومراوان پنٕنہ ورشنہ کنی

ही मांज ज़ीवस संसार दोख सारी;
छिहस च़ुय नाश करान दयायि किन्य।
दोखन हुन्द नाश च़ेंय मातहत छु आसुन,
दोख न्यवृत्ति छी च़ेंय आंदीन।
यिथु पांठ्य सिर्यचि छुय पनुनी गर्मी,
शोमरावान पनुनि वर्षनु किन्य ॥२४॥

—o—

शक्तिः शरीरमऽधिदैवतमन्तरात्मा,
ज्ञानं क्रिया करणमासनस जालमिच्छा।

ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं,
किं तन्नयद्भवसि देवि! शशाङ्कमौले: ॥२५॥

شریر ژےٚ آسوٚنۍ شکھتی ژےٚ آسوٚنۍ
ویراٹھ سوٗروٗپ ژھکھ آسہٕ وٕنۍ ژےٚ
زیو آتما ڈیان شکھتی، کِریا شکھتی
اندرِیہ شکھتی آسنہٕ شکھتی ژےٚ
یژھا شکھتی ایشوٗری پرِوار ژےٚ
گرٛیہہ دن ہنز جاے آسوٚنۍ ژےٚ
کیاہ ژھکھ ژہٕ آسوٚنۍ تیس سوٗروٗپ ہوٚشہٕ
یسٕ سوٗروٗپ ژھکھ پرلوٗکن ژےٚ (۲۵)

शरीर चुय आसवुन्य शक्ती चुय आसवुन्य,
व्यराठ् स्वरूप छुख आसवुन्य चुय।
ज़ीव आत्मा ग्यान, शक्ती, क्रिया शक्ती,
येन्द्रिय शक्ती आसनु शक्ती चुय॥
यछ़ा शक्ती ऐश्वरी परिवार चुय,
ग्रेह धन हुन्ज़ जाय आसवुन्य चुय॥

क्या नु छुख चु आसवुन्य युस स्वरूप शिवु सुद,
सुय स्वरूप छुख परिपूर्ण चुय ॥२५॥

—०—

भूमौ निवृत्ति रुदिता पयसि प्रतिष्ठा,
विद्यानले मरुति शान्तिरतीतशान्ति ।
व्योम्नीति याः किलकलाः कलयन्ति विश्वं,
तासां विदूरतरमऽम्ब ! पदं त्वदीयम् ॥ -(२६)

پرتھوی منز نیورتی کلا روپ چھے
زلس منز پرتشٹھا کلا روپ چھے
اگنس منز ودیا کلا چھ آسیوو
وایس منز شانتی کلا چھے
آکاشس یمہ کلا یہ زگتھ داران
تمو لشہ دور چھون سوروپ آسیون
(٢٦) تموکلو [illegible] دور چھون سوروپ
تمہ لشہ ماج دور روزان چھے۔

पृथ्वी मन्ज़ न्यवृती कला रूप चुय,
जलस मन्ज़ प्रतिष्ठा कला रूप चुय।
अग्नस में विद्या कला चु आसवुन्य,

पवनस मज़ं शांन्ती कला छुय।
आकाशस यिमु कलायि ज़गथ द्वारान,
तिमव निशि दूर चोन स्वरूप आसुवुन।
तिमव कलायव निशि दूर चोन स्वरूपछु
तमि निशि मांज दूर रोज़ान छुय॥ 26॥

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं,
नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये।
तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकारा-
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति॥
(२७)

یوٗت تام ژٕ پادٕ جوٗرۍ چانۍ رٹن ہردیس
یِم بحث کرٕ وُنۍ وٕلٕٹ وادی۔
ہی زَنگتہ رچھ وُنہ توٗت تانۍ تِم شکٕ بیٕ ہٕتھ
موٗڈٕ باوٕ تھیٚد ناش گَژھ سِیدی (۲۷)

यौत तामनु पाद जूर्य चांन्य रटन हृदयस,
यिम बहस करवुन्य वुल्टु बांदी।
ही ज़गथ रछिवुनि तौत तान्य तिम
शकु बंयथुय,

मूड् बाव्, तिहुन्द नाश कति सपदी॥ २९॥

—०—

यद्देवयान पितृयान विहारमेके,
कृत्वा मनः करण मण्डलसार्व भौमम।
याने निवेश्य तवकारण पञ्चकस्य,
पर्वाणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम्॥
(२८)

یم یوگی پورُش پرانہٕ اَبیاس لوگ
اَبیاس کرِتھ کرِتھ بیٚیلہٕ پتراوُن
اِیندرِیہٕ کھلہٕ تہٕ مَن آسکھ زِلُوم
تِم سَوارِی کرٲن چھی پانٛژن کارنن (۲۸)

यिम यूगी पोरुष प्राण अभ्यास, यूग,
अभ्यास कर्य कर्य वें लि प्रावन।
येन्द्रेय खिल्, त, मन आस्यख ज़्यूनम् त,
तिम सवांर्य करान छी पांचन कारणन॥
(२८)

—०—

स्थूलसु मूर्तिषु मही प्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब! यस्याः।

पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं,
सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम्॥
(२६)

پرتھوی توٗت بیٹھ مایا توٗتس تام
یم ستھوٗل موٗرتیہ ماج چھو آسان
کنہ موٗرتی مَنز ہی ماج بوٗانی
چانی شش وبھوٗتی چھنہ باسان
برہما دِکن تہ چھُنہ تیٚتھ ہیُو سامرتھ
گوٗن چانی گیوِتھ چھنہ تِم تہ کینہہ ہِکان
تِمے وِبوٗتی ہِشِی گوٗن کٔری ہے گاین
ماٗنی دِتمُ ہے چھیُس بہٕ آشاوان (۲۹)

पृथ्वी तोंत ब्यठ माया तोंतुस ताम,
यिम स्थूल मूर्तियि मांज छि आसान।
कुनि मूर्ती मन्ज़ ही मांज बवांनी,
चान्य हिश विबूती छै नु बासान॥
ब्रह्मादिकन ति छुनु त्युथ ह्युव सामरथ,
गोण चान्य गेंविथ छिनु तिम ति कैंह ह्यकान॥

तिमुय विबूती हुन्द्य गोण कोंर्य मे गायन,
मांकी दितम मे हुस वे आशावान ॥२९॥

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धा,
वाप्लावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम्।
श्यामां घनस्तनतटां सकली कृतौ च,
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति॥३०॥

کلپانتہ اگنہ پاٹھی گہہ سوس ہی ماج
شمسار ناشس پیٹھ ژ چمکان
سورےبیئہ قایم کرنس پیٹھ
ھکھ ژ تیٖلہ امرتک ورشن کران
بم شامہ رؤپ سوندرہ چون دیان چھ دارا
بم ماج ژ گنگو گورو چھہ سیدان۔
(۳۰)

कलपांत, अग्न, पांठ्य गहे सोस ही मांज,
समसार नाशस प्यठ च् चमकान।
सोरुय वैयि कायिम करनस प्यठ,
कुख च् तेलि अमृतुक वर्षुन करान ॥

यिम शामुरूपु सौन्दर चोन ध्यान छि दारान,
तिम माज ज़गतुक्य गौरू छि सपदान॥
((30))

→०←

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब! केचि,
दानन्मेव कतिचित्कतिचिच्चमायाम्।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम,
साक्षादऽपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव॥ ३१॥

کینژہ چھی تھمۍ وِدیا کینژہ چھ آنند ۔
کینژہ چھی مایا روٗپ ژےٚ مانان ۔
کینژہ ژ گژھ ماتا ساکھیات حدِ روٗس
(۳۱) دیا سوٗروٗپ گور روٗپہٕ اسۍ ژےٚ زانان

कैंह छी थंज़ विद्या कैंह छि आनन्द,
कैंह छी माया रूप च़े मानान।
कैंह ज़गथ माता साक्षात हद रौस,
दया स्वरूप गोर रूप अंस्य च़े ज़ानान॥
((31))

→०←

कुवलयदलनीलं बर्बर-स्निग्ध केशं,
पृथुतरकुच भाराक्रान्त कान्तावलग्नम्।

किमिह बहुभिरुक्तैस्त्वत्स्वरूपपरं नः,
सकल भुवन मातः सन्तत सन्निधात्तम्॥
(३२)

کوٗلےٚ ؤرگہٕ پاٹھۍ چَھکھ ماج ژٕ چمکوٕنۍ
دورمُت ژےٚ چھےٚ ماج سوٗندر کیش
سوٗندر کمر سوٗس شینہ لوٗن ترٲوِتھ
ہیٚ ماج آسہٕ وٕنۍ ژٕ زگژچ ایشن
زیادٕ وٕنۍ چھےٚ کیاہ نیرِ حاصل ماج
سنموکھ مےٚ روزتم نیتھ دِتم تیتھ سندیش
(۳۲)

कुवलय वर्ग पांठ्य छुख मांज च़ चमकुन्य,
दोरमुत च़े छुय मांज सोन्दर केश।
सोन्दर कमर सोंस सीनु बोन त्रांविथ,
ही मांज आसुवुन्य च़ ज़गतुच ईश।
ज्यादु वंन्यथुय क्याह नेरि हांसिल मांज,
सनमोख में रोज़तम न्यथ दितम त्युथ सन्देश॥
(32)



सकलजननीस्तवः।

(पांचवां स्तव)

अजानन्तो यान्ति क्षयमवश्यमन्योन्यकलहे,
रमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः।
जगन्मातर्जन्म ज्वरभय तमःकौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम्॥
(१)

نَہ زانِتھ وٕنی موٗرکھ پانہٕ وٕنۍ لٕڑِتھ لٕڑِتھ
اَوَش پانٹھی ناشہٕ باوَس چھہٕ واتان ،
یِم مَتہٕ وادی مایایہ ہیشدِ نے
گَنڈٕ نے سُتھ یِم ڈٕلہٕ ڈٕلہٕ گژھان
ہے زَگتھ ماتا اَسہِ ژٕ نمسکی جوٗر
بیہ کِہ تُسِہ کرٕ ژٕنْدرمہ ژٕ پانہٕ
آسی شَرَن چھی شمنوکھ ہی پاچ
گُلی گنڈِتھ اَسی ژٕ سے کرٕ پرنام چھی کران (۱)

न ज़ानुवुन्य मूर्ख पानु वान्य लडि्थ लडि्थ,
अवश्य पांछ्य नाशि बावस छि वातान।
यिम मतुवादी मायायि हुन्दिन्य,

गन्डुनुख फॅसिथ यिस डुलडुल गछान।
ही जगथ माता असि ज़न्मुक्य ज्वर,
क्याजि तमुकुय चॅन्दरम चु बासान।
आमुत्य शरण छी सन्मोख ही मांज,
गुल्य गॅन्डिथ ॲस्य छै कुन प्रणाम छी
—०— करान ॥ 1 ॥

वचस्तर्कागम्य स्वरस परमानन्द विभव-
प्रबोधाकाराय द्युति तुलित नीलोत्पलरुचे।
शिवस्याराध्याय स्तनभर विनिम्राय सततं,
नमो यस्मै कस्मैचन भवतु मुरधाय महसे॥
(२)

वॉनी कुस वुजारकी छ़ेकह ज़ आज तय बराविनी
छ़ेकह ज़ छ़ेनन मोरूफ नैर सआनन्द
नीलह ऑतिलह पोशह दिक्नी शोबान छे
शोबा बियान बनैय गुमान तय आनन्द
शोबस छ़ेकह आरादी ज़ुबूक दराविनी
गुपायानह गॅरदा ज़ुविसिय तय यार कुनी
नमस्कार आसनै तखतह कुनह ताथी तीर्स
सारिनी मंहस आन्दर आमाल ज़ छिय कुनी (२)

वांणी किन्य व्यच़ार क्रिन्य छुख च़ मांज़ न प्रावनी,
छुख च़ चेतन स्वरूप परम आनन्द।
नीलि उत्पल पोशि दिपत्नी सोंस च़ुय,
शूबायिमान बेंयि ज्ञान त आनन्द।
शिवस छुख आराद़िनी ज़गतस बड़ावान,
ज्ञान क्रिया रूप तनु बारि किन्य ॥
नमस्कार आसि नय तथ कथ तान्य तीज़स,
सानि नय मुहस अन्दर अनान च़ु येमि विन्य॥
(2)

लुठत् गुञ्जाहार स्तनभर नमन्मध्यलतिका,
मुदञ्चद्घर्माम्भः करा गुणितनीलोत्पलरुचम्,
शिवं पार्थत्राणप्रवरामृगयाकार गुणितं,
शिवामन्वग्यान्तीं शबरमऽहमन्वेमि शबरीम्॥
(3)

رَزٕ قلی ہار ژٕے نٲلۍ تَتہٕ بارٕ ثُمبتھ
زاوُل کمَر لُسِتھ ژٕے آبٕج تْرٛاوان
چھُٹہٕ سُمٕہ گگرٕ سِتۍ گمہٕ چھیری ژٕے تھُولوٕنۍ
نیلہٕ اُتپلہٕ پوشہٕ رنگہٕ چمکان -

ازرلس رجھہ نے تس شیوس پتہ پتہ
دورمت شکاری روپ لیس ترے آسون
تھہ شکاری بایہ رولس ہی ماج بوانی
گلی گنڈتھ ترییہ کن آمت چھسے شرن (۳)

रछ फंल्य हार चे नाल्य तनु बारि नेम्यधुय,
जांव्युल कमर युस चे मांज शूबान।
फंटिमुति गुमु सुत्य गुम फेंयि चे शूबवुन्य,
नीलि उत्पल पोशि रंगु चमकान।
अर्ज़नस रछिने तस शेवस पत पत,
दोरमुत शिकारि रूप युस चे आसवुन।
तथ शिकारि बायि ख्सस ही मांज भवांनी,
गुल्य गंन्डिथ चेय कुन आमुत कुसय
शरण॥ ३॥

—०—

मिथः केशा केशि प्रचन निधनास्तर्क घटना,
बहु श्रद्धा भक्ति प्रराय विषयाश्रापतविधयः।
प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिसुते! देहि शरणं,
निरालम्बं चेतः परि लुठति पारिप्लवमिदम्॥
(४)

ٹُہَس کَرٕوٕنۍ چھی مَس کڑان اَکھ اَکِس
لَڑِۍ لَڑِۍ تِمَن پَتہٕ چھُ ناش سَپدان
سیٹھا پورُش ٹَکھتی کِنۍ تہٕ پریمہٕ کِنۍ
شردایہٕ کِنۍ چانۍ پوزا کَران
ہی ماج پرکٹ بَن اَسہِ پیٹھ پرسن بَن
سَنتوشٹ بَن اَسہِ روز بچاوان
اَسہِ چھِ چَنچَل مَنہٕ سوٗس تھپہٕ روٗسٕتے
تھپھ کَر اَسہِ ماج نتہٕ چھِ ڈُلہٕ گژھان - (۴)

व्हस करवुन्य छी मस कड़ान अख ऑकिस,
लड्य लड्य तिमन पतु छु नाश सपदान,
स्यठा पोरुष चेकी किन्य त प्रेयमु किन्य,
श्रदाय किन्य चान्य पूजा करान।
ही मांज प्रकट बन असि प्यठ प्रसन्न बन,
सन्तोष्ट बन असि रोज़ बचावान।
असि छि चन्यचल मनु सोंस थपु रोंस्तुय,
थफ कार असि मांज नतु छि डुल गछान॥

—o—

(4)

शुनां वा वह्नेर्वा खगपरिषदो वा यदशनं,
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहि ममाह्लाय वपुषि,
प्रपद्येथाश्चेतः सकल जननीमेव शरणम्॥
(५)

ہی منہ یتھ شریرس پیٹھ نہ ایتبار
چھے خوراک یہ اَنگُک یا پنچھی کھیوان
کمہ وقتہ کتہ جایہ، کتھ پاٹھی کمہ طریقہ
پینیہ یتھ شریرک کانہہ نہ زانان
میانہ منہ گژھ شرن زگتچہ ماجہ کن
شریرچ ممتا کونہ ژٕ جلد ترٛاوان (۵)-

ही मन् यथ शरीरस प्यठ न एतिबार,
छुय खोराक यि अंगनुक या पंछी ख्यवान।
कमि वक्त कथ जायि, किथु पाठ्य कमि तीकु,
पेंयि यथर शरीर कर काँह नु ज़ानान॥
म्यानि मनु गछ़ु शरण ज़गतचि माजि कुन,
शरीरच ममता कोनु छ़ु जल्द त्रावान॥5॥

—०—

अनाद्यन्ता भेद प्रणयरसिकापि प्रणयिनी,

शिवस्यासीर्यस्त्वं परिणयविधौ देवि! गृहिणी,
सवित्री भूतानामऽपि यदुदभूः शैलतनया,
तदेतत्संसार प्रणयन महानाटक सुखम् ॥६॥

آدِ اَنتہ رۄس بێیہ بید رۄس پرٛیہ سۄروٗپ
آسِتھ تہ ژھکھ شیوسٕنٛز پرٛیمہ روٗپ
وِلوانہٕ ویدی کِنی ہی دِلوی ژھکھ
تَس مہادیوسٕنٛز گرٛہٕ ستِنی روٗپ
ہی ہِمالہٕ پُتٕری جیوٗن کران ژٕ پاد *
سَمسارٕ لیلا چھہِ چون جشنہٕ روٗپ (۶)

आदि अन्त रोंस बेंयि बेद रोंस प्रेंय स्वरूप ,
आंसिथ ति छख शेवु सन्ज़ प्रयम स्वरूप ।
व्यवाह वेदी किन्य ही दीवी छख ;
तस महादेव सन्ज़ गृहणी रूप ।
ही हिमाल पुत्री जीवन करान चु पादु,
सम्सार लीला छि चोन जशनु रूप ॥ 6 ॥

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति! सदन्ये विदुरस-
त्परे मातः! प्राहुस्तव सदसदन्ये सुकवयः।

परे नैतत्सर्वं समभिपद्यते देवि! सुधिय-
स्तुदेतत्त्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे॥
(७)

ہی دیوی کیٚنہہ چھی وَنان ژےٚ تتو روٗپ
کیٚنہہ چھی وَنان ستھ کیٚنہہ اَستھ روٗپ
کیٚنہہ چھی وَنان تھَدِ کھوتہٕ تھوٚد سوٚروٗپ مانٛج
کیٚنہہ دانا وَنان ستھ اَستھ روٗپ
کیٚنہہ چھی وَنان اَنِرواچیہ ژٕ آسہٕ وُن
کیٚنہہ وَنان یہ سوٗرے چھُ چون پھولنہٕ روٗپ (۷)

ही दीवी केंह छी वनान चे़ तत्त्व रूप,
केंह छी वनान सथ केंह असथ रूप।
केंह छी वनान थदि खोतु थोंद स्वरूप मांज,
केंह दाना वनान सथ असथ रूप।
केंह छी वनान अनिर्वाच्य च़ु आसवुन,
केंह वनान यि सोरुय छु चोन फोलनु रूप॥
(7)

—०—

तडित्कोटिज्योतिर्द्युति दलित षड्ग्रन्थिगहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टि वपुषा।

किसप्यष्टात्रिंशक्किरण सकली भूत मनाशिं,
भजेधाम श्याममकुचभरनतं ब्वैरकन्दन॥
((८))

کرور وُزمِلہ سمان چانٛی دِفتی
کٹھنین شُن گنڈُن ژٹھ چھکھ اژان
سوادار ژکرس بیٛیہ تور نیران
امرِتہ ورشن سوٗ رۄپہ کِنہ وسان
۳۸ کلا رُوپہ ژگتھ وِکسآوِتھ
تنہ بارِ نمِتھ کیش ژےٚ چمکان
تتھ شامہ رُوپس ہی ماج بوانی
گرگر روزہا بہٕ سیوا کران (۸)

करोर् वुज़मलि समान चान्य दिफती,
कठिन्यन शुन गन्डन चटिथ छुख अचान।
स्वादार् चकरस बैयि तोर् नेरान,
अमृथतु वर्षिरा स्वरूप् किन्य वसान।
३८ कला रूप ज़गथ वेकसाविथ,
तनु बारि नमिथुय केश चे चमकान।
तथ श्याम रूपस ही मांज बवानी,
गरि गरि रोज़ुहा बु सीवा करान॥ ८॥

चतुष्पत्रान्तः षड् दलभग पुटान्त स्त्रिवलय,
स्फुरद्वविद्युद्धि द्युमणि नियुतामद्युतियुते।
षडथ्र्यं च भिरवादौ दशदलमऽथ द्वादशदलं,
कलाथ्र्यं च द्वयथ्र्यं गतवति नमस्ते गिरिसुते॥
((६))

چَتُشٕ دَلہٕ کَمَلہٕ مَنٛز نیرِتھ شٔڑٕ دلس
ترِکونس منٛز ساڑٕ ترٛے وار سَرپاکار ❁
وُزَلہٕ چمک زَن ساسہٕ بَدۍ سِریہٕ زَن
شَکتی کُنڈلِنی تٔتی ژھٕ چَمکان ❁❁
شُہٕ دَلہٕ ژٕتھ دَشہٕ دَلہٕ بَیہ دوادشہٕ دَل
بیہ شوڈشہٕ دلہٕ سیٹھ چھی سَران
دوٕ دَلہٕ منٛز دِژا مٕشرٕ تٕس کُنڈلِنی
مٲجی گرِ چھِس تَتھ سوٚرُولٕس نمسکار کران ((۹))

चतुशदल कमल मंज़ नीरिथ षठ दलस,
त्रिकूनस मंज़ साड़ु त्रिवार सरपाकार।
वुज़मल चमक ज़न सासु बंद्य सिर्ययिज़न,
शक्ती कुन्डलिनी तंती छु चमकान ॥

षठदल् चंटिथ दशिदल् पत् द्वादशदल,
पत् षोडषिदल् प्यठ छि नेरान।
द्वदल् मन्ज़् द्रामुच् तस कुन्डलिनी,
ही गिरजी छुस तथ स्वरूपस नमस्कार
करान ॥१

कुलं केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः,
परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमऽपरे।
चतुर्णामप्येषामुपरि किमऽपि प्राहुरपरे,
महामाये। तत्त्वं तव कथमऽमी निश्चिनुमहे॥
((१०))

کینٛہہ گیانی وَنان ژٕرے ۳۶ تتو رۄپ
کینٛہہ گیانی وَنان ژٕرے پَرمہ شیو رۄپ
کینٛہہ وَنان چھی مآج شیو شکتی رۄپ
کینٛہہ وَنان امہ کھوتہٕ تھوٚد چھُ چون رۄپ
کینٛہہ وَنان تھدِ کھوتہٕ تھوٚد گُستانی سوٚرۄپ
ہے مہا مایا کِتھہٕ پأٹھی بَنہٕ اَسہِ لَشے
کُستنا اَکِ چھُ چون مآج سوٚرۄپ
((۱۰))

कैंह ज्ञांनी वनान छें 36 तत्वरूप,
कैंह ज्ञांनी वनान छें ब्रह्म शैव रूप।
कैंह वनान छी छें मांज शिव शक्ति रूप,
कैंह वनान अमि खोतु थोंद छु चोन स्वरूप।
कैंह वनान थदि खोतु कुस्तान्य रूप,
ही महामाया किथु पांठ्य बनि असि निश्चय।
कुस सना अलौकिक छु चोन मांज स्वरूप॥
((10))

षडध्वारण्यानीं प्रलयरविकोटि प्रतिरुचा,
रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम।
वितन्वानः शैवं किमपि वपुरिन्दीवररुचिः,
कुचभयामानम्रः शिव पुरुषकारो विजयते॥
((११))

شہ وَتہ سوٗس حٔبنگل پٔڑلے کالسٕ ہیٹھ
کَرور دِفتی سوٗس ژٔ پٔڑز لانٕ
پنٕہٕ تِھ نٔکھتن یم چانٕتھ ژَرَنَن
ہیچھ ختوان مُستَنک حقیکھ تمِ رچھان
شُپسٹنز کوتستانی سوٗروٗپ ژٔ دِفتی سوٗس

گشان کرِ پاتنہ یارِ ٹُھتھ ژےٚ شوبان ٭
سٛتھوٚ سٛتھر پوٚرشہٕ کار چھکھ آج ژٕ آسوٚنی
ٹھٹھ شاکھتہٕ روٗپس چھُس یہٕ پرنام کران (۱۱)

शिवति सोंस जंगल प्रलय कालस प्यठ,
करोर दिप्ती सोंस चु प्रज़लान ।
पनुन्यन बंबल्यन यिम चान्यन ज़रणन,
प्यठ थवान मस्तक छुख तिमन रछान ।
शिवु सुन्ज़ कोस्तान्य स्वरूप चे दीपती
ज्ञानु क्रिया तनुबरि नमिथ ज़ै शुबान। सोंय,
शिवु सुन्ज़ पोरुषकार छुख मांज चु आसवन्य,
तथ्य शक्ती रूपस छुस बे प्रणाम करान॥

—०—

(11)

प्रियङ्गु श्यामाङ्गीमरुण तरवासः किसलयां
समुन्मीलन्मुक्ताफल बहुलनेपथ्य कुसुमाम्।
स्तनद्वन्द्वस्फार स्तवकनमितां कल्पलतिकां,
सकृद्ध्यायन्तस्त्वां दधति शिव चिन्तामणि-
पदम् ॥१२॥

سوٚن شریر سونٛدر شانہ یاگھٹی پوشہ پیٚنگہ

سۄ پرٕخ وٕستہٕ تھٕکھ پٕزدارآنی
چھیوٗرمیتہٕ موٗختہٕ ہٕشہٕ پوشہٕ لباسہٕ سۄس
تنہٕ بارٕ نٕمٕتھ چھےٚ پٕرشوٗبانی
ہی دیوی چھکھ پٕرکلپہٕ تھٕر آسہٕ بٕنی
لیُس اکہٕ لٹہٕ چون دیان دارآنی
سے شیو روٗپی چنتامن رتن
چانہٕ دیایہٕ کٕنی چھُ پرٕاوآنی - (۱۲)

पिंगु पोशि पांठ्य श्याम्, सोन्दर शरीर् सोंस,
सोरुख वस्त्र छुख चु दारांनी ।
फोलमुति मोख्तु बंधि पोशि लिबास् सोंस,
तन बारि नंमिथुव चें श्रावांनी ।
ही दीवी छुख चु कल्पु थीर आसुवुन्य,
युस अकि लटि चोन ध्यान दारांनी ।
सुय शीवु रूपी चिन्तामन रतन,
चानि दयायि किन्य छु प्रावांनी ॥ 12 ॥

प्रकाशानन्दाभ्यासविदितचरीं मध्यपदवीं,

प्रवीशे तद्व द्वन्द्वं रवि शशि समाऽख्यं कवलयन्।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लय दहन भस्मीकृत कुलः,
प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमऽम्ब प्रविशति॥
(२३)

گیانہٕ کنہٕ کرٛیایہٕ کنۍ پھیرتھ سُشمنا
اَندر اَژتھ دوٚشوٚنی گراس کران
اُردھ نادس اَژتھ ژیتھ وِمرشہٕ اَگنہٕ کنۍ
سارِنے چکرَن بسم چھہٕ کران
تمہٕ پتہٕ چانہٕ اَنُگرہہ کنۍ سادک
اَوِناشہٕ شوٚپدس پیٹھ چھہٕ واتان
(۱۳)

ज्ञान् किन्य क्रियायि किन्य फीरिथ सुशमन,
अन्दर अंचिथ दोशावुनी ग्रास करान।
उर्द्नादस अंचिथ च्यथ व्यमर्शु अंग्नु किन्य,
सारिनुय चकरन बसुम छि करान।
तमि पतु चानि अनुग्रेह किन्य सादक,
अविनाशि शिवु पदस प्यठ छि वातान॥१३॥

षडाधारावर्तैरपरिमित मन्त्रोर्मिपटलै-

श्चलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद् दैवतझषैः।
क्रमस्त्रोतोभिस्त्वं वहसि वरनादाऽमृत नदीं,
भवानि! प्रत्यग्रा शिवचिद्ऽमृताब्धि प्रणयिनी॥
((२४))

۶ چکر آوٗلِنہ نِشہ مَنتر مُلکوَ نِشہ
مُدرایی کَفہ نِشہ ییٖلہ ژُ نیران
کَرم رۄُپہ گاڈَو نِشہ کرمکہ دٔری یاوِ نِشہ
پَر ناد اَمرِتھ رۄُپہ ییٖلہ چھکھ وسان
ہی ماج واتان چھکھ نُوِس دٔری یاوَس
شِو رۄُپہ ژیتہ سوٗدرس مَنز ژُ رۄزان
(۱۴)

6 चक्र आवुलुनि निशि मन्त्र मुलकव निशि,
मुद्राई कफि निशि यैलि चु नेरान।
कर्म रूपु गाडव निशि क्रमकि दर्ययावु निशि,
परनाद अमृतु रूपु यैलि छख वसान।
ही मांज वातान छख नंविस दर्ययावस,
शिव रूपु च्यतु सोंदरस मंज़ चु रोज़ान॥
(14)

महीपाथो वह्निश्वसनवियदात्मेन्दु रविभि,

र्वपुभिर्ग्रस्तांशैरऽपि तव कियानऽम्ब! महिमा।
अमून्यालोक्यन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतर-
मऽवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योम
वपुषि॥१५॥

پرِتھوی، جَل، اَگن، والُو تہٕ آکاش
سۄری یہ، ژٕندرمہ بیٚیہ زیوٗ آتما
اَمشوکِنۍ نہٕ آوتنٕ چھی ژٕلے یانے
کوتاہ چھُ ماج بوٗ آنۍ چون مہما
چانِس پرمہٕ آکاشکِس سۄروٗپس
منٛز چھینہٕ یِم تہٕ کُنہ وۄجوٗدس یوان (۱۵)

पृथ्वी, जल, अग्न, वायू तु आकाश,
सिर्यियि, चन्द्रमु, बेयि जीव आत्मा,
अमशव किन्य बनांव्यमुत्य छी चे पानय।
कोताह छु मांज बवांन्य चोन महिमा,
चानिस परम आकाशकिस स्वरूपस,
मंज़ छिनु यिम ति कुनि वोजूदस यिवान॥

(15)

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोक त्रयमिदं
भवाम्भोधौ मग्नं त्रिगुण लहरी कोटिलुठितम्।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम्॥
(२६)

منش، چاروآے تہ دیو ترٛیلوکی
سٔمسارٕ سۄدرس منٛز چھِ پھٹِتھ متی
کرور بٔز ستھ رج تمہ لہرن منٛز
ترٛگن ملکن منٛز ڈلہ چھِ گامتی
یوٗد وے یمن منٛز بنہٕ کانٛسہ چون کماکھ
ہی ماتا سہ زٕلو اد چھُ واتان
پرمانندکس سۄرٕولس چھُ جلد ے
(۱۵) - پرمہ پد دیایہٕ جانہٕ کنی چھُ تراوان

मनुष्य, चारवाय, तु देव त्रियलूकी,
सम्सार सोंदरस मंज़ छि फटिथ मुत्य।
करोर बज़ु सथ रज तमु लंहरन मन्ज़,
त्रिगोण मुल्कन मंज़ डुलु कि गामुत्य।

योंद वय यिमन मंज़ बनि कांसि चोन कटाक्ष,
ही माता सु ज़ीव अद् छु वातान ।
परमानन्दुकिस स्वरूपस छु जलदुय,
परम् पद दयायि चानि किन्य छु प्रावान॥
(16)

कलां प्रज्ञामऽथ्यां समयमनुभूति समरसां,
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम्।
प्रमाणां निर्वाणं परममतिभूतं परगुहां,
विधिं विद्यामाहुः सकलजननीमेव मुनयः॥
(२७)

ہی زگت ماتا منیشور چھ ژے وَنان
کِرِیا، بود، آدِ انُوبَو سمتا
گوُر پرم پرا وِنے وۄپدیش شِوکتھا
پرمان، نِرمان، پرتیکھش تہٕ اَنُومان
رہسیہ، گیان، مُری یادا بیٚیہ وِدّیا شکتی
زگت ماتا چانی سۄروُپ چھہ وَنان (۱۷)

ही ज़गत माता मुनीश्वर छि चेय वनान,
क्रय, बोद, आदि अनुबव समता।

गोरु परमपरा विनय वोपदीश शिवकथा,
प्रमान, न्यर्मीन प्रत्यक्ष तु अनुमान ।
रहस्य, ज्ञान, मर्यादा, वैयि विद्याशक्ति,
ज़गत माता च़ानी स्वरूप यिम वनान ॥ (17)

प्रलीने शब्दौघे तदऽनुविरते बिन्दु विभवे,
ततस्तत्त्वे चाष्ट ध्वनिभिरऽनुपाधिन्युपरते।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनुकलित चिन्मात्र गहनां,
स्वसंवित्तिं योगी रसयति शिवाख्यां परतनम्॥
(१८)

شبد سموٗہ رُگاوِتھ نیتہ بنِد ویپوٗ گالِتھ
یُتھ ژِ گیان ژنِتھ آکاشس منزلین کرِتھ
تتوٗ ون سِتھ آتمہ سوٗ روٗپٔن وو یادِ رسیٔس
نادِ روٗپہ پرہ اَمرتس منز رُگاوِتھ
شکتہ مارگک آشریہ چھہ یم رٹان
ژیتن ماترک رہشیہ تم وسمرش کران
سابادِک شوٗ سوٗروٗپس تم پرٲوان
کھُدِس شو سوٗروٗپس تم سٔشادکران (۱۸)

शब्द समूह रुकाविथ पतु ब्यन्द ब्यबू गालिथ,
येम्ब्रु ज्ञान च्यथ आकाशस मंज़ लीन करिथ।
तत्वस प्यठ आत्मु स्वरूपस थोपादि रस्यतिस,
नादु रूपु पर अमरयतस मंज़ रुकाविथ।
शक्ति मांगुक आश्रय छि यिम स्टान,
चेतन मानुक रहस्य तिम व्यकाशि करान।
स्वाबाविक शिव स्वरूपस तिम ज़ावान,
थंदिस शिव स्वरूपस तिम स्वाद करान॥

(18)

परानन्दाकारां निरऽवधि शिवैश्वर्य वपुषं-
निराकार ज्ञान प्रकृतिमऽनवच्छिन्न करुणाम।
सावित्री लोकानां निरतिशय धामास्पदपदां,
सवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम॥
(१६)

خدر رؤس پرمہ آنند رؤپہ جون ویان
شیو ایشوری رؤپہ لیس مانان *

نبر وبکار گیانہ سوس خدر رؤس پانہ
زلو ماد کرون لیس زِ مانان *

تَس بَرابرٕ چھُے موکھشہ یا سَمسار
یُس کُنہٕ رۄُپہٕ چانی سیوا کران - (۱۹)

हदुरौस परमानन्द रूप चोन ध्यान,
शीव ऐश्वरी रूप, यस मानान ।
न्यरविकार ज्ञानु सौस हदुरौस दवा रूप,
ज़ीव पांदु करवुन युस चु मानान ।
तस बराबरुय छुय मोक्ष या समसार,
युस कुनि रूपु चान्य सीवा करान ॥ १९ ॥

जगत्कायेकृत्वा तमऽपि हृदये तच्च पुरुषे,
पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्य गहने।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदऽपि परमानन्द विभवे,
महा व्योमाकारे! त्वदऽनु भवशीलो विजयते॥
(२०)

ژٕ جگتَ کایا بہٕ منٛز چھکھ ہٕردے ژٕ آسہٕ ؤنۍ
ہٕردیس منٛز چھکھ آتمہٕ دلوٗرۄپا
آتمس منٛز بِنٛدُو ژٕ ٹھیکتھ
بِنٛدس منٛز چھکھ پرٕ ناد رۄپا

نادس منز گیان رُوپ چون آسُون
گیانس منز پرمانند ویٹھو رُوپ
ہی زگت ماتا جے کار تمنے
یم کرن چون انُوبو مہا کاشہ رُوپ (۲۰)

ज़गत कायायि मन्ज़ कुख हृदय चु आसवुन्य,
हृदयस म॰ [illegible]ुख आत्म दे रूप।
आत्म पोरषस मंज़ बिन्दु चु ठीकिथ,
बिन्दस मन्ज़ ज्ञान रूप चोन आसवुन।
नादस मन्ज़ ज्ञान रूप चोन आसवुन,
ज्ञानस मन्ज़ परमानन्द वेंदू रूप।
ही ज़गत माता जयकार तिमनुय,
यिम करन चोन अनुबव महा काशि रूप॥
((२०))

विधे विद्ये वेद्ये विविध समये वेद जननि,
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वे॰ गुलिके।
शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवनिधे,
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम्॥
(२२)

ہی کرِیا شکھتی، گیان شکھتی قِسمہ قِسمہ
سِدانت آچار رُوپہ ہی وید ماتا
ہی وِچتر رُوپی چھکھ ژہ زگتُچ آدی
وہنیہ کِنی ژہ پرادانی ویدُچ سار
شیو اگنیایہ ہنز ژے سوبھاو رُوپی
شیو پد دِوان ژے ہی ماتا
سوکھُکے خزانہ چھکھ آسوُنی ژہ ہی ماج
بے حد بکھتی دِتہ مے ہی ماتا!۔ (۲۱)

ही क्रिया शक्ती, ज्ञानु शक्ती कुस्मु कस्मु,
सिद्धान्त आच़ार रूपु ही वीदु माता।
ही विचित्र रूपी छुख च़ जगतुच आद्य,
व्यनयि किन्य च़ु प्रावांनी वीदुच सार॥
शीवु आंगिन्यायि हुन्ज़ च़ुय सोभावु रूपी,
शीवु पद दिवान च़ुय ही माता।
सोखुकुय खज़ानु छुख असुनुय चु ही मांज,
बे हद बक्ती दित मैं ही माता॥
(21)

विधेर्मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले,
हरि शूल प्रोतं यदऽगमयदंसाऽऽभरणताम्।
अलंचक्रे कण्ठ यदपि गरलेनाम्ब। गिरिश:,
शिवस्थाया: शक्ते स्तदिदमऽखिलं ते -
विलसितम्॥२२॥

برہما سُنْد کلہٕ اَلگ کٔرِتھ تتھ کلس
پننے اَتھُک پاترٕ بناوِتھ
پننے پھیکہٕ کے بنوُون زیور
نارائن ترشولس پیٹھ وُرِتھ
شمبھنتہٕ کھوتہٕ شمبھنتے زہر گٔنٹھ تھوُن
ہوٗٹ لیُس پننے شیوٗنہ رووُن
شِوس پیٹھ شکتی آسہٕ شکتی سُنْد
یہ سورُے چُھنے وِلاس چھ آسوُن (۲۲)

ब्रह्मा सुन्द कलु अलग कॅरिथ तथ कलस,
पनुने अथुक पात्र बनॉविथ।
पनुने फॅकिलुय बनॉवुन ज़ेवर,
नारायण त्रिशूलस प्यठ वुरिथ।

सरन्तु खोतु सरुतुय जंह्रुकि-न्यातंन्य शिवन,
होंट युस पनुनुय श्रूबरोवुन ।
शिवस प्यठ ठेकिमुच्चि अमि शक्ती हुन्द,
यि सोरुय चोनुय व्यलास हु आसवुन ॥
((22))



विरिञ्च्याख्या मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वम-
अवसि,
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशाम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी,
त्वमेवैकाऽनेकामऽवसि कृतभेदैर्गिरिसुते॥२३॥

برہما ناو کِنۍ کران پاد ترٕلوکی
نارایِنہٕ ناو کِنۍ تھپھ ژٕ تھتہٕ رچھان
رودر ناو کِنۍ ژھکھ ژٕ کران سمہار
ایشر دشا چھکھ ژٕ داوان
سدا شیو ناو کِنۍ زنگس دوان ہوکھ
پاشن ہندی سموہ ژٕ گا۔
ہے ہمالہ پتری ژٕ کنی آسِتھ
نیون بیون کامیو کِنۍ آنکھ ژٕ بسان ۔ (۲۳)

ब्रह्मा नावुकिन्य करान छु पांदु त्रेयलूकी,
नारायणु नावुकिन्य कुरख छु तथ रछान।
रुदर नावुकिन्य छुय कुरख करान समहार,
ईश्वर दशा कुरख छुय दावान।
सदा शिव नावु किन्य ज़गतस दिवान सोख,
पाशान हुन्य समूह छुय गालान।
ही हिमालुपुत्री चुय कुनी ऑसिथ,
ब्योन ब्योन कामयव किन्य अंनीख छु
बासान॥
(२३)

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायैरपि मनाक्,
अशक्ये संस्प्रष्टुं चकित चोकितैरऽम्ब सततम्।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरे,
कथं ते विन्दन्ति पदकिसलये पार्वति! पदम्॥
(२४)

ہی ماتا ہیم منیشور چھی منہٕ گتھو
گلی ہیتو دو شو سوئی آسہٕ وٕنی
تم نہٕ کھوٗری کھوڑی آج جانٛن یاوٕن
سیرتٕش کر لمس سیٹھ چھی نہٕ ہیکہٕ وٕنی
وۄپہِ لشید سو باوٕ کنی کھٹی پاٹھی یکے
جانٛن زٕرنہٕ کمل تل جایے پراون۔((۲۴))

ही माता यिम मुनीश्वर छिय मनु क्यो,
गंत्यमुत्यव दूषव सौंत्य आसवुन्य।
तिम ति खूट्य खूट्य मांज चान्यन पादन,
सपर्शा करुनस प्यठ छिय नु ह्यकवुन्य।
वॉपनिशद सोबावु, किन्य कठिन्य पोठ्य
पंकिथुय तिम,
चान्यन चरनु कमलन तल जाय प्रावुन्य॥
((24))



तडिद्वल्लीं नित्यामऽमृत सरितं पार रहितां,
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमऽगुण ग्रन्थि-
गहनाम्।
गिरां दूरां विद्यामऽवनत कुचां विश्वजननी;
म पर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो-
भगवतीम्॥२५॥

وُزلہٕ رۄپ اپار امرِتہٕ نۄدی رۄپ
نِرملہٕ ژنٛدرمہٕ تہٕ گونا تھک رۄپ
دٲنۍ لۭشہٕ وۄدر ژےٚ تھٕز ویٚدیا سۄرۄپ
گیان کرِیا تہٕ نیمت رنگت ما ما رۄپ

چھی وَنان سَنٛھ زَن ہی دلوی چانٛی
یم رُوٗپ تہٕ بیئیہٕ اَننتہٕ لَچھمی رُوٗپ ((۲۵))

वुज़मलि रूप अपार असख्यत नंदी रूप,
न्यर्मल चंद्रमु त्रगोणात्मक रूप।
वांणी निशि दूर चुय थज़ि विद्यास्वरूप,
ज्ञान क्रिया तनव निमित ज़गत माता रूप।
छी वनान सथज़न ही दीवी चान्य,
यिम रूप तु बैयि अन्नत लछमी रूप॥
((25))

शरीरं क्षित्यम्भ: प्रकृते रचितं केवलमिदं,
सुखं दुखं चायंकलयति पुमांश्चेतन इति।
स्फुटं जानानेऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
शरीराहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते॥ ((२६))

پرتھوی، زَل، اَگن، والُو تہٕ آکاش
چھُے یمن پانٛژن ہُنٛد شریر بَنان
سوکھ دوکھ امیٚک زانان پورش چھیٚن
نۄمُود پانٛچھی زِلو امیٚک انُو کرات

ہی ہمالہ پُتری شریرُک اہنکار
چھیٖنہٕ زِیو چانہٕ اَنُگرٛہہ روٗزِتھ ترٛاوان۔((۲۶))

पृथ्वी, ज़ल, अंगुन, बायु त आकाश,
छुय यिमन पांचु बूतन शरीर बनान।
सोरुय दोखु अस्युक ज़ानान पोरुषचेतन,
नोमुत पांछ्य ज़ीव अस्युक अनुबव करान।
ही हिमालु पुत्री शरीरुक अहंकार,
छुनु ज़ीव चानि अनुग्रेह रोस त्रावान॥
((26))

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरः सद्म गृहिणी,
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं,
महाज्योत्स्ने मातर्भव करुणया सन्निधिकरी॥
((27))

مول ماج بأے بند کٔمبہ گرٕ ہنی
شریر پُتر منٛتر گرٕ بیٚیہ دٕنہٕ
یمہ وقتہٕ ترٛاوِ کھ تمہ وقتہٕ بے
اَنٛدکار تس جَل جَل زٔتہوٕنی بنٛ

مہا پرکاشہ روپہ بنتھ دیایہ کنی ماج
نزدیک ٹھہرتھ سمہو کھ مے بن - ((۲۷))

मोल मांज बांय बन्द नोकर तु ग्रेहणी,
शरीर पुत्र मेत्र गरु बैयि दुंन ।
यैमि वकु त्रावनम तमि वक्तु वय मुह:
अन्दुकारस जल्द जल्द चटु वुन्य बन।
महा प्रकाशि रूपु बनिथ दयायि किन्य मांज,
नज़दीक ठुहरिथ सन्मोख मैं बन ॥२७॥

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातस्त्वमुदभूः,
स दोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया।
अनाद्यन्ता शम्भोरऽपृथगऽपि शक्तिर्भगवती,
विवाहाऽज्जयासीत्यहहचरितं वेत्ति तवकः॥
(२८)

ہی زگت ماتا گوڈ پیٹھ آسکھ
دکھ پرزاینتھ زنے کو تاری
دوشہ کنی زعفرعقن نے زنے ترآوتھ
پتہ بنیکھ زے ہمالہ کنری

آدی اَنتہٕ رُستی لَس تَس شیوس لَشہ چھکھ
زانِہ تہٕ بیشوٗن ہی شکھتی ھگوتی
دلواہ روٗس دۄر دور رکھن ژیٖنِے شنکر
تہٕ چاٗنی چرتر کُس زانی - (۲۸)

ही जगत माता गोड़ चेंति आसुख,
दक्षि प्रज़ापतु संज़ कुय कोमांरी।
दूषि किन्य कुनथन सुय चेंय त्रांविथ,
पतु बनेयख चु हिमालय पुत्री॥
आद्य अन्तु रंसितिस तस शिवस निशबखनु,
ज़ांह ति ब्यौन ही शक्ती भगवंती:
व्यवाह रौस वर दोरथन चेंय शंकर,
तिम चांन्य चरित्र कुस ज़ानी ॥ 28॥

कणास्त्वद्दीप्तानां रवि शशि कृशानु प्रभृतयः
परम्ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमाऽनन्द कणिका।
शिवादि क्षित्यन्तं त्रिवलयतनोः सर्वमुदरं,
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवती॥
(२९)

ہی دیوی ستری یہ ژٔنڈرس ہیٚیہ أگن
چانہ دیٖپتی ہنٛز چھ أکھ تیمبرا
پرم برہم چھے چانہِ نیٚتہٕ آنندس منٛز
آسُن چھے أکھ لوکٕٹ ہِشہ لِشہ
شِونا تھ سُنٛد پٮ۪ٹھ پرتھوی تتوس تانی
سارِنی ژٕ کُنڈلِنی رۄپ روزان
آخرس چھُ چون آج بکھٲنس چھکھ ژٕ
ہرد یس منٛز پرکھٹہٕ أٹھی چمکان - ‖۲۹‖

ही दीवी स्त्रियि चन्द्रसु बैयि अंग्न,
चानि दीपती हुन्ज़ छि अख त्यम्बुरा।
परं ब्रह्म छुय चानि नेत्यआनन्द मंज़,
आसुन छुय अख लोकुट हिश लिश।
शिवनाथु सुन्द प्यठ पृथ्वी तत्वस तान्य,
सारिनुय च़ु कुण्डलिनी रूप रोज़ान।
आख़र छु चोन मांज बखान छुख च़ुय,
हृदयस मन्ज़ प्रखुट्य चमकान॥
-(29)॥

त्वया यो जानीते स्वयति भवत्यैव सततं,
त्वयैवेच्छत्यम्ब ! त्वमसि निखिला यस्य तनवः।
गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती,
तथाप्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति
किमिदम्॥ ३०॥

چانٔی کِنۍ زانان چانٔی کِنۍ یَژھان سُے
چانٔی کِنۍ سُہ شِو زگَت چھُے بَناوان
ژٕرے چھکھ تَسٕس سۄرُوپ چانٔی کِنۍ چھُے سُے
سآمی بٲوِس پیٹھ وٲتان
چانے یَژھایہ تٔیلہِ سُے چانٔس
پَرمہِ آکاشٕس مَنٛز لین سَپدان۔ ((۳۰))

चान्य किन्य ज़ानान चान्य किन्य यछ़ान सुय,
चान्य किन्य सु शेव ज़गत छुय बनावान।
त़्रय छुख तस स्वरूप चान्य किन्य छुय सुय,
सामी बावस प्यठ वातान।
चाने यछ़ायि तैलि सुय चांनस,
परमु आकाशस मंज़ लीन सपदान॥ (३०)

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं,
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकलमकुलं गुह्यमऽ-
गुह्यम्।
दवीयो नदीयः सदसदिति विश्वम् भगवतीं,
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभ जननीम्॥
((३२))

بْرۄنْہہ پَتہٕ اَنْدر نیبر لۄکہ بۄڈ موٗٹ سوٗکھم
شِو رۄٗپ شکتی رۄٗپ گُفتہ نۄہُو دِ رۄٗپ
دۄر نزدیک ستہ اَستہ رۄٗپ لیٖن زَگت
تتھ سٔر لیٖنی سمِجھی سَمہار ژ کرِوۄ
زَگتُھ آگنیا کار ژٕ زانہِ یوان ✢
((۳۱))

ब्रोंठ पत अन्दर् नेबर् लूक बोंड सोंट सूक्षिम,
शिव रूप शक्ती रूप गु[illegible] रूप।
दूर नज़दीक सथ असथ रूपस [illegible] गत,
तथ सेंधीस्थती समुहार चु करुवुन्य,
जगथ आग्न्याकार चु ज़ानुनु यिवान॥
((३१))

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीपिकशिखाः,
पयोधौ कुल्लोलप्रतिहितमहिम्नीव पृषतः।
उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तात्त्विककुलै-
र्भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशममनुकल्पं परवशाः॥
(३२)

سِرِی یِہ تٕنٛز کِرنہٕ زٕن، اَگنِچ تٕھمبر زَن ۂ
سَمَنٛدرَن مَلکَن ہنٛز پانٔے چِکہٕ زَن
تِتھےٚ پاٹھۍ شِو پیٹھ پرِتھوی تتوٕس تانٛی
پرٛتھ کلپانٛتس وٕتھی وٕتھی لے سپدان۔ (۳۲)

सिर्यियि सुन्ज़ किरणु ज़न, अंगनुचि त्यम्बरि ज़न,
समन्दरन मलुकन हुन्ज़ पानय छिकु ज़न।
तिथय पांठ्य शिवु प्यठु पृथ्वी तत्त्वस ताम्य,
प्रथ कल्पान्तस वंथ्य वंथ्य लय सपदान॥
(३२)

विष्णुर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिरणुरात्मादिनकरः,
स्वभावोजैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमनिलः।
शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां,
विकल्पैरेभि स्त्वामभिदधति सन्तो भगवतीम्॥
(३३)

ژٚنٛدرمہ، وِشنو، برٛہما بیٚیہ سِرِیہ
مایا، سۄبھاو، مَت، زیِو تہٕ آتما
آکاش، وایو، شِو، شَکتی یِم ناو
بید کِنۍ وِپَرِس یِم واتان
سَتھ زَن یِمو ناوَو کِنۍ بیٚون بیٚون
ہی ماج بوانی ژٕیٚے چھی سُمران —(۳۳)

च़न्द्रम, वैष्णो, ब्रह्मा, बैयि सिर्यियि,
माया, स्वबाव, मत, ज़ीव तु, आत्मा।
आकाश, वायु, शिव, शक्ती, यिम नाव,
बीद किन्य वीदस यिम वातान॥
सथ ज़न यिमव नावव किन्य ब्योन ब्योन,
ही मांज बवानी च़ेय छी सुमरान॥ ३३॥

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदयया दैशिकदृशा,
षड्ध्वध्वान्तौघच्छिदुर गणनातीत करुणाम्।
परानन्दाकारां सपदि शिवयन्तीमपि तनुं,
स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवतीम्॥
॥ ३४॥

قدرتی دیایہ کنی گورِ سندِ نظرِ کنی
یم شکتی مارگس منز پرویش کران
تمنے شتھے وتہ سوس سمسار انٔدکار
دیایہ کنی ہی ماج چھکھ چہ گالان
پرمانندکی سوکھ دوان چھ تمنے
تمے باگیوان ماج چھی اتھے پراوان ((۳۴))

ओदरंती दयायि किन्य गोर सुन्दि नज़रि किन्य
यिम शक्तिमार्गस मन्ज़ प्रवेश करान।
तिमनुय छौंवति सोंस सम्सार अन्दकार,
दयायि किन्य ही मांज छ़्ख च़ु गालान।
परमानन्दुकुय सोख दिवान छु तिमनुय,
तिमनुय बाग्यवान मांज ही छे प्रावान ॥३४॥

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं सम-यिनी
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिर्गुणगणः।
अविद्या त्वम् विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं,
पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे॥
॥३५॥

ژےۓ چھکھ شو تےۓ ژےۓ چھکھ شکتی ۔
ژےۓ سمےۓ تہ تتھ زانہ ونی چھکھ ژےۓ
ژےۓ آتما چھکھ وۄپدیش چھکھ ژےۓ
ژےۓ انیمادِکھ اشٹہ سدی ژےۓ
ژےۓ اوِدیا وِدیا زگتُک پدارتھ
ژےۓ نشہ کانہہ تتھ چھینہ اسی یشؤن زانان ۔(۳۵)

च़ुय छुख शिव तय च़ुय छुख शक्ती,
च़ुय समय त, तथ छुख ज़ानुहुन्य च़ुय।
च़ुय आत्मा छुख वोपदीश छुख च़ुय,
च़ुय अनीमादिख अष्टु सैदी च़ुय ॥
च़ुय अविद्या विद्या ज़गतुक पदारथ,
च़ैय निशि कांह तत्व छिनु अस्य ब्यौन ज़ानान
((35))

असंख्यैः प्राचीनैर्जननी जननैः कर्मविलया-
द्धते जन्मन्यन्ते गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम्।
आवाप्याज्ञां शैवीं क्रमनुरऽपि त्वां विदितवान्
नयेयं त्वत पूजास्तुति विरचनेनैव दिवसान्॥
((३६))

ہی ماتا اَسنکھیہ پرانٛن زٕنمن ہیٚندی
کرم گلنہ کیٚنی دوٚنی زٕنم پرآوِتھ
گوٚرُو شِو سوٗروٗپ لٮ۪تھ شکتی سوٗروٗپ پرآوِتھ
وارِ پاٹھی ماج چون سوٗروٗپ زانِتھ
چانی توٗ تاتہ پوٗزا کرُن بہٕ روزٕ ہے
تھٔی ستیٚی چھُنہ بہٕ دین دین کٹاوِتھ (۳۶)

ही माता असंख्य प्रान्दान ज़नमन हन्द्य,
कर्म गलनु किन्य वोन्य ज़न्म प्रांविथ।
गोरु शिव स्वरूप लंबिथ शक्ती स्वरूप प्रांविथ,
वार पांठ्य मांज चोन स्वरूप ज़ांनिथ॥
चांनी तोता तु पूज़ा करुन ब रोज़हय,
तेथ्य सूत्य छ्नु ब धन धान कटांविथ॥ (36)

यत् षट् पत्रं कमलं उदितं तस्य याकर्णिका-ख्या,
योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम्।
तस्मिन्नऽन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृत्तां,
श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि॥ (२७)

سواڈِشٹان ژکرس منز شٹھ دَل
پمپوش یُس چھُے سآج آسوُن
تتھ منز آسوُن یُس چھُ بیٖزک کوش
بیٖزکوشس پیٹھ اوٗمکارچ جاے
اوٗمکارچہ جایہ پیٹھ واس کرِونی
یوس کُنڈلنی چھکھ تتی ژ روزان
تسی شام سوندر موٗرتی دارِونہ
زگت ماتایہ ژیے نیتھ بہ سُمران (۳۷)

स्वादिष्टान च़ंकरस मंज़ षठ दल,
पम्पोश युस छुय सोज आसवुन।
तथ मन्ज़ आसवुन युस छु बीज़क कोश,
बीज़ कोशस प्यठ ओंकारुच जाय,
ओंकारुचि जायि प्यठ वास करवुन्य;
योस कुण्डलिनी छख तंत्य चु रोज़ान।
तंस्य शाम सौन्दर मूरती दारवुन्य,
ज़गत मातायि चेंय न्यथ बे सुमरान॥

 ((37))

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के,
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका ।
वहति कुचभराभ्यां या विनिम्रापि विश्वं
सकलजननि सा त्वं पाहिमामित्यवश्यम्॥
(३८)

پرتھوی، زل، اگن، والوٗ، آکاش
سِرِیہ ژندرمہ یَزمن یِمَن آٹھن
چھکھ کُنی شکتی گیان کرِیا رُوپ
تنہٕ بارِ ئمی چھے زگتٕ دارِتھ
سوے چھکھ سارِی زگژ ژٕ ماتا ؛
اَوش پاٹھۍ رچھ ژٕ کر سون پالن - ((۳۸))

पृथ्वी, ज़ल, अंग्न, वायू, आकाश,
सिर्ययि चंन्दरमु, यंज़मन यिमन ओठन।
छुख कुनी शक्ती ज्ञान क्रिया रूप,
तनु बारि नमि थुय ज़गत चु दारुन्य,
सोय छुख सारी ज़गतुच चु माता,
अवश पाठ्य रछ चु कर सोन पालन॥
((38))

समाप्त

ॐ

ध्यान

कालाभ्राभाम कटाक्षैररि कुलभयदां -
मौलिबद्धेन्दुरेखां,
शङ्ख चक्रम् कृपाणं त्रिशिखमऽपि -
करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा-
पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिद[illegible]रिवृता
सेवितां सिद्धिकामैः॥

کالہ اَڈبرِکی یاٹھی شامہ رٕنیہ سوٗنتھے کتا کھتہ کنٛز دشمن
ڈیکس سیٹھہ ژندرمہ دورمنت شنکھ ژکر تلوار ترشول اتھن منز داران (گٔژن بھٕنزداران)
ترٕ نیتھر دار پُرتھ بھس تھستھ ساری سپے ترٕ بوٗنس یتہ تیٖزِ لوٗزنا وان
دیان کرِتھ تس جے ناو سوس دُرگا یہ تمہِ دیو تمان سِدی
یترُ چھ وَن سیوانِس کران

میگھا رِشی بولے —— جب دیوی کے ہاتھوں مہشاسُر سینا سمیت مارا گیا تو اِندر
اور سب دیوتا پرسن ہو کر ساشٹانگ ڈنڈوت کر کے اس پرکار دیوی کی
ستوتی کرنے لگے ۔

काल, ओबरुक्य पांठ्य शाम, रूप सोंसतुय
कटाक्ष किन्य दुशमनन कुलन बथ दिवान,
ड्याकस प्यठ चन्द्रस दोरमुत शांख चंक्र
तलवार त्रिशूल अथन मंज़ थोसुदारान।
त्रे नेथुर दार, कुन्य सूरस खोशिथ सांग्लुय
त्रिबवनस पननि तीज़, पूरनावान।
ध्यान करिव तस जय नाव, सोंस दुर्गायि हुन्द
देव नमान सेंदी यछुन सेवा दरकरान।
मेधाऋषि बोले :— जब देवी के हाथों महिषासुर
सैना सहित मारा गया तो इन्द्र और सब
देवता प्रसन्न होकर साष्टांग दन्डवत करके
इस प्रकार भगवती देवी की स्तुती करने
लगे।

ऋषिरुवाच :—

ओं शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणति नम्रशिरो धरांसा।
वाग्भिः प्रहर्ष पुलकोद्गम चारुदेहाः॥
(१)

ہی دیوی یێلہ مآرِتھکھ ژٔے تِم دوشٹ
راکھس سینا یوس بلوان
وآنی کِنۍ پرسن کٔرکھ ژٕ ئیندرادن تہٕ
دیوَن کلہٕ نۄمرآوِتھ کۄرکھ ژےٚ پرنام
ہرشہٕ کِنۍ تِمن رُم رُم تھۄد ووتلیہ
سوندر شریر سۄسی آسی تِم پرزلان ۔(۱)

ही दीवी येलि मांयथक चैं तिम दोष्ट-
राक्षस सैना योस बलवान ।
वांनी किन्य प्रसन्न करख चु ऐन्द्राजन तु
दीवव कल नोमराविथ कोरख
चैय प्रणाम ।
हरशि किन्य तिमन रुम रुम थोंद वोस्लेयि
सोन्दर शरीर सोस्य आंस्य तिम
प्रज़लान॥

देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या,
निश्शेष देवगण शक्ति समूह मूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेव महर्षिपूज्यां,
भक्त्यानताःस्म विदधातु शुभानि सान:॥
(२)

ہی دیوی ژیٚے زگت چھُے ویاپت
سورُے چانہٕ شکتی ستی چھِے شوبان
سارِنے دیوَن ہنٛز شکتی ہُنٛد سموہ
چھُے تاج چھِے سروپ آسوُن
یُس کران چھ پوزا ساری دیوتاہ
بیٛیہ ووتم ریشی تمِس مانِکُن
گلی گنڈِتھ چھُس کران پرنام نمی ہے
سوے تاج کری تمن کلیان میثون (۲)

ही दीवी चेय ज़गत छुय व्यापवुत,
सोरुय चानि शक्ती सुत्य छु शबान।
सारिनुय दीवन हन्ज़ि शक्ती हुन्द समूहे,
छुय सांज चोनुय स्वरूप आसवुन।
यस करान छि पूज़ा सारी दीवता
बेयि वोतम रेश तमिस मानिकुन।
गुल्य गन्डिथ छुस करान प्रणाम नमिसुय,
सोय सांज करितनम कल्याण म्योन।
(२)

यस्याः प्रभावमऽतुलं भगवानऽनन्तो,

ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमऽलंबलं च ।
सा चण्डिकाऽखिल जगत् परिपालनाय,
नाशाय चाशुमभयस्यमतिंकरोतु ॥ ३ ॥

یمی سُند پرباو چھے حد روس آسہ وُن
بھگوان تہ شیشناگ چھنہ ونتہ ہیکان
برہما تہ شنکر چھنہ تمہ زری پاٹھی
طاقتہ سوُتی مہما چون زانان
سوے چنڈی دیوی رچھتم سے
یوسہ سارئ سے زگتس چھے پالان
دی تتمہ تژہ شوعہ یوُ سوے دیوی
سیمہ ستی آشوب بے ناش سپدان

येम्य सुन्द प्रबाव छुय हद रोस आसवुन,
भगवान तु शीशनाग छुन वनिथ ह्यकान।
ब्रह्मा तु शंकर छिन तिम ज़्यँ पाठ्य,
ताक्त सोस्य महिमा चोन ज़ानान।
सोय चंडी दीवी रेछ तनम सें,
यीस सारिसुय ज़गतस छे पालान।

दीतनम तिक़ शोब बोद सोय दीनी :
येंमि सूत्य अशोब बय नाश सपदान ॥
(३)



या श्री: स्वयं सुकृतिनां भवनेषु लक्ष्मी:
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि: ।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि विश्वम् ।
-(४)

بٲگیہ وان گرن منز یوس لکھمی روپہ
پٲپی گرن منز یُس اَلکھشمی
ستہ پوٗرشن منز دا کول پوٗرشن لزا
شود پوٗرشن بود روٗپہ روزانی
پالنا کرتہ ساری پیٚ زگتس ماج
ثیٚ چھیٚ گژھنہ کٕریہ بے نام گرانی -(५)

भाग्यवान गरन मन्ज़ योसु लछमी रूप
पापी गरन मन्ज़ योसु अलछमी,
सथ पोरशान श्रदा कोल, पोरशन लज़्ज़ा
शोद पोरशान बोद रूपु रोज़ानी,

पालुना करतु ... सांरिसुय ज़गतस मांज।
वैय कुसय गुल्य गंन्डिथ प्रणाम करांनी॥
(4)

किं वर्णयाम तव रूपमऽचिन्त्यमेतत्,
किंचाति वीर्यमऽसुर क्षयकारि भूरि-
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि,
सर्वेषु देव्यसुर देव गणादिकेषु॥ ५॥

کیاہ کَر وَرنَن چون سۄروٗپ ہی مآج
تُس روٗپ چون آسہ وُن نہٕ سورآنی
کیاہ کَر وَرنَن چون بَل تہٕ سامرتھ
تُس راکھسَن چھہ ناش کرآنی
کَنتہٕ اَنہٕ بوٗز منز آئی ثبٕلی حیرت
راکھس تہٕ دیو آشتر س گرتھآنی (۵)

क्याह कर वर्णन चोन स्वरूप ही मांज
युस रूप चोन आसुवुन न सोरांनी।
क्याह कर वर्णन चोन बल तु सामरथ,
युस राक्षसन छु नाश करांनी॥

कति अनु बौज़ मंज़ चांन्य बड्य चरित्र,
राक्षस तु दीव आश्रस गछांनी ॥5॥



हेतु समस्त जगतां त्रिगुणापि दोषैः
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरऽपि पारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतम्,
व्याकृता हि परमाप्रकृतिस्त्वमाद्या ॥६॥

ساری زَگتُچ ہیتو تھٕکھ ژٕ ہی ماج
ترٛگُناتمک زگت لُسٕس چھُ آسہ وُلت
نارٛائنس شِوَس چھُنہ زانتہٕ لوان
ماتا چون سوٗروٗپ لُسٕس آپار آسہ وُن
حیانٕہ انشہٕ لُسہٕ زگت چھُ دو پیٛلِمُت
چونے آسرٕ لُسٕ چھُ آسہ وُن
آدی پرٛکرتی ژٕ چھکھ ہی ماتا تیٛر وِقار
تھدِ کھونہٕ تھود چون سوٗروٗپ آسون (٥)

सारी ज़गतुच हीतो छख त्रु ही मांज,
त्रिगुणात्मक ज़गत लुस छु आसवुन ।

नारायनस शिवस छु ज़ानुन यिवान,
माता चोन स्वरूप चुस अपार आसुनुन।
चानि अंशि निशि चुस ज़गत छु वोपदोमुत,
चोनुय आसर तथ छु आसुवुन॥
आद्य प्रकृती च़ छख ही माता न्यरविकार
थदि खोतु थोंद चोन स्वरूप आसवुन॥
(6)॥

यस्या समस्त सुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवी
स्वाहासिवै पितृं गणासि तृप्तिहेतुर
उच्चार्यसे त्वं अतेव जनैः स्वधा च॥7॥

سیٹھی سَنٛدی ساری منتر پرٛنہ ستھ
یگنیا دِکن ترٛپتی چھ واتان
سوٛاہا شبدِ کِنۍ ہی دیوی ژٕ
دیوَن ترٛپتی ہیتھ کارن بنان
سوَدہہ شبدِ کنٛی ہی دیوی سایہ
پیترِ یو کُن ترٛپتی چھے ستپران

यैम्यसुन्द्य सारी सन्त्र परनु सूत्य,
यैज्ञादिकन तृप्ती छि वातान ।
स्वाहा शब्द किन्य ही दीवी त्रुय,
दीवन तृप्ती हुन्द कारण बनान ।
स्वधः शब्द किन्य ही दीवी सारिनुय,
प्यत्रु लूकन तृप्ती छय सपदान ॥७॥



या मुक्ति हेतुर अविचिन्त्य महाव्रतात्वं,
अभ्यस्यस्ये स्वनियतेन्द्रिय तत्व सारै,
मोक्षार्थिभिर्मुणि भिरस्त समस्त दोशै:
विद्यासि सा भगवती परमाहिदेवी ॥
((८))

ژےٚ چھکھ موکلتی ہشد کارن ماج
ژےٚ ترٚٹ تتو سار سوس نہ سوری
شندرنیہ زُٹھتھ آسن بیٚلہ ورتہٕ ستی
نیرِ پانٔ دوہ پاسنا چھیہ سپدآنی
مکھی بیٚرتھ ونٔ منیشور دوشہ رستی
چھکھ تمن تہٕ ودیا روپ کھگوتی - ((۸))

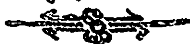
चुय छख मोख्ती हुन्द कारण मांज,
चुय वडि तत्वु सार सौंस नं स्वरनी।
यैन्द्रैयि रैटिथ आसन यैलि वृत सोरुय,
तैलि, ^वोपासना कैं सपदांनी ।
मूक्ष यछ़वुन्य मुनीश्वर यिम दूषि रंस्व,
छख तिमन चु विद्या रूपु भगवंती ॥४॥



शब्दात्मिका सु विमल ऋख यजुषाम निधान-
मुद्गीथ रम्य पद पाठवतां च साम्नाम् ।
देवेत्रियी भगवती भवभावनाय,
वार्ता च सर्व जगतां परमार्तिहन्त्री ॥६॥

شبد رۄپہ رِگھ، یجُر، سامہ ویدک خزانہ
ژٕے پد، ژٕے پاٹھ، ژٕے پزٕرٕ رۄپ
سمسارہ پالنا پانٛچھ ہی دلوی!
ژٕے آسہ وۄنی ؤۄچکھ تزٕلوٕے وید رۄپ
زکتک آرتزٕر گالنہٕ پانٛچھ،
ژٕے ؤۄچکھ آسہ وۄنی وارتا رۄپ

शब्द, रूप, ऋग्, यजु, साम, वीदुक खज़ानु,
चुय पद, चुय पाठ, चुय प्रनव रूप।
सम्सार पालुनायि बापथ ही दीवी,
चुय आसुवुन्य कुख ञनवय वीद रूप।
ज़गतुक आरचर गालुनु बापथ;
चुय कुख आसुवुन्य वारता रूप॥

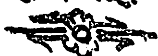


मेधासिदेवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौरसङ्गाः।
श्रीः कैटभारि हृदयैक कृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशि मौलिकृत प्रतिष्ठाः॥
((२०))

ہی دیوی یوٗ شاسترن ہنٛد سار زون
چھکھ تمی بوٗد روٗپ ژٕ آسانی
دُرگا روٗپہ کنٛی مُشکلس ترنی
سمسار ساگرس ژٕ ناو بنانی
لکشمی روٗپہ کنٛی نارایٔنس حصکھ
ہرِدیس منٛز ژٕ ے واس کرانی

گوزی روپہ کنی زنٛدرمہ یس کلس
تس شونا عکس لتہ ژہ روزآنی - ((۱۰))

ही दीवी यिमव शास्त्रन हुन्द सार ज़ोन,
छुख तिमन बोद्धि रूप च़ु आसानी ।
दुरगा रूप किन्य मुशकिलस तरनी,
सन्सार सागरस च़ु नाव बनानी ।
लछमी रूप किन्य नारायणस छुख,
हृदयस मन्ज़ च़्य वास करानी ।
गौरी रूप किन्य चन्द्रम् यस कलस,
तस् शिवनाथस निश च़ु रोज़ानी ॥१०॥



ईषत्सहासममलं परिपूर्ण चन्द्र,
बिम्बानुकारिकनकोत्तम कान्ति कान्तम्।
अतियद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि,
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥११॥

پرلوُرن زنٛدرمہ نیرمل زنٛدرمہب ہیو
چون موکھ سوینکہ پاٹھی وسن چمکہ ین

آسہ ؤن سوندر ووتم موکھ چون
شوبایہ سۆس آشتر کرُوون
شبس ڈُنی شہ موکھ وُچھتھ ہشاسورسے
یُس اوس راکھشس کرُود کرُوون۔ (11)

पवि [illegible] हुव,
[illegible] मोख सोनुक्य [illegible] ओस चमकुवोन,
अस्युन सोन्दर वोत्तम मोख चोन,
शूबायि सोस आश्चर करुवोन।
हस डेल्य सु मोख वुछिथ महिशासुरस्य,
युस ओस राछुस क्रूद करुवोन ॥ ११॥

दृष्टापि देवि कुपितं भ्रकुटीकरालमु-
द्यच्छशाङ्क सदृशं च्छवियन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीवचित्रं,
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक दर्शनेन ॥ १२॥

وُچھتھ چہ دیوی کرُود ستی برے
[illegible]

پران تراوی تمی وقتہ مہشا سورنے
کاہ آشتر ژھپنہ توتہ سپدان
کُس روز زنٛدہ ماج یتھ زگتس منٛز
ییلہ وُچھہ سہ مہاکال کرٛودی بنان (۱۲)

वुछिथुय च़ु दीवी क्रूद्द सूत्य बॊरिथुय,
वॊदयि सोस च़ंन्द्रम, ज़न च़ु प्रज़्लान।
प्राण त्रॊव्य तमी वक्त महिषासुरनुय,
कांह आश्चर छुनु तोति सपदान।
कुस रोज़ि ज़िन्द मांज यथ ज़गतस मंज़,
यॆलि वुछि सु महाकाल क्रूदी बनान ॥12

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥2

ہے دیوی وونی اسہ پیٹھ پرسن ون
چھکھ ژہ ماج آسہ ہ ز سونے کلیان

ییٚلہ ژھل شیران کرٕدی ہی مآج !
تیٚلہ چھکھ یکدم کُلن ناش کران۔
مہِشاسورن فوج ناشس واتنوٚوتھن
یُس فوج تس اوس سٹھا بلہٕ وان ۔ ۱۳

हीं दीवी योन्य असि पठ प्रसन्न बल,
छुख च़ु मांज आसवुन्य सोनुयकल्याण।
यैलि छुख सपदान क्रूधी ही मांज,
तैलि छुख यकदम कुलन नाश करान।
महिषासोरुन फोज नाशस वातनोवथन,
युस फोज तस ओस स्यठाबलवान॥
(13)



ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदाराः,
तेषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना:॥१४॥

شہرن منزٕ مآج تمی سے چھہ ناوان
دینہٕ سمپدا یہ سوٚس تم چھہ آسان

تمنے لُکھ بڑان دھرم نہ کم گژھان
تمنے دنہ واد ساری دِوان
وینیہ سوس تمنے تریٖہ، سنتان، نوکر
زگتس منز ماج تم باگیہ وان
تمنے ہمیشہ چھکھ وودیہ سوس روزان
یمن پیٹھ چھکھ ژٕ ماج پرسن سپدان (۱۴)

शहरन मंज़ मांज तमिस्यय छि मानान,
धनु सम्पदायि सोस तिम छि आसान।
तिमुनय यश बडान धर्म नु कम गछान,
तिमुनुय धन्यवाद सारी दिवान।
विनयि सोस तिमुनुय त्रय, सन्तान, नोकर,
ज़गतस मंज़ मोज तिम भाग्यवान।
तिमनुय हमेशि छख वोदयि सोस रोज़ान
यिमन प्यठ छख चु मांज प्रसन्न सपदान
धर्म्यीरा देवि... सदैव कर्मान। (14)
अ... या... ता: प्रतिदिनं सुकृती करोति।

स्वर्गं प्रयांति ... तोभवी ... दात,
लोक त्रयोपि फलदाननु देवि तेन ॥१४॥

ہی دیوی یم پرتھ دوہہ چھی کران
دھرمچہ کامہ بڈ آدر سان
سورگس کھسان تم جاینہ انوگرہہ ستی
زگتس منز چھی تم بھاگیہ وان
نشچے کرتھ آج ترن لوکن منز
پرے چھکھ بوانی ییس پھل دوان (۱۸)

ही दीवी यिम प्रथ दोह छी करान,
धर्मुचि कामि बडि आदर सान।
स्वर्गस खसान तिम यानि अनुग्रेह स्त्य,
ज़गतस मन्ज़ छी तिम भाग्यवान।
निश्चय करिथ मांज त्रन ववनन मंज़,
च़ुय छुख बवांनी यस फल दिवान॥ (15)

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमऽशेष जन्तो,
स्वस्थैः स्मृता मतिमऽतीवशुभांददासि।

दारिद्र्य दुःख भयहारिणिका त्वदन्यः
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता ॥ २६॥

ہی دلوی چانہٕ سمرنہٕ زلوس
سارٕی بے چھِس ناش سپدان
وار پاٹھی ییلہٕ سہ کرِ چونے سمرن
تیلہٕ چھکھ کلیانچ بود ژلتس دوان
دارِدرٕ باوٕ بئے بیٚیہٕ کٹھنی دوکھ تہٕ غم
کُس سنا تیٚیے رؤس ماج دور تمن کران
وۄہ پکار چھکھ کران ہی ماج سارنے
ہر ہمیشہ کومل ژرہِتہ سوس ژرُوزان (46)

ही दीवी चानि सुमरनि ज़ीवस,
सारी भय छिस नाश सपदान।
वार् पाठ्य येलि सु करि चोनुय सुमरन,
तेलि छुख कल्याणुच बोद च तस दिवान।
दारिद्र बाव भय बेयि कठिन्य दोख तु ग़म,
कुस सना छे रोस माज दूर तिमन करान।

वोपुकार छुख करान ही मांज सारिनुय,
हर हमेशि कोमल दयथ सौस छ़ु रोज़ान॥
(16)

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते,
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु,
मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवी॥ १७॥

ژیر تام نرکس منز روزنہ بایتھ
ییم زلوِستھا پاپھ مٲج چھی کران
تیٚہندی مارنہ ستی ہی مٲج لوٲنی
سورُے ترٕکوَن سوکھ چھہٕ پراوان
ییم چھکھ لڑایہ منز ماران ژٕہی مٲج
تِم چھکھ سورگس ژٕ واتناوان
ہی ماٲنتھ یوہے نشچے کرتھ چھکھ
ہی دیوی شترن ژٕ گالان - (17)

छ़ेर ताम नरकस मन्ज़ रोज़नु बापथ,
यिम ज़ीव स्यठा पाप मांज छी करान।

तिहुन्दी मारनु सूत्य ही मांज बवांनी,
सोरुय त्रिभवन सोख हु प्रावान ।
यिम छुख लडायि मंज़ मारान त्र ही मांज,
तिम छिहख स्वर्गस चु वातनावान ।
यी मांनिथ युहै निश्चय करिथ छुखु,
ही दीवी शत्रन चु गालान ॥



दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म,
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहीणोषि शस्त्रम् ।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र पूता,
इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेष्व साध्वी ॥ १८ ॥

چانہِ دِرشٹی سیتی کیاز ستیدِ نہ بسم
سارِنے راکھشن تہ بیئیہ دشمن
مگر چھکھ ژ ترا وان شستر ہی ماج
تیتھیم اَمہِ عِتی شود ستیدان لُکھ
شود تیتھ واتن یم تہ سورگہ لوکس
یوہے ہِتکار چھکھ تمن پیٹھ کران

-(۱۸)-

चानि दृष्टि सृत्य क्याज़ि सपदिनु वसुम,
सारिनुय राक्षसन तु ब्यांय दुश्मनन।
मगर क्रूर तु त्रावान शस्त्रही मांज,
युथ यिम ओंमि सृत्य शोद सपदन।
शोद, वेनिथ वातन यिम ति स्वर्गलूकस,
योहय ह्यतुकार क्रूर तिमन प्यठ करान॥
(18)

खड्ग प्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु खण्ड-
योग्यानन तव विलोकयतां तदेतत्॥
(१९)

کھڈگہ دِفتی سموٗہ، کُنھٕنہ چمکہِ سٔتۍ سموٗہ
ترٛشوٗل دِفتی سموٗہ لیٚس ژٕرِ چمکان
دیٚتان چھےٚ چوٗن موکھ تتھےٚ ہی مٲج
راکھشن تِتھ سٔتۍ نظر چھینہ دران
ژندرمہ سُنٛزی لوٗرِ دِفتی سوٚس
مٲج! تتھے چھےٚ چوٗن موکھ وُچھان-(19)

खडग दिफती समूह, कठिनि चमकि इन्द समूह।
त्रिशूल दिफती समूह, युस छै चमकान ॥
प्रज़लान छुय चोन मोख्ख त्युथुय ही मांज,
राक्षसन तथ प्यठ नज़र छन दरान ।
चन्द्रमु सुन्दी पूरनदिफती ह्यॅस ,
ही मांज त्युथुय छु चोन मोख्ख वुछान ॥

॥ ५८ ॥

दुर्वृत्त वृत शमनं तव देवि शीलं ,
रूपं तथैतदविचिन्त्यम तुल्यमन्यै: ।
वीर्यं च हन्त्हृतदेव पराक्रमाणां ,
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २०॥

خراب چلن ہی ماج چھکھ بناوان شانت
آسہ وُن یوسہ چھے چونے سوب وُ
رٗوپ چون آسہ وُن ہی ماج نہ سوپُن
چانہِ رٗوپک خد چھنہ کینہہ انسان
دیوتن ناش گوہمت یس سارکھ
چھکھ تمن پور ستارکھ بڈاوان

شتھرن پیٹھ چھکھ ہی ماج لوآنی
دیابہ سوس تمن دیا پرکٹ چھکھ کران۔
(۲۰)

खराब चलन ही मांज कुख बनावान शांत,
आसुरुन योहय छुय चोनुय स्वबाव।
रूप चोन आसुरुन ही मांज न रवरुन्य,
चानि रूपुक हद छिनु कैंह लबान॥
दीवन नाशगोमुत युस सामरथ,
कुल तिमन पोरषारथ बडावान।
शंथरन प्यठ कुख ही मांज ववांनी,
दयायि सोंस तिमन दया प्रकट छुख
करान॥२०॥



केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य,
रूपं च शत्रु भयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समर निष्ठुरता च दृष्टा,
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि॥ (२१)

اتھ کیہ برابری تہ چانہ ویرتایہ
چون روپ شتھرن پیٹھ دیونی

کُنہ حبایہ چون رُوپ منوہر آسہ وُن * *
دیایہ سوئس ہردے کُنہ حایہ چھکھ تھوانی *
لڑایہ مَنز رُوپ چون کٹھور مانج آسہ وُن
ترن لوکن چھکھ وَر دِوانی * * * * (۲۱)

कुस करि बराबॅरी मांज चानि वीरतायि,
चोन रूप ... रन नय दिवांनी।
कुनि जायि चोन रूप मनोहर आसवुन,
दयायि सोंस हृदय कनि जायि छुख थवांनी।
लड़ायि मन्ज़ रूप चोन कठोर मांज आसवुन
त्रन लूकन छुख वर दिवांनी॥ २१॥

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन,
त्रातं त्वया समरमूर्द्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तम,
ऽस्माकमुन्मद सुरारि भवं नमस्ते॥
॥ २२॥

سارنے دُشمن لڑایہ مَنز ناش کرتھ
بچاوتھ ترنے ہی مانج تر لوکی *

ماری تھکھ راکھس لڑایہ منزی ماج
کھاری تھکھ ژےٚ سورگس ہی بوانی
ناش کورتھ دشمنن اسہ بے دور کورتھ
اسی ژےٚ ماتا گلی گنڈتھ پرنام کرانی - (۲۲)

सारिनुय दुशमनन लडायि मन्ज़ नाश करिथ,
बचांवथन चै़ ही मांज त्रैलूकी ।
मांयिथक राक्षस लडायि मंज़ ही मांज,
खांयिथक चै़ स्वरगस ही बवांनी ।
नाश कुरुथ दुशमनन असि बय दूर कोरुथ॥
अंस्य चै़ माता गुल्य गंन्डिथ प्रनाम करांनी॥
((22))

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वने नः पहि, चापज्यानिःस्वनेन च॥
((23))

ژےٚ ترشولہ ستی رچھتہ اسہ ہی ماج
کھڈگہ ستی رچھتہ اسہ ہی ماتا
گنٹایہ شبدہ ستی رچھتہ اسہ ہی ماج
کمانہ شبدہ ستی رچھتہ ہی ماتا - (۲۳)

पनुने त्रिशूलु सूत्य रछतु असि ही मांज,
खड्गु सूत्य रछतु असि ही माता ॥
गन्टायि शब्दु सूत्य रछतु असि ही मांज।
कमानि शब्दु सूत्य रछतु असि माता॥
((२३))

प्राच्यां रक्ष प्रतिच्यां च, चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म शूलस्य, उतरस्यां तथेश्वरी ॥
((२४))

پوری کنی رچھتہ اسہ پچھمہ کنی رچھتہ اسہ
ہی چنڈی رچھ اسہ دکھنہ کنی
پھیرناو ترشول مین اسہ ژوپاری ہی ماج!
ہی ماتا رچھ اسہ وودرِ کنی (۲۴)

पुर्य किन्य रछतु असि पछमु किन्य -
रछतु असि।
ही चण्डी रछ असि दछुणु किन्य।
फिरनाव त्रिशूल पनुन असि चोपारि
ही मांज।
ही माता रछ असि वोतर किन्य ॥२४॥

सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्त घोराणि, तै रक्षास्मांतथा भुवम्॥
((२५))

سوندر روُپ چانٛی ماتا یِم ژےٚ آسہٕ وٕنۍ
ترٛیلوٗکی مَنٛز پھیرانۍ
گوٗر روٗپ، کٔٹھِن روٗپ یِم چانۍ آسہٕ وٕنۍ
تِموٚ سِتۍ اَسہٕ تہٕ پرٛتھوی رٔچھ ژٕہ پارۍ
(۲۵)

सौन्दर रूप चान्य माता यिम चे आसवन्य,
त्रैयलूकी मंज़ फेरानी।
गूर रूप, कठिन्य रूप यिम चान्य आसवन्य,
तिमव सूत्य असि तु पृथ्वी रछ्‌ चो पारी॥२५॥

खड्ग शूल गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके,
करपल्लव संगीनि, तैरस्मान रक्ष सर्वतः॥
((२६))

کھڈگ، ترٛشوٗل بیٚتاہ دیک یِم ژےٚ آسہٕ وٕنۍ
اَستر یِم ژٕ ماج چھکھ وارا آنۍ
پیٚتوٗشِ اَتھن مَنٛز ژٕ تھ چھکھ ژٕ ہی ماج
تِموٚ سِتۍ اَسہٕ ماج رٔچھ ژٕ پارۍ

खड्ग त्रिशूल येत्याह्यक यिम चै आसुवुन्य,
अस्तुर यिम चु मांज कुख दारानी ।
पम्पोशि अथन मन्ज़ रंटिथ कुखचु ही मांज,
तिमव सूत्य असि माता रक्ष चोपारी ॥
((26))



क्षमास्तुति

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदापि च न जानेस्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदापि च न जानेस्तुतिकथा।
न जाने मुद्रास्ते तदापि च न जाने विलपनं,
परं जाने माता तद्ऽनुसरीं कलेश हरनम् ॥१॥

منترٕ تہٕ ینترٕ چھُسنہٕ کینٛہہ زانان
زانان چھُس نہٕ ماج چون مہما
آواہن تہٕ دیان چھُس نہٕ کینٛہہ تہٕ زانان
زانان چھُس نہٕ ماتا جاپی توتا
مُدرایہ چانہٕ ماج چھُسنہٕ کینٛہہ زانان
زانان چھُسنہٕ ماتا چون ولیپت
بُڈہِش لیہ کھتی ماج چھُسنہٕ زانان

ژٕ ییٚہ یُتہٕ بٕکہ دوکھن ناش سپدان ((۱))

मन्त्र तु यन्त्र कुस नु केंह ज़ानान,
ज़ानान कुसनु माता चोन महिमा।
आवाहन तु ध्यान कुसनु केंह ति ज़ानान,
ज़ानान कुसनु माता चान्य तोता।
मुद्रायि चानि मांज कुसनु कैंह ति ज़ानान,
ज़ानान कुसनु माता चोन विलीपन,
बंड हिश योस्ती मांज कुसनु ज़ानान,
मैंय पतु पतु पंकिथ दोखन नाश सपदान
((१))

विधेरऽज्ञानेन द्रव्यन विरहीनालस्तया
विधी अशक्यत्वात्तव चणयो या च्युतभूत।
तदेतद् क्षिन्तव्यं जननि सकलोधारिणि शिवे,
कुपुत्रो जायेत कुचिदऽपि कुमाता न भवत।
((२))

چھُس وِدیی نہٕ زانہٕ وُن دَنہٕ رۄس نہٕ آلزی
ژٕ رنہٕ سیوا چانی چھیسہٕ کیٚنہہ کران
پزرِ آلزی سۄس چھیُس بہٕ کرنہٕ کھیا
ہی ماتا سارِنے چھکھ دوہ دار کران

کو پُترُ چھہ زٕگتس مَنز پادٕ سپدان
ماتا کو ماتا زانہہ تہٕ چھِنہٕ بَنان ۔ (۲)

छुस विदी न ज़ानवुन, दन रोस त, आलुच़्य,
च़रन, सीवा चान्य छुस न, कैंह करान।
यिथ़ि आलुच़्य सोस छुस बेकरतम क्षमा।
ही माता! साविनय छख बोदार करान॥
कोपुत्र छि ज़गतस मन्ज़ पाद सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छन बनान॥

(2)

पृथिव्यां पुत्रास्ते, जननि बहवैसन्ती सरलाः,
परम तेषां मध्य-विलैतरलोहं तव स्वतः।
मध्य योयं त्यागः समुचितं इदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायीते, कुचिदपि कुमाता न भवते ॥३॥

ماتا پرتھوی پیٹھ ستھا ژٕرے شتان
تِمَن منز ٹُیے پوت چھُسے نا بہٕ کار
چھکھ مےٚ تراوان ماتا چھےٚ نہٕ ژٕرے بیہ جاینہ
ہے پاروتی کو نہٕ چھکھ وچھاران
کو پُتر چھہ زٕگتس منز پادٕ سپدان

ماتا کو ماتا زانِتھ نہٕ چھُنہٕ بَنان-(۳)

माता पृथ्वी प्यठ स्यठा च़े संतान,
तिमन मन्ज़ बेय योत कुसय नाव्कार।
कुख में त्रावान माता कुय नु चे यि जायिज़,
ही पारवती कोनु कुख व्यचारान।
कोपुत्र छि जगतस मंज़ पादु सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति कुनु बनान॥ ३॥

जगतमातर्माताः तव चरण सेवा न रचिता,
न वादतं देवे द्रव्यनंपि भोयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं, मयि निरुपममयत्त प्रकरुशि,
कुपुत्रो जायीते क्वचिदपि कुमाता न भवते॥
(४)

ہی زٕگتٕ ماتا چانٕی ژٔرنہٕ سیوا
نٕہ کٔرم یتھ کُنہٕ نہٕ وُنی کیٛن کران
چانہٕ باپتھ خرچ کُنہٕ کوٚرم نہٕ ازٕ تام
وُنی کیٛن تہٕ وٕنہٕ ژٕرٚے یتھ چھیہٕ خرچان
توٚتہٕ تُھکھ ژٕ سو ماتا، لِس چھُ میٛون حاوٕرُس

موجنتھ تہ لوسیہ ھیم ستہ گر زھان
کو نیتھ چھ پکتس منز باو پیدان
ماتا کو ماتا زانتھ تہ چھینہ بنان - (۴)

ही ज़गत माता चांन्य करन सीवा,
न कंरुम पथकुन न नुन्दकथन करान।
चानि बापथ खर्च कुनि कोंरुम न अज़ताम,
कुन्यकथन ति दनु चें पथ छुसनु खंचान।
तोति कखनु सो माता, यस छु स्येठ हदरोंस
मोहबथ तु योंस, छम में गरि गरि रछान।
कोपुत्रर छि ज़गतस मंज़ पंद सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छनु बनान॥
((4))

परित्यक्ता देवान विविदविदु सेवाकुलतया,
मया पञ्चाशीतेऽधिकमपनीतेतु वयसि।
इदानीं चिदमात: तव यदि कृपानापि भवता
निरालंबो लंबोधर जननि कं यामि शरणम्॥
(५)

ساریے ذِیُن منز سترائے ترآو
شُبیت ھیُن کُٹ ستہجا دیا کُل

۸۵ وری گزرأئس بۆہ بیشری
سپُدمُت چھس بہ مانج ستھا نیربل
دونی یؤد وے مے بنہ پتہ چانی کرپایی ماج
تھپہ رؤس چھس بہ مانج کس گژھہ شرن (۵)

सारिनुय दीवन् हुन्ज़ सीवा मे त्रांव,
सपुदमुत छुस बे मांज स्यठा व्याकुल।
85 वरी गुज़रांव्य मे कुम्बरि हुन्द्य,
सपुदमुत छुस बे मांज स्यठा न्यरबल।
वोन्य योदवय मे बनि न चोन्य कृपा ही मोज,
थपि रोस छुसय बे मांज कस गछु शरण॥

(5)

चिता भस्मालेपो घरलुमशनं यकपट दुरी,
जटा धारी कण्ठे भुजगपति हार पशुपते।
कपाले भोतेषव- भजति जगतईषकपदवीं,
भवाने त्वत्त पाणे ग्रहण परिपाट्य फलम इदम्॥

(٤) حیاتس ملہ لیس زہر چھے خوراک
نشگے وتہ کلہ مالہ نالی تراوان -
واسک ہلہ لیس لیس جاچھ داران = موت لیس ساتھ چھ مانان

شے شو زگتکس ساٴمی باوس
ہی ماتا چیانہ اتھواسہ چھو واتان ‎-‏ ((6))

चिता बस्मा मलिथ यस ज़हर छुय खोराक,
नंगय तु कलु मालु, नाल्य ज्ञावान।
वासुक हटि यस युसजटा छु दारान,
मोत यस सामी पनुन छु मानान।
सुय शिव ज़गतुकिस सामी बावस,
ही माता चानि अथुवास छु वातान ॥6॥

न मोक्षस्याकान्क्षा न च विभवः वाञ्छापि च न
न विज्ञानानऽपीक्षा, शशिमुख सुखेचापि न पुनः।
अतस्ताम समयाचे, जननि जननं यातु मुम वै।
मृडानी रुद्राणी, शिव शिव भवानीति जपतः ॥७॥

چھینہ ماج موکھچ کانکھیا آسوں = بیٹیہ چھینہ وسیایہ = آج کانہیرتھا
گیانچ اپیکشیا چھینہ ماج ہیچھ آسوں = سوکھہ پیٹرھانہ چھینہ ماتا کانکھان
چھس یہ ماتا زیپے منگان زندگی گزارہا = شوشو لوانی زپ کرانی

कमनु मोज मुक्तिच कांहा आसवुन्य,
वैयि कमनु व्यबवुच ति मोज कांह यछा।
ज्ञानुच अपीक्षा कमनु मोज मे आसवुन्य,
सोख यछाति छुसनु माता कांछान।
छुस वँ माता चैय मँगान ज़िंदगी गुज़ारहा,
शिव शिव बवानी ज़प करानी ॥०॥(7)॥

नया श्री होटल गोल्डलैंड

अमीराकदल, श्रीनगर।

शालीमार आर्ट प्रेस, रेडक्रास रोड.
श्रीनगर।
टेलीफ़ोन नं० : 74972.